र्वित्रंक।



ষ**ধ্**ব'ন'শ্

য়'न। য়ॅन'न्यॅन'त्रान्त्रन्यन्यान्यान्त्रेयान। हे'ॐन्प्रायाळे न'या

ম্প্রমানশ্ভীন:ই্মানা

गहिरामार्थस्य राज्यस्य स्थितिया स्थितिया स्था	
শৃঙ্যুমা	1
धुःर्रवासेन्यदेःनेसामास्यान्यवित्रध्येसामुनामानायाः	
শৃষ্ট্ৰশ্	1
ग्वित्रः शुग्रारु । नित्रं विष्	1
स्यायारियायार्थःयाहिया	10
ব্ৰাবা'ম'ক্কুশ'মম'বাইবি'ম'শে'বাধ্যুমা	11
ही:र्स्यासेन्'रावे:लेखाराय्यायतेव्हान्येयायाः	
ন'ন'ন্ট্ৰ	11
য়ৢ৾৻য়য়৻য়ৣ৾৾৻৴য়৾৻৴য়য়৻য়৻য়৻য়৻য়৻য়য়	11
भ्रेष्यम्भ्रिन्भेश्वेश्यम्म्यविष्यभ्रेश्यम्	
भेष्युनभने	12
भ्रे विश्व की प्रमेश स्त्र क्ष स्त्र क्ष क्षेत्र क्षेत	16

न्गामःळग

भ्रे यस ग्री द्रेश द्रेश में वस्त्र उत्तर्म् व पर वशुन य वे।	21
भुः १९५ : अर्बेर : नवे : ५ नवा वा : य : वे	24
नवा.कवाराजी.वेराताताराप्त्राप्त्रीयाजीराजीराप्ते, नेराताजी.	•
र्देव.र्याया.स.स.याश्रम	26
ननाःकनाशःश्चेत्रःसःश्चेत्रःहेत्यशःर्देतःश्वरःनीः इस्रानेशःश्चेरःन	5.
श्रे श्रे न न्याया न त्याया है या	27
ग्वित्रस्याश्यार्द्धिर्प्यात्रे।	27
ख्यायारी, र्याया. स. य. या श्री या	28
न्ःक्ष्रम्यायाः मुर्यास्य स्टामिन् मिन् स्त्रीयाः मुन्यायाः स्त्री	29
अर्देरश्रायदे तुश्राय स्टायवित ग्रीश गुराय प्रायापाय दे।	30
वर्षायायातुषायार्ग्यात्र्यायायायाः विष्	34
श्चरः परः द्वेः रेवः से दः परः इसः वेशः पे दः व्यान हेनः पः द्वावाः	' 51'
অ'নাইশ্	39
ग्वरमी:श्र्यारानाहें द्र'पंत्री	39
स्यायारिन्यायार्थाकी	42

न्गार क्या

शेस्रश्च संग्री स्वायायायायायायायायायायायायायायायायायायाय	
बेद्र'यर'नश्रृद्र'य'दे।	47
ने सून नगाना नदे सह्ना नसून नही	58
ग्वित्र'न्नर'न्न्द्र'न्वित्र'श्चेत्र'श्चेत्र'होन्'ळंन्'स्र'न्ग्र्ग	,
राष्यान्त्री	60
ग्वित्र'न्नर'गे' श्रुन'ग्रेन्'र्रम'र्नम्'न्यम्'र्यं नि	60
ग्वित्र'न्नर'मी'श्चून'ग्रेन्'देश'त्रश'ने'शे'व्यन्'स्र प्रस्व पादी	60
ने त्वर् नित्रम् वित्रम् अर्थन् न्याया साथाय हिन्या	64
ग्वित् श्री ख्राम्य महिन मित्र	64
स्यायारी, र्याया, रा.ज.याश्या	69
ग्वित्रः सुग्राम् ४ प्रम्याना प्राप्त्रे स्थाने ।	69
रटासुग्रम्भायायर सेवासेट्रग्रट इत्यासुं प्रतिस्कृत्यायायाहिया	73
ग्व्राव्दे केट्रक्ष प्रम्प्राय्य विष्या राष्ट्री	73
ग्व्राम्व्राव्याय्यायाः	76
ने भूर नगागा राख हैं न य श्रूर न ख गाहिश	78

सर्दि शुसारी र्कं न समाविद निर्देशन मना त्या स्टिन मा श्री र पा श्री	78
धिन्भेशमान्व श्रीः र्हेन् श्रूनः वे।	81
रेग्रायायवर ग्रीयाप्टर्स्स्येग् से त्वर्ध्य प्रम्यं	89
शेशश्राद्यात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्र्यात्र्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र	
नश्रुव:म'वे	92
नेशन सुभून के खुन्या मिन्दि देश हे शासु प्रज्ञ र प्रमास मिन	
ग्वितः न्वरः न्दः वहिषाः हेतः श्चीः श्वः श्वृतः वर्षे वाः यः श्चेः सर्ख्यः	
धर'नष्ट्रव'ध'दे	100
शेशशर्श्यान्,याशुरश्यायिःह्यानीःश्रुशानीःर्नेतायर्गेयाःयरः	
शेवःसरः नश्रृवः सः त्या शुर्वा	L06
য়৽য়য়ৢ৽য়৽য়য়৽য়৾য়য়৽য়য়৽ৢ৽য়য়ৢৼয়৽য়য় [৽] য়ঢ়৽য়৽য়৽য়৽য়৽	۲۱.
অ'নাশ্বমা	L06
द्रश्र श्री श्रूरा श्री में या की पर्यो या पारा राज श्रुरा पे राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र	
নশ্বুন'ন'ব্যু	L06
र्नेन'हेन'अर्ने'ग्वन् ग्रीयाग्यान्यस्य नामि	109

न्गार क्या

र्याग्री सुरारोस्याप्तर्रे में हिन्नु नसुन मही	112
मुःर्रयः प्रः वरः वीः श्रेस्रशः विदेशः ध्रिंपः स्रेपः सस्	
নমূর্'ম'র্বা	119
यर'ग्रम्यानेवार्यायशास्त्रेस्रश्चार्यस्यः	
न्वेरिकारायक्रिया	124
धे:र्यासेट्रायदेःसेससाद्साट्रायस्त्रायः इटार्ट्रेन्ट्र	
নমূর্ম্ম শ্রান্ত্রিশ্	124
इर-र्नेव-र्-सुर-मीश-त्रमुव-म-त्य-माहेश।	124
न्देशभी देव वी	125
ने प्यतः निवे स्वे पावन प्यतः इतः में नः नः मुनः पाने।	127
रेग्राराय्यात्रम्भ्रायात्री	135
सर्दिः इट देश ग्री देव हैं गुरु पाये विषय राय सूर्व पाये।	137
गहिरागायमाञ्चे प्राप्तायापायाची	142
कुं से द्रायर हो न्याया पार्च ।	145
स्रवत्विते भ्रे नामग्राम्य मुनामि दिन्दि ।	154

न्गामःळग

समयनिदेश्री नामग्नामायाया हिन्या स्ट्राम्य मिहिना	155
न्ह्र्यःग्रे: न्ब्रें	155
नेविन्द्र्वान्ध्रुवान्त्रेवा	164
हेव'वर्ड्ड्र'गे'क्चे'न'हेट्'ग्रेश'सबर'वहेंव'ग्रे'वेंग'हेंग'	
वर्गे ग रहे य दे।	169
देवार्यायस्य नुसुन्य सुर्याय स्वर्थ स्वर्थ सुर्देश वा सुन्य स्वर्थ ।	175
बर'वर्देर'ग्रेश'र्वेज'सर'वर्जा'रूर'विव्यग्रेश'ग्रुव'रा'हेर्	,
न्यायाः नर्वो शःसरः नश्च्वः सः दे।	182
नन्नान्दरन्न्यायी नयाहेशस्दर्भविद्यीशस्त्र	
वर्गे ग'रादे'कुं य'य'गहेग	186
नद्गाःस्टःनविदःश्चेशःश्चनःसःद्ग्याःसःत्यः च्या	187
मुँग्राम्यम् स्यानहें न्याने।	187
ন্দ্ৰান্তৰ্'ন্ত্ৰী'শ্ৰেম্বাৰ্ম'ন\ৰ্ছিদ্'দা'ন্ত্ৰা	188
त्रे त्रमानात्य स्मानात्र त्रमाना स्माना स्म	192
स्यायार् दे द्याया पर दे।	194

न्ग्रम:ळ्य

ररः श्रेशः नम्बारायदेः स्टार्सः हिन्नन्वाः मुः वर्षेनः सन्वाया	.21.
ज.र्जा	199
न्देशःगुःदेवःयावेश	200
र्श्चित्रार्श्यः महिन्दार्भा	
स्यायारि, द्यायार्थं है।	
श्चितःश्चितःयो त्यवः त्यायाः यः वे।	
ने भूर वर्रेन पर से रेग्य परे सुन होन न सून पते।	
स्र में निष्ण हिं श्रुप्त या मोर्चे प्र हो प्र मालक प्र स्रव पर हो।	
स्र-र्से नन्ग मुन्य स्य स्थित्य स्थित्य स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्था	J *
य.र्जा	216
नन्ना हु भू न मस्य र उन् सुर में किं त त भू नर न सुर र न	प्रदे.
र्नेत्रप्रप्राचाशुमा	217
सुर-वी-न्वीरश्र-ध-न्याया-ग्र-यार्टिन्-ध्ये-द्वियाश्यन्श्र-ध्येन्-	۱۲.
नष्ट्रव'म'वे	217
श्चित्र श्चित्र श्वास्त्र श्वास्त श्वास्त्र श्वास्त्र श्वास्त्र श्वास्त्र श्वास्त्र श्वास्त्र श्	

न्गामःळग

भेवःमन्त्री	.221
ने'न्या'य'याव्य भ्री: केंन्'य'श्रून'य'वे।	.223
सर्ने मान्तरायानहेत्रत्र स्प्रास्ट्रिं कें मार्था क्राम्य स्थान	
নপ্দ:শন্ত্রী	.224
ধ্রদের্মির র্ক্রিল্মান্য ক্রমান্ত্রী দ্রান্ত্র ক্রমান্ত্রী দ্রান্ত্র ক্রমান্ত্র	
धेव'र्र'न्याया'र्राचे	.226
स्रम्भिः स्रिम्भार्द्धायन्या पुष्टिन्यम्यायार्वे न् होन्	
ग्वित् न्रष्ट्रव प्राची	.228
त्रुनःसर्यानद्यान्दे।विस्रसः दुयाःयः स्यान्यः सः वान्ते द्राद्यः	
নদ্বাশ্বান্যন্ম নান্ত্রী	.232
ग्वित् ग्री ख्रम् राष्ट्रोय से प्रमुद् प्राप्ते ।	.235
ने'मिहेश'ग्रे'ख्रम्'सदे'सुँग्राशकेत्र'न्ट्रमहेत्र'रा'सँग्राश	
নাপ্তাপ্ত ন্যানা, ম.জ. নাপ্ত পা	.238
हेव-८८-१ हेव-४-८८-१ ह्या स्टिश्च मार्थ-द्याया-४-दी	.238
নশ্বাশ্যাস্ক্রম্ম শ্রী দ্বি নেই ম্ব মান্ট নেম্বর নারী	.240

न्ग्रम:ळ्य

ने छेन नम्यावन न्या में निर्मा से स्था प्राप्त निर्माणिन	
ব্যাবা'ম'শে'বাই শা	244
मुँग्राश्र्यानाईन्याने।	244
स्यायार्गः दे।	
नन्गानहेत्रत्रभानन्ग्रभाराख्यानु नत्नापान्ये न्	
নতশ্যমান্ত্রা	249
नन्गः अवयः नन्तु नः सेनः ग्रानः नहेन न अः नहमा अः यः	
निरम्प्रप्राचरानमून्यानी	249
য়৴য়য়ঀঀ৻য়য়য়ৢয়য়ড়ৢয়য়য়য়য়য়য়	
নপ্দ্ৰান্ত্ৰী	252
न्ह्यःग्रीःट्रेयःयाद्येया	
र्क्षेयाश्चारान्त्रेराह्मरावर्षेत्राचायायायाची	252
न्द्येनशःरंशंभिरःहरःवर्देनःयःन्यायाःयःदे।	
रेग्रथं राष्ट्रे मान्द्राया हिंदि ।	
ने सूर नित्र यायाविव श्री श हैं न पर श्रें न नि	

न्गामःळग

शेर में न सूर्य में देव मावव प्यत मुन पर न सूर्व पर दे।	262
ने स्नर्भनविषा राष्या सम्रायही व मित्राहिषा राष्ट्रिया सम्	
लूब.यब्रेब.य.ज.जी	265
न्हेंबा के किया किया किया किया किया किया किया किया	265
ने यः क्रिंन् मञ्चन नि	267
निरहर्त्तरम्यायी शक्षुत्र इसस्य निर्मे नित्र क्षुत्र नित्र ।	269
नहेव'व्यान्नम्यायदे'नन्याप्याययायेव'यदे'र्धेव'ह्व'	
ग्वित् न्रष्ट्रव प्र है।	270
स्राम्यास्ट्रिस्याग्री प्रकेटार्मेयाग्री मिनिये मन्यार्ट्या म्	
न'र्ने	273
नद्याःमी नः स्टः निवेदः श्री अः श्रुनः सः द्यायाः सः दे।	275
नन्ग'न्र-भिरम्हेरे'न्ध्रन्य'न्रेश सें ग्वव्र'य'यर नङ्गे न	۳۲.
নমূব্-ম'ম'নাশ্যুমা	276
नुसःसूसःर्शेग्रार्शः नृहेर्रार्शे त्यान्त्रे नित्रे ।	276
मु: ५८: वर्ष्य अ: युदे: ५६ अ: सॅ: व्यः नर्से : नः दे	279

न्गार क्या

ने या पाल्य शे कें न्या श्रम्य पाले या	284
कुं प्रत्रशस्र प्रवेष भी शत्राचा प्राप्त में वा प्राप्त के वि	
मळुं रशः परिः हें प्राप्ती	285
रदःषः र्श्वेत्रं से सर्द्धद्रभः मंदे व्यत् नमूत्रं माया नि	288
रटानी सुँग्रायायासुन पर्तिन पर्टीन पट्टा सुनापाय वर्षा स्वर्	
অ'মাইশা	288
	288
रट.ची.ब्रियाश.श्रीय.ता.विश्व.जुव.क्षेत्व.क्षेत्व.ची	291
নাৰ্ব'ন্ট্ৰ)'ৰথ'ন'ম জুঁদ্ম'ন্দ্ৰ' কুঁ'মজ্ব'নামথ'ন্দ্	
নপ্দ'ৰ্ম'ৰী	295
रदःचित्रसेद्रमञ्जूनःतुरुषःचःचित्रःतुःचाव्रवःश्रीरुषःचर्ज्ञिनाः	<u>3</u>
শ্বুন'ম'বি	
यर्ने स्थान भरामित शुका यही का खुना सामे शाम सही रा	
कुषःदी	299
ने यश गुन परे क्रेंट हेट ग्री रन द्रो न निर्माण गहिशा	301

न्गामःळ्या

क्रॅन्यिन्चे'न्ये न्वे न्याये	301
म्रेज्ञ अदिदेव मुर्याय मन्त्र या या विश्वा	305
क्रूॅर हेर्न उड़्या हु हो न क्रु रायर यन्न राया यने।	305
वटः क्रेट्र संहिट्य केंग्र मार्था पवि प्रति प्रत्य वि ।	306
वरःक्रूरःमःहेर्न्यन्न्यःयःमहेश	306
न्हें या ग्री हें व की	306
वर्षः स्टर्निव्याम् अवेष्ठं व्यामङ्ग्रवः पाने	309
क्रॅट हेर स्वाः या शुयः न १८ र से ।	315
केव्रस्रिंद्रम्पित्रं विद्रायाः स्वामान्यः विद्रायः विद्र	318
য়	
नभून'म'ने।	322
য়	
নপ্দ'শ'ৰী	324
क्रॅश्नस्थराउट् र्ड्रेट राष्ट्रेट राष्ट्रेय राष्ट्रय वि यन् राष्ट्र	
অ'বাশ্বুঝা	329

क्रॅश्निस्र १ उर्दे हें दार १ हे दा हो।	329
रद्राची अळव के दे	330
सर्ने र न हुत दी	330
শুরারম্মরপ্রমার্ম	331
ग्विदे कें अंदी	331
নম.গ্রী.ছুখ.খ্রী	333
त्यकार्येषुःक्ष्राण्याः स्टामी अक्ष्यः क्षेट्रायन्त्रायः वे।	338
र्नेन'नशु'न'ने	343
श्चेन्र्यम्यान्द्रम्यास्यास्य स्वतः स्व	
न-१९ न न	344
क्रूॅर-१३८-नविर-द्ये.च.क्रू अपराय-नविर्यादी	346
र्यादे प्लिंद 'ह्रद 'न्यादे हैं 'द्रश्य ह्या'न सु 'न'दे।	350
शेस्रश्चित्रः गर्वः ग	
गशुस्रासासेटानुःसेटानार्सेग्रासासानि। नितृत्रासायानि।	354

শ'नतुब'म'वै	354
শ্বরুর্ম্য বন্ধুর্	
শ্বস্থ্যা	357
रायदीरःश्चेत्राययाञ्चनाः वेदायवेनाः राययाःश्चेदाः द्वायाचे।	357
हें त् सें र राष्ट्र मस्य राष्ट्र मन् मन् र प्रमान स्व	361
ব্নদ্ৰন্ত ইনিম্ন্সম্পূৰ্মান্ত্ৰ	363
য়য়য়য়য়ৣঢ়ৢঢ়ৢঢ়ৢৢঢ়ৢৢঢ়ৢয়য়য়য়য়য়ৣয়য়য়য়য়ৣয়য়য়য়য়য়ৣয়য়য়য়য়য়ৣয়য়য়য়য়য়য়য়	366
श्रामञ्जामन्	369
শ'ন ভূনি'র্দের'নশ্বর'শ	
ग्रुब'र'र'र'र उदे 'पॅव'न्द्रम्द'र'य'ग्रुबा	

न्ग्रम:ळ्य

शन्दर्भद्रेभ्यं व न्व नव्द नवि ।	.372
শ'गहिस'म'त्रभ'नत्त्र'म'नरःश्ची'र्धित'हत्न'नन्द्र'म'त्रे।	.374
<u> </u>	.376
বর্ষান্ত্রীর সানমূর বা	
य्येश.येषु.श.ज.की	.380
८८.सूर्यास्यास्यास्यास्यास्यास्यास्यास्या	
८६४.ग्रे.५व.बी	
र्हेन्'रा'श्रूम्'रा'यात्रेश	
र्श्चिम्रास्थान्वे दिन्दान्ति ।	
स्याशने 'न्याया'रा'त्य'यिहेशा	.385
ने 'मिं न'हेन'हें न रामा से 'यह न' परि हिं न' मा हा न ने हो	.385
सिव्याम् स्थानिक स्थान	
<u> इस्था भ</u> के कि अ	
नेवि'वन्नन्'म'न्देश'नश्रुव'म'वे।	.394

न्गामःळग

श्ची र्यः त्रितः प्रवाधिया त्यः यद्विश्वा 3	396
शुदि इस पावना प्य पाशुसा	396
क्रूब.ग्री.भ्री.	396
क्रीं सर्वे की स्नीं न पर्ता या श्रमा	101
शुन्दान श्रुवे सिर्ध्य योष्ठया रिस्टरयी श्रुवि राया	
गुनः ह्रेंन : रुपः ने।	101
ग्रम्भादिराम्बराम् क्रिस्पान्य स्त्रितास्त्र व्यान्ते।	105
निवेत्रायायायत्यायश्चरातासुवासुवास्यार्केषायायायायवित्रायांदे। ४	107
क्रूॅनशःग्रीः विवान्त्रः मुल्यान्यः निवा	109
र्श्रेनरा न दुः सर्दे र न सूद र प दे।	109
ने द्रम्म मा क्रम्य प्रमान विष्य प्रमान विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय	111
ग्रवशन्दरम्वर्थः श्रेव्याध्रेव्यः संस्वार्थः श्रेन्यः श्रे	
नन्द्राः	111
ষমমাহন্-বৃদ্ধু-বদ্ধ-অমামান্ত্রিব-মার্ম্ম্বামান্ত্রী-ষ্ট্র্বমান্ত্র	
त्रभूत्रःकी	115

न्गार क्या

धॅव म्व गुव नाई न से वुरा मिये छुवा वे।	421
र्षेत् 'तृत्र'गिते शंभे शंभे शंभि शंभे शंभि श्व 'र्षेत् 'त्र श्रृत 'र्भा ते ।	423
शुवाःभुगनष्ट्रदायांदी.	424
वेग'रा'गठिग'र्ह'नश्चुन'रा'दे।	425
सर्विःसरः तुरः कुनःसः दृरः नतुन्। सः सदेः दुसः नश्दः सः	
অ'বাইশা	430
सर्देव.सर.घेट.क्य.सपु.रेश.ग्री.रेयट.रे.घेश.सपु.	
नभृत्रःभिः	430
নৰ্বাশ্বন্থ, ইশ.মূ. ইনহ.ই.ইশ.মন্ত্রন্থ, ব্যক্তি	432
गशुस्रायानभूत्रावर्षेत्राहि सून्यात्रस्यमायि रहेताती	435
महीसारा महेत महें साम स्वास महि हो मान स्वास महि स	
निवं मानसूत् निर्मा निस्त्र स्था माने मिने निम्त में निष्	441
	441 442

य विद्रभण श्रुवश्यविद्यस्य विद्यस्य वि

शेर-श्रून-न्यर-प्रह्य-न्व्यन्य-व्याय-व्याप्य-व्याय-व्याप्य-व्याप्य-व्याप्य-व्याप्य-व्याप्य-व्याप्य-व्याय-व्याप्य-व्याप

รุ่าสารัพสิสาราสุมมามาณารุทัพสารุาสูาสูราสุมาริสามิรารุาสุณาชัก รุาสูาสารารา marjamson618@gmail.com



शेस्रश्चान्त्रीत्र्वान्य

यहिरामार्थेयराद्याप्ते स्वायारा ही स्वाया मित्राया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्व

ही:र्रेल'सेट्'सेसेसेस्नेस'स्ट'सिव्योग्यास्त्रम्याम् यावतः प्रत्यास्त्रेत्रस्त्रीस्त्रम्याद्यात्रस्त्रस्त्रम्यात्रम्य सेस्रस्त्रस्त्रम्याः पश्चरस'सदेरद्यान्ते स्त्रस्त्रस्त्रम्यात्रम्य सेस्रस्त्रस्त्रम्यात्रम्य प्रत्या

धुःर्रवासेन्यत्रेन्यः स्टान्नेन्यः स्टान्नेन्यः स्वान्यः स्वायः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्

मान्वर ख्रम् राज्य हिंदा राज्य । ख्रम् राज्य । प्रम्य । प्

ग्वित सुग्राम्य महिंद भारी।

"इयायर नियाय द्वाया प्रति । स्वाय । स्वय । स्वाय । स्वय । स्व

শূসাস্থ্রমাশা॥

इत्या वाब्रत्यस्य निर्मायद्वित्यस्य स्थित्। श्चेत्रवाश्चस्यस्य निर्मायस्य द्वित्यस्य स्थित्। स्थायस्य वाष्ट्रस्य स्थायस्य स्य स्थायस्य स्यायस्य स्थायस्य स्य स्थायस्य स्य स्य

लेशस्त्राण्ची सर्हेषा हुने हुन संस्वा स्थान स्थ

देश्यरंधेःद्वांधेः "वा ब्रुवायः येद्रायः येय्यः येय्यः येय्यः विष्ठः वि

इन्य गर्रान्यस्य स्टिन्य मार्थित्य

श्चित्रमाशुक्षः इसः नेशः उत्यातुः स्वाहिष्याश्चरा

"न्रान्ते। श्री म् श्रुम् अस्य प्रदेश स्त्रान्ते। त्रम् स्त्री स्वान्य स्त्री स

महिश्रःश्वेंद्राची दे विंद्रःहेद्राया ध्युद्रःदेद्रःचेंद्रःचेंद्र्या दे वेंद्र्या दे वेंद्र्या है विंद्र्या है विंद्र्या

इन्न हे क्ष्रम्त्रह्मान्य निष्य निष्य है।। के यथ कु स्वय यहम्य प्रह्मान निष्य है।। गुद्द हो अर्थे द्वार में प्रविय है।।

रटानी तुरापरा स्यानेश राज्या विमाप्त सूटा।

श्रू अया "है खूर हे नियस सुन्य अप श्रू है नियस सुन्य स्था सुर्य स्था सुन्य स्था सुन्य स्था सुन्य स्था सुन्य स्था सुन्य स्था सुन्य स

में विश्वान्य वि

द्रिंत्र त्र्योयायम् अस्य द्रिंत्र पर्ट्रेत् पाय्ट्रेत् प्रायम् स्थान्य स्थान

 र्श्वेन् श्री प्रदेश हेत श्री श्रामंत्र या प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्

नशुःनःसभःग्रहःने निवेतःनुःगशुरशःभिहा हेत्रःस्रोतः सर्देत्योयः ५॥ "गुत्रःगिविः हसभःग्रेः क्रेत्रःग्रीः भाव्याभःस्त्रुहः नःस्त्रुहः स्युक्तःग्रीःगवित्रः स्थः स्रोतः स्राह्मः स्रोत्याः स्राविः दहः। वाव्याभःस्त्रुहः नःस्त्रुहः स्युक्तःग्रीः गवित्रः ग्रिभःतः स्रोतः स्राह्मः ने स्वदः हो गविष्याभःस्रोतः स्रोतः स्रोतः स्युक्तः स्योतः स्योतः स्याव्याभः स्याव्याव्याभः स्याव्याव्याभः स्याव्याभः स्याव

नेश ग्रुवित्यो ने श्रुवित्य केश प्रिक्त श्रीत्य श्रीत

श्चानायाः वेत्रात्यां व्याक्षात्रात्रां विष्याः विष्य

यहे. द्रा प्राचन विचा माने क्षेत्र प्राचन प

ङ्गा नेवे श्वेराम्बन्धे प्रत्यं में में मिया। प्रेरं मित्रम्यायर प्रिंप्से सुर वश्चर बिटा। श्वेरं या बुर प्रसेप्पर प्रत्युर वश्चर या।

र्षेन्द्रा श्रीया मुन्य स्थाय सेव स्ट निव सेन्।

देवे श्वेरः "म्बद्धा प्रत्य स्तर्भ स

"वन् निर्देशका कियानि क्रुं भेद्र निर्देशका के स्वाप्त के स्वाप्त

न्तुःश्रेश्रश्नानःगीःश्रग्रशःगिरःनेःश्वःश्रेश्वःश्वःशःशः व्रवःश्वः। श्वनःप्रश्नःनेवःप्रः विवःप्रश्नःगिर्वः विवःप्रश्नःनेशः विवःप्रश्नःगिर्वः श्वनःप्रः विवःप्रश्नः विवःप्रश्चः विवःप्रश्नः विवःप्रः विवःप्यः विवःप्रः विवःप्यः विवःप्यः विवःप्यः विवःप्यः विवःप्यः विवःप्यः विवःप्यः विवःप्यः व

"ने भूर त्या है शर्श श्रू द्वा वित्र त्या वित्र त्या या त्या वित्र प्राप्त वित्र त्या व

दिनः र्श्विष्ण अस्तः सहनः यात्रे । ज्ञानः अन्तः न्त्रु अः सम्रदे । व्या । व्या

इन्य है देश म्बर्धिया हिन्स्य स्थित स्थित

ग्वन्द्रन्द्रिः न्त्रेः न्त्रे न्त्रः न्त्रे न्त्रः न्त्रे न्त्रः न्त्रः न्त्रे न्त्रः न्त्तः न्त्रः न्त्तः न्त्तः न्त्तः न्त्तः न्त्तः न्त्तः न्त्तः न्त्रः न्त्तः न्त्तः न्त्तः न्त्तः न्त्तः न्त्तः न्त्तः न्त्तः न्त्तः न्

"अर्देर्यं निव्यत्त्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्त

ख्याराने 'न्याया'य'या विश्वा

न्यायाः स्क्रास्य स्वर्धितः स्वर्धाः ने स्वर्धः स्वर्धाः स्वर्धः स्वर्धाः स्वर्धः स्वर्धाः स्वर्धः स्वरं स्वरं

10

न्यायान्यः क्रुश्रायम् याहेन् न्यायायाशुस्रा

धुःर्रत्यायोद्दान्ते भी स्वाप्तान्त्र स्वाप्तान्य स्वाप्तान्त्र स्वाप्तान्त्र स्वाप्तान्त्र स्वाप्तान्त्र स्वाप्त

धुःर्रेषासे द्रायः भेषा स्टार्मित्र मुक्ता स्वायः प्रति । द्यायाः स्वायः स्व

भ्रेष्य भी द्या । भ्रेष्य भी भ्रेष्य । भ्रेष्य । भ्रेष्य । भ्रेष्य । भ्रेष्य ।

ही व्यय ही द्रो द्रामा प्राया शुर्या

र्ट्स्या भ्रेष्यसाम्ची प्रदेशसाम्बाद्या साम्बाद्या साम्वाद्या साम्बाद्या साम्बाद्या साम्बाद्या साम्बाद्या साम्बाद्या साम

इन्य ही देवा से द्राया से स्वार हो से मार द्राये द्या

श्रेयश्चाराष्ट्रेत्योः स्वाया स्टामी सर्वित्यो श्वेयश्चित्र में स्वाया स्टामी सर्वित्य स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्

इना ही प्रसाद्दी निविद विद

द्येर्न्य विद्या स्थित है। स्थित स्

भ्रेर्यसहेन्द्रन्नविद्युः स्थानिस्य हिन्द्र्या हिन्द्र्य हिन्द्र्

ह्म ।रे.यश्वा

न्धे में हिन् प्रमेर म्राया स्रे न्ध्रम् प्रमः होत्। । प्यमः न्ध्रम् प्रमः हाः वामे हे होत्। प्यमः न्ध्रम् प्रमः हाः

इन्न ग्रन्छेन्य स्थान प्यम्भे स्थान स्थान

"न्यानि कें कें त्यानि स्वानि स्वानि

सम् नेश्वाहित्त्वस्य संस्वत् क्षेत्रं प्रमान्य स्वत् वित्ता स्वत् वित्ता स्वत् वित्ता स्वत् वित्ता स्वत् वित्त स्वास्त्र क्षेत्र । " विश्वान स्वत् वित्त स्वत् स

> इन्य यायाने सन् के से यस इत यस धिन्। धन्य यायाने सम्बन्ध

यायाने याहे नाया स्वरं के के स्वरं मी क्ष्य साम् क्ष्य साम्

इन्य है क्ष्र हिन् श्रेश म्याय वित्र स्था । ने त्व ही में याया यह वित्र स्था ।

त्रं त्रिः से त्यस क्री क्रें त्या त्रा के क्रिंत् त्रि स्था क्रिंत त्री स्था क्रिंत त्री स्था क्रिंत त्री स्था क्रिंत त्री त्री स्था क्रिंत क्रिंत त्री स्था क्रिंत त्री स्था क्रिंत त्री स्था क्रिंत त्री स्था क्रिंत त्री स्था

য়ूर्यत्रिः धुवाः श्रीं द्रां वित्राः वित्राः

ने स्वराव श्री रें या श्री श्री श्री राय विष्ठ प्राचित्र प्राचित्

"नायाने सूरार्थे के त्या से नासाम्यान्य मान्याने स्वाप्ताने स्वापताने स्वापत

"निहेन्स्नि। स्वाप्तानिहेन् क्षेत्रान्त्रम्यान्याः स्वाप्तानि ह्याः स्वेत्रान्याः स्वाप्तान्याः स्वापत्तान्याः स्वापत्यान्याः स्वापत्याः स्वापत्याः स्वापत्याः स्वापत्याः स्वापत्याः स्वापत्याः स्वाप

त्ते हे स्र म् ने ते ते ते स्य म् ने ते ते ते स्य म् ने ते ते स्य म् ने ते ते स्य म् ने ते ते स्य में स्य में स्य में स्य में स्य में ते ते स्य में स

इन्न हे सूर्वित्यी ही खुन्सी स्थान्।। स्रभी स्टेन्निवित्यीत्यात्र सी स्थान्।।

इन्य भ्रमान्द्रभगमी धुयन्द्रने सन्भेद्रभय । मुख्यमें वस्त्रभारत्यम् ने स्वन्यधित्।

हे क्ष्रम् अन्यते के मानु मान्य अर्थान्त मानु मान्य मानु स्थान स्

क्रुशः श्रेप्तः सेन्द्र्या स्थान स्

"वर्देर-श्रॅग्राश्चरविःश्चर्यात्रे श्चार्द्दान्त्र नविः इस्राधरः वेश्वराद्यस्थितः

न्दः क्रिंशः श्रीः विश्वास्तर्वात्तः विश्वास्तरः विश्वास्त्रः विश्वास्त

यन्तर्भे अअश्वास्य वाष्ट्रः विष्ट्रः व

यमः निश्वास्ति । यम् विश्वास्ति । यम् विश्वस्ति । यस्ति । यस

ठे हो से सम्मान्य स्वाप्त स्व

इस्थान्त्राचे स्वर्धन्त्राच्याचे स्वर्धन्त्राचे स्वर्धन्त्रचे स्वर्यन्त्रचे स्वर्धन्त्रचे स्वर्यन्त्रचे स्वर्धन्त्रचे स्वर्यन्त्रचे स्वर्यन्त्रचे स्वर्यन्ते स्वर्धन्त्रचे स्वर्यन्त्रचे स्वर्यन्यन्त्रचे स्वर्यन्त्रचे स्वर्यन्त्रचे स्वर्यन्त्रचे स्वर्यन्त्रचे स्वर्यन्त्रचे स्वर्यन्त्रचे स्वर्यन्त्रचे स्वर्यन्यम्यस्यन्त्रचे स्वर्यन्त्रचे स्वर्यन्त्रचे स्वर्यन्त्यन्त्रचे स्वर्यन्त्यम्यस्

र्दे.व.रट.खेयाश्चाज्ञशङ्घे.जश्ची.याच्चयाश्चायाश्चायरःश्चट.यः इस्रशःक्षेत्रःग्रीःश्चे,सक्षेट्रःयाच्चयाश्चाशःवर्द्द्र्द्रःश्चा

ন্ধ্রমার্ মান্মার্মান্

"न्यान्त्री हो न्या व प्राया न्या म्या व प्राया न्या क्षेत्र क्षेत्र

इन्न क्षे त्यस्ति स्वर्मिन निव्यत्ति स्वर्मिन स्वर्मा निर्मे स्वर्मा निर्मे स्वर्मा निर्मे स्वर्मा निर्मे स्वर्मा निर्मे स्वर्मा स्वर्या स्वर्मा स्वर्मा स्वर्मा स्वर

है 'ख्रेस' क्षे प्रथा की 'ख्रेस' है न्द्री । किंस प्रदेश स्था की स्था

> इन्ना वर्ने नहें भूर अन् नबिन हें श्रेन नु। अअन्ने श्रेन ने व्याम्युक्ष से व्येन्।

इन्य अन्यम् शुरुष्य म्ह्रम् । यहि सुमा महिन् अन्य अन्ते ने निविद्यो "गिर्हिन्सन्सरम्भूत्रात्म क्षे स्वस्ति म्या स्वस्ति स

বাইশ্বা

शुः भून अर्बेट निये निये निया परि

र्नेत्राम्ययास्त्रेरायात्रेर्याम्यराम्ह्रत्रायाधेत्।।

श्रेमानी न्वर्सं "रवर्ने वान्यान् वहश्यायाय हुँ न्वर्ने श्रेम्वर्ने या क्षेत्रा विश्वर्य स्थाने स्थान

इन्न गयाने भेशान्त अन्य स्त्री र्वित्त । भूति खुयान्त अगिते हेशायने यानि । स्वास्त्र अन्य स्त्री स्वास्त्र स्वास्त्र । स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र । ने क्षाया विकाने क्षेत्र ने खेता क्षेत्र स्वास्त्र ।

"नायाने र्यायाने स्वायाने स्वयाने स्वायाने स्वय

श्री भाष्ट्रा प्रविद्या स्वित्त प्रविद्या स्वित्त स्वित्त स्वित्त स्वित्त स्वित्त स्वित्त स्वित्त स्वित्त स्वित स्वित्त स्वत्त स्वत्त स्वित्त स्वित्त स्वित्त स्वित्त स्वत्त स्वतित्त स्वत्त स्वतित्त स्वतित्त स्वतित्त स्वतित्त स्वतित्त स्वतित्त स्व

इन ने स्थाय के ने हिर्मे प्रिंग सेवा।

र्वास्वासेन्यायाः भूतिन्तुः श्रूनाविः र्स्तुः श्रुः वाने व्यायाः वितः स्त्रिः श्रुः वाने व्यायाः वितः स्त्रिः स्तिः स्त्रिः स्तिः स

বাইশ্যা

नवाःकवार्याः श्रीः तुर्याः व्ययः दितः श्री राष्ट्रे स्त्री स्त्

नगःळगशञ्चेतः अञ्चेतः हेनः यशनेतः सूरः नीः इस्रानेशः सुः नः नरः सेः

श्चे न्यायान्य। श्चर्याची श्चर्याची श्चर्याची श्वे न्यायान्य। श्वे श्वर्याची श्वे श्वर्याची श्वे श्वर्याची श्वर्याच

नगः कमार्थः श्चेतः अन्ति। स्यानेशः श्चेतः अन्ति। स्यानेशः श्चेतः श्चेतः वित्रः श्चेतः वित्रः श्चेतः वित्रः श्चेतः वित्रः श्चेतः श्चेतः वित्रः वित्रः श्चेतः वित्रः श्चेतः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः श्चेतः वित्रः वित्रः श्चेतः वित्रः वित्रः

मान्त्र स्याय महिंद्र स्पर्दा स्याय स्ट्री इर्द्र

गावदःस्याराः नाई दः यः दे।

"नायाने अप्तान विद्यान स्वान स्वान

इत्या गराष्ट्रेर्यस्तिर्यात्यात्यः त्र्यात्रात्यः त्र्यात्रात्यः स्त्रेर्यात्रात्यः स्त्रेर्यात्र्यः स्त्रेर्यात्रः स्त्रेर्यात्र्यः स्त्रेर्यात्रः स्त्रेष्यात्रः स्त्रेर्यात्रः स्त्रेष्यात्रः स्त्रेष्यात्रः

ग्रामी श्री स्प्राप्त से ता से दारा स्थाय से में दि से स्प्राप्त से दा से दारा से ता से दा से द

ख्यायाने 'न्याया'या या ख्या

५८:४। ५७:४५:वाया:वुरुष:यः स्टायिव स्त्रीरुष: युर्वाया:यः दे।

"ग्रायाने तुर्याया वेर्याया स्टानित की या ग्रायाने स्वीत । वित्र की या प्रायाने की वित्र की या प्रायाने की वित्र की या प्रायाने की वित्र की या प्रायान । की वित्र की या प्रायान । वित्र की या प्रायान

इन वुराने सेन मरायने दे त्युन संधिता

इन क्रेश्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र

तुर्यायायदी हिंगायात्र इस्याने यादा ख्रूराचितात्र विगाताया। इस्राने याद्र यादा स्वादेश स्वेत्रायात्र विगातायाः विगातायाः विगातायाः विगातायाः विगातायाः विगातायाः विगातायाः

देश्यः देश्वेषाद्वयः विश्वः द्वाः विश्वः विशः विश्वः विश्

"न्यान्त्री के "नुष्ठान्य प्रमान्य प्र

इन्य विन्यम् सेन्यम् विन्यम् रहत्येन् सेत्। र्रे म्वा विन्यम् सेन्यम् विन्यम् विन्यम् विवा

राखेशःश्रुरानःत्। तुशाराष्ट्रापराग्चीःगविःद्राःक्राभेशाष्ट्रापराग्चीः राखेशःश्रेक्रां

दे त्याम् अभी अग्याम् अभी अग्याम् विश्वास्त्र विश्वास विश्वास

इन्य विन्यम्भेन्यम्बिन्यम्ख्ना र्थेन्यम्बर्गः

ने भूर न छिन् सर इस ने स से न सर ने स छिन सर नु छ स स छ त छी नु स स प्येंन स स प्येन हो ने भू स प्येन न से मिनस छी नु प्यत्न ने से म नु स स ने प्येंन सर वया नर प्र सु र रें॥

इन्य वायाने विद्यास्य स्थान स्थान स्थान । व्यासासी स्थान स्थान स्थान स्थान । "नायाने म्हार्येशान्तियान्त्र श्रामायश्ची प्रमायने प्रमा

इ.चवर्धेर.चर.वर्धेर.चतु.चर्थं.चर्थं.चर्थं.चर्

यतुरावरावशुरावदे द्वा यावेशावश्वरायरावरें रार्दे (वेदा

"ने प्यत् श्रेद्र से अन्ते। ने श्राप्त विषा पुर्णे न स्या प्रित्य स्वा के प्यत् विष्ठ स्वा के प्रत्य स्व स्व के प्रत्य स्व स्व के प्रत्य के प्रत्

र्जन्य मार्गिके दिस्य के स्थानिक स्था

इन्य विश्वासाम्य स्तर्भाति विश्वासाम्य स्तर्

रदःचित्रःश्चित्रःश्चित्रःसदेःह्रसःभित्रःश्चेतःसदेःद्रशः तुत्रःसःसेदःसरः रदःचित्रःश्चित्रःश्चित्रःसदेःह्रसःभित्रःसदेःधेःवशुदःचरःवशुदःचरःसेदःदे॥"

त्तुः स्राप्त्राधुः त्युः स्राप्त्राधुं स्राप्त्राधः स्रित्राच्याः व्यव्याः स्याप्त्राधः स्याप्तः स्याप्त्राधः स्याप्तः स्यापतः स्यापतः स्याप्तः स्यापतः स्य

वृश्यायायशाह्मसानेशावतुरार्टे विश्वातुशायायाद्वेशाह्मसानेशा वर्हेणात्रा"

य्या स्व रहेव में विषय महेव मिर युव में हो। युव सेव हेंद हे य द्या महेव में से युव में से हो।

"स्वरक्षंवरग्रीःर्नेवर्यायहेवरम्पेरव्युवर्यायस्यग्रुरःर्मे । देरदेन्रेन् वेत्रः नेत्रुर्वर्ष्वस्यत्वेशस्य प्रेशस्य विवर्ग्येशः युवर्यः सेवर्यः हेन् हेशस्य स्य स्रोवर्यस्य स्वर्यः वर्ष्वस्य ग्रीश्राम्य स्थान्त्रे

त्र्रोषःचरः "रेटः ब्रुटः प्टः सः रेषः क्रुः रेषः क्षुः तुषेः क्ष्रें भः व्र्युतः क्ष्रें भः वर्युतः क्ष्रें भः वर्युतः क्ष्रें भः वर्युतः क्ष्रें भः वर्युतः क्ष्रें भः वर्ये वाश्यः प्रश्नें भः वर्षे प्रः प्रः वर्षे वाश्यः प्रः वर्षे वाश्यः वर्षे व्याः वर्षे व्याः वर्षे व्याः वर्षे वर्षे

বাপ্তম:বা

वन्यायायात्र्यान्यान्यायायात्र्या

इन्य यात्राने त्यायायायायते तुया श्चेत त्यया त्या मा यात्र सी वात्राने त्यायायायायते तुया श्चेत त्या प्रस्ता ।

इ.यो योवय.मु.वेश.त.जश.योवय.उर्वैट.यर.उर्वैरी।

न्त्रः प्रविष्णु अः ग्रुपः प्रविष्णु अः प्राप्त्रः प्रविष्णु अः प्राप्त्रः प्रविष्णु अः प्रविष्

इन्य क्वंत्रव्यस्यरानेरायवःक्वंत्रवार्ट्रिया

देश्यदक्षुत्रःश्चेःश्चेद्रस्यस्यः "हःतुःतेःश्च स्यायदः "हेत्रः स्वेदः स

ळॱॴॖॺॱॴ॓ॺॱॸऻय़॓ॱऴॱॸॺॱऒॗॱॷॱॸॖॖऀॱॸॸॱॺॱऴॸॱॸॱॸ॔ॺॱऄॺॱॺॆ॔ॎ। "ॸ॓ॱॺॆॱक़ॗॖॺॱॻॖऀॱळॱॴॺॱॾॺॱॻॖऀॱॠॸॱॸॆॻॱॺॱॠॺॺॱय़ॱऄ॔ॸॱॸॺॱॺ।

मृत्यं भ्रेत्राचित्रः विश्वान्यः विश्वान्यः

देःश्वरःदःर्यावेदःश्वेशःश्वरःयदेःयव्दःश्वेरःश्चेदःयःयव्दः वर्श्वरःवरःवश्वरःस् यवःहेःदेवेव्दर्गःयदेःश्वरःश्चेरःश्चेदःयःधेदःद्वरःयःव

इन देशेरवस्थराउद्गावायस्य द्वारावर्षा

नेते भ्रेर-नर्देश में प्रस्था उत्रर्ग प्रस्था मृत्व प्रते नर्देश में गृतः यश प्रमुद्द प्रस्था प्रस्था

> इन्य यात्रक्तिन्त्रक्तिः क्रुव्यक्तिः वित्रा । ने न्यात्यः क्रुव्यक्तिन्त्रक्षेत्रः वित्रवित्रा

हेशसे ५ हे द

इना ""दिने देन सुन गुलिया

क्रुन्न् महिमाना "वर्ने ही नक्क्षुन्न मन् ज्ञान विमाने हिते ही र वि हा "

इन्य बन्ध्राप्त क्षुत्र भूत्र अभिया भी मार्थ हो मार्थे ।

इत्य श्रम्भारित्र श्रम्भार्थ यहेत्र हिं स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्व

ने स्यान्य स्वान्त्र स्वा

र्मिन्न्स्। महिर्यासेन्यान्त्रम् स्थान्त्रम् स्यान्त्रम् स्थान्त्रम् स्यान्त्रम् स्थान्त्रम् स्यान्त्रम् स्थान्त्रम् स्यान्त्रम् स्थान्त्रम् स्थान्त्रम् स्थान्त्रम् स्थान्त्रम् स्थान्य

याववरश्ची श्वयाश्चर महिंद्र याद्या श्वयाश्चरी । इंदर्श

ग्वरमी स्वाराम्हर्

"ने अन् न्यूष्ठ पाणे व न्या अस्य अस्य अस्य प्रस्ति । स्यूष्य । स्यू

इत्य भ्रमार्स्त्र भ्रे. यात्र प्रमार विवायमा ।

दे स्मा भ्रमार्त्त भ्रे स्मा स्मा हित्य सम्मा हित्

"श्रेणाणी क्लें हैं ह स्थान स्थित श्री निया क्षेत्र स्थान स्थान क्षेत्र स्थान स्यान स्थान स

"इस्नेश्वर्यश्याम्य विश्वर्यात्रः स्वर्यम्य विश्वर्यात्रः स्वर्यम्य विश्वर्यात्रः स्वर्यम्य विश्वर्यात्रः स्वर्यम्य विश्वर्यात्रः स्वर्यम्य विश्वर्याः स्वर्यम्य विश्वर्याः स्वर्यम्य विश्वर्याः स्वर्यम्य विश्वर्याः स्वरं स

यहिणाहेत पर्ने त्र न्वर में प्थाय श्री हुर विश्व स्थाय स्था भी श्री स्थाय स्थाय

इत्य क्षेत्रयम् वित्यव्यक्षित्रयाव्यक्षित्रयम् । र्या क्षेत्रयम् क्षेत्रयम् ने प्रिः क्ष्यः उत्र से सम् । यद्भारतः क्षेत्रयम् ने प्रवित्यम् व्यव्यक्षित्रयाः । द्वीर्भ्यः से न्यम् प्रवित्यक्षित्र के प्रवित्यक्षित् ।

ख्यायाने न्यायान दी

"हे क्ष्र्र भेग न्वर भेन या से क्ष्र क्षेत्र भेग न्वर भेन स्वर के क्षर क्षेत्र क्षेत्

यदी 'प्यतः श्रितः या श्रुया श्राश्चित् । श्रीत्रा श्रीत्रा या श्रीत्र या श्रीत्रा या श्रीत्रा या श्रीत्र य

"के श्रे अन् सित विंद्य न त्या थिन के भी अन्य न व्या अन्य स्वा न स्व न त्या के न स्व न स्व

ने भूम ही के सेन हे या है या से मिया।

द्रीः प्यतः त्रावाः चाः या वित्राः स्थाः वित्रः स्थाः वित्रः स्थाः वित्रः स्थाः स्याः स्थाः स्य

इन्य हे सूर्यमा सेन्य हैन से कु सेन सूर्य। क्षेत्रसन्य प्रमानेन से कु संस्था

यी'नया'क्रयाश्चेत्रेत्र'सदे'क्कु'स'धेत्र'हे।"

धुःर्रेयःसेट्र्यरःभेर्यः प्राप्तः विवाधितः श्री स्वाध्यायः श्रीः व प्राप्तः स्वाध्यायः स्वाधः विवाधः विवाध

इत्या ने श्रिम् से त्ययानु प्यताने न्दिर्या सेवा। महत्र प्रते पुरा उत्ति व्यायाने प्रति सुमानया स्ता।

"नेवि:श्वेम् श्चे त्याम् न्याम् स्वान्त्र स्वान्त्य स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्व

द्री ते त्यो या स्मा "क्षे त्यस्य स्थाय व्या स्थाय स्

नमःश्रृंतःश्ची नेःगश्रुश्रःश्चेनाःश्चिम्श्चानःसमःवर्नेनःस्थितःश्चेनःश्चेनःश्चिमःवर्नेनःश्चेः इःग्चमःनमञ्जूष्यवेःश्चे।पश्चान्यमः। नेःनगःहःग्चमःनमःश्चेमःवर्नेनःश्चेः नर्गेश्वःसःनविवर्ते। "नेवेःश्चेमःनेःश्वमःव।"

"शेश्रश्राचायदी'धिश्रान्त्यायायायायवादी'चारान्त्राचान्त्रचान्त्राचान्त्रचान्त्यचान्त्रचान्त्रचान्त्रचान्त्रचान्त्रचान्त्रचान्त्रचान्त्रचान्त्रच

मण्यतःहै। हेत्र ये न प्रति श्री म्या स्था श्री श्री से प्रति । विश्वा स्था स्था से प्रति । विश्वा स्था स्था से प्रति । विश्वा स्था स्था स्था से प्रति । विश्वा स्था स्था से प्रति । विश्वा से प्रति । विश्वा से प्रति । विश्वा से प्रति । विश्वा स्था से प्रति । विश्वा स

ने त्यः श्रुं र न न्दर्शे मिहेश है। द्री स्यायुन प्रश्न श्रुं न श्रुं

বাপ্তম:বা

शेशशास्त्राम्य प्राम्य प्राप्त । स्वर्थन स्वर्य स्वर्य स्वर्थन स्वर्थन स्वर्थन स्वर्थन स्वर्य स्वर्थन स्वर्य स्वर्य

दे खूर से सम्राज्य संदे खुवामा नगवा साम रेवामा सम्माने द यर सम्मान् "खुर वीमा वार्के द सम्मान सम्माने स्वाप्त सम्माने स्वाप्त सम्माने स्वाप्त सम्माने स्वाप्त सम्माने स

यदःद्वाःसरःह्वाश्वःसदेःश्वरशःक्षशःक्षशःश्वेशःदे। सदःवीः शुवाश्वःयाशुदःस्वःववासःयदःदिसःसःवदेदःसरःयेदःहेशःसःवश्वदः सदेःश्वेरःस्।

ने प्यम्प्यम्याम् विवायम्यय्या "श्रीम्यामश्रुश्चान्नीय्यम् र इस्रा मिन्द्रित् क्रिम् क्षेत्र स्थाने स्थाने

म्दार्याद्दार्धे अधित्वश्च क्षेत्राचित्र विश्व विश्व

कुः सः ले अः सः स्टाः चले वः द्राः चा त्रुवा अः वा हे अः या वः वह वा सः या अः वि सः या त्रुवा अः उवः वा त्रुवा अः वि सः से वा हे अः यदे त्रुवा अः वि अः वि दि सः यो त्रुवा अः उवः वि दि सः वि अः सः द्राः वा त्रुवा अः उवः वि दि सः वि अः सः द्राः वा त्रुवा अः उवः वि दि सः वि अः सः द्राः वा त्रुवा अः वि सः वि वि अः सः द्राः वा त्रुवा अः वि सः वि वि अः सः द्राः वा त्रुवा अः वि सः वि वि अः सः वि अः व वि अः वि अ

नगमामित्रेर्देर्नित्ता नर्देश्चेर्यं सेत्रम्यम् । स्तित्रं स्ति । स्तित्रं स्त्रम् । स्ति स्ति । स्ति । स्ति । स्ति । स्ति स्

वेशतमेयामसम्बर्धाः । यद्याक्षेत्रम्भेत्राः वेशस्य विश्वस्य विश्यस्य विश्वस्य विश्यस्य विश्वस्य विश्यस्य विश्यस्य विश्यस्य विश्यस्य विश्यस्य विश्वस

गडिगायाडिगार्थियाओ न्यानिश्वास्त्रित्याये स्वित्याचे स्वत्याचे स्वित्याचे स्वत्याचे स्वत्याचे स्वित्याचे स्वत्याचे स्वत्

त्तुः स्रायः स्वरः त्वेत् रहं याते स्वरः त्यः श्वरः स्वरः स

देवे श्वे र प्रश्नर श्वे अवस्य वित्य स्था श्वे र प्रश्ने र प्रश्ने श्वे र प्रश्ने प्रश्ने र प्रश्ने र प्रश्ने र प्रश्ने र प्रश्ने र प्रश्ने र प्र

वेश केंश इस्र शिट्ट निष्ठ निष

ध्ययाने इसस्य है। यस दाधार दे साने न्या साहे न दस्य सन् संदे छैं। क्षे. कु. कु. कु. या श्रीर अ. कुट. हे. तर्र अट. यश. कु. त्याग्रीः से त्यासे प्येत्रः सेत्राह्यत् प्यत्रः सेत्रः से स्थानः ते। वित्रः हः से त्वतः हो। न्वाय हेन् भी भूवाय भीत्र संदेश संस्था ह्या ने स्थय ही ज्या भीत्र संस्था ही न्या सु षरःशेस्रश्रः इतः देगः प्रः सङ्गेदः प्रसः वाश्यः स्थितः। सदः द्रशः शुः देः दवाः हेट्रप्राचाववादवीं अपवेदि स्ट्री देशक् हेर्यसर् सेवाकिशय सेवाका यदे प्रवरः ने अ प्यें प्रायदे वे खुम्र अ शु श्रुप्त वे वें प्राय के व से प्राय के व स्थार ह्यो। दे सूर्व सेस्र रहस राय देश देव सम्म मुग्न राहे निया <u>र्ना ग्री:इत्यः भेर्पराग्रुन पदे अवरः श्रुर्न न त्रिन त्राप्त न स्तुः न दि।</u> याश्वासः रिन्द्रिसः यगायाः संस्टाः स्याः सङ्ख्याः सङ्ख्याः याहेश्यः से वयायान्य न्य हुत्या वेदी "याया हे ही खे खुया के न समाया हुया का हु र्शेग्रायायायायम् सूर्वे प्रदेश्वेयायाम्यावेत् वीयायायायायायायायाया यदःययःत्यात्ययः से स्वाराः स्वारादे स्वार्दे स्वार्ये स्वार्दे स्वार्टे स्व गेटरुअःग्रेअःग्राट्यस्यर्वेटर्यादेःहेःसूरत्वदर्देःगेटरुअदेखेट्यूटर र्राचित्रचीराचुनारादे द्वारिश्वरादे थेंद्रारादे द्वीरार्दे सूर्याद्या"

इत्य इत्यत्र्र्चित्रः संभित्रः स्वाधित्रः स्वाधितः स्वाधित्रः स्वाधितः स्वाधित्रः स्वाधितः स्वाधितः स्वाधितः स्वाधितः स्वाधितः स्वा

भ्रेष्यायाञ्चित्रायि म्याय वित्राण्ये स्थाय वित्रायाय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्थाय

इन्य व्याप्तान्यन्त्रम्

हिरारे विह्ने ते विश्वापाय क्षे ने विष्ठ हिराया धेत पा धेराया हो र यम प्रमुद्दारा क्षे अर्ने व्यया गुरुष्य प्रति हो मार्ने।

गोराम् अर्थान्यते भेश्वान्यत् विवाधी अर्थान्यत् ने देशे श्वान्य अर्थान्यते ने देशे श्वान्य अर्थान्य स्थान्य स

"ब्रिन्'ग्रे:क्रेंशन्तर्ग्रे:क्ष्रन्'र्से त्यःस्वायायः क्ष्रान्तर्भावार्यः स्वायः

गहर्न्स्स्र्याय्यादे द्वार्यास्य विषय्य विषयः व

यदीर प्रशेष प्राप्त प्रश्नित्र श्री "हिंदि श्री द्वार हिंदि श्री प्राप्त हिंदि श्री द्वार हिंदि श्री हिंदि हि

क्यादर्ज्ञेर्स्याधेवाक्षेव्याची सिक्ष्यास्त्राध्या विश्वास्तरम् निवास्त्राच्या सिक्षास्तरम् निवास्त्राच्या स्वित्राच्या स्वित्राच्या स्वित्राच्या स्वित्राच्या स्वित्राच्या स्वित्राच्या स्वित्राच्या स्वित्राच्या स्वित्राच्या स्वत्राच्या स्वत्या स्वत्

ङ्गा रगःरेगःत्रःथ्वःत्यरःशें उवःसद्धंत्रःय।। द्धःयनगःसुरःयःधेःत्याशःह्याःह्यं धरः॥। ते निवेत पु स्वासे निर्मा स्वास निर्म स्वास निर्मा स्वास निर्मा स्वास निर्मा स्वास निर्मा स्वास निर्म स्वास निर्मा स्वास निर्मा स्वास निर्मा स्वास निर्मा स्वास निर्म स्वास निर्मा स्वास निर्मा स्वास निर्मा स्वास निर्मा स्वास निर्म स्वास निर्मा स्वास निर्मा स्वास निर्मा स्वास निर्मा स्वास निर्म स्वास निर्मा स्वास निर्मा स्वास निर्मा स्वास निर्मा स्वास निर्म स्वास निर्मा स्वास निर्मा स्वास निर्मा स्वास निर्मा स्वास निर्म स्वास निर्मा स्वास निर्म स्वास निर्म स्वास निर्मा स्वास निर्मा

नेतः श्री र गोट र स्थान र ग्री विषय स्थान स्थान

वेगानसुर्यायश्यामः॥ "भेर्ग्यश्रान्द्र्यायश्यानम्॥ विश्व इस्रश्चान्द्र्यायश्यामः॥ विश्वायश्चित्राभेद्र्यायश्चित्र। विदेश्यः वेत्रायश्चयानसुर्याश्चर स्रायानस्य विदेश्यः भेर्याश्चर्याः विश्वायश्चर्याः विश्वायश्चर्याः । विश्वायश्चर्याः विश्वायश्चर्याः । विश्वाय दिस्राचे पाठियायादः भेर्न्याश्चर्याः । विश्वायश्चर्याः विश्वायश्चर्याः । विश्वायश्चर्याः । विश्वायः । विश्वायः । विश्वयः । विश्

त्री त्यात्री सूस्रानु त्योँ नाने न्यानी सर्वे नाने नाने नाने नानि नाने नाने स्वानि नाने नाने स्वानि नाने नाने स्वानि नाने नाने स्वानि नाने स्वानि नाने स्वानि स्व

व्यास्त्र निर्मान्य विष्ट्र मिन्न विष्ट्र मि

न्यर प्रवर वा त्यारे वा क्षार के प्रकेष वा प्रवे से वा क्ष्या था ने प्रवा के प्रव के प्रवा क

ने स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त

বাইস:বা

ने सूर नगागा भने सह्या नसु न ही

इन्य सर्नेर्द्धाः स्ट्रिर्द्धाः स्ट्रियः स्ट्रि

श्रम्भ्रास्य प्रम्य प्

শ্রীমানীবা উমাবাধ্যদমানমা

यहेगाहेब यथ यद्यास्य म्यूर्न स्थाय विश्व स्थित स्थित

नेश्वान्त्रः विश्वान्त्रः विश्वान्त्रः विश्वान्त्रः विश्वान्त्रः विश्वान्त्रः विश्वान्तः विश्वानः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्वानः विश्वान्तः विश्वानः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्वानः विश्वान्तः विश्वानः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्वानः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्वान्तः

चरःक्र्वासेस्यावर्षेषात्यस्य "नेसामसनेसार्ड्रिष्मसामार्ड्री।

नेशन्त्रः सेन्यम् नेश्वास्त्रेत्। डेशम् श्रुप्तास्य स्थ्यः स्यास्त्रः व्यक्ष्यः स्थाः प्रदेश्यः स्थाः स्याः स्थाः स्थाः

गाल्क प्रमार्ग्य प्रतिक श्री अ श्री मा प्रमार्थ श्री मा से प्रमार्थ प्रतिक स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन

याववर्त्त्वराणी श्रुवा होत् स्राध्यात्वापाया श्रेश्वर्थः स्रितः स्वाध्यायाः स्वाध्यः स्वाधः स्वधः स्वाधः स

म्बरंद्रयद्यो श्रुव होत्रद्र देया द्याया याया वि

मान्वर प्रतर मी श्रुवा हो प्रत्य स्था ने श्री प्रथम प्रत्य स्था हो। प्रथम प्रत्य मान्वर हो। प्रवा प्रवा प्रत्य प्

55:39

ग्वित्र'न्नर'गे क्षुन'हेन्दिश्वरूपने से प्यन्पन्न स्रम्भानि

"ने ख्रूम ध्रिः र्रेषा सेन् प्रमाह्मस्य प्रमाने स्थान स्थान

इत्या यात्रानेत्रा ब्रह्म स्थित्र स्थित् स्या स्थित् स्या स्थित् स्या स्थित् स

ख्याया श्रेयायीयायम्याक्षेत्रायाः स्वाप्तायाः वित्रायाः स्वाप्तायाः स्वाप्तायः स्वापत्त्रः स्वापत्त

वेश शेसश उंश ग्री ग्विट त्यश त्युट प्रति श्री में विश्वी में शेसश उंस प्राप्त सुम ग्रुम प्रति श्रम प्रति त्या मुस्य प्राप्त स्था प्राप्त स्था प्रति श्री में विश्वी में विश्वी

रा यात्र स्तायार वित्रेया स्तर्भी स्ता

न्तुःसःमश्रास्त्रःस्त्रः स्वरः स्वर

इना ने हेन ग्रेम ने श्रिम्य मान्य विद्या

नेश्वरादेशेत् ग्रीशदे श्रीत्यम् ग्रीयायायायाये स्वर्ते । विदेशसेशस्य श्रीयायाय्ये स्वर्ते । विदेशसे स्वर्ते श्रीयायाय्ये स्वर्ते । विदेशसे स्वरं । विदेशसे स्वर

ह्नानो प्रवस्तायम् "श्रेस्रश्च्यास्य ह्या विश्वाने स्वाने स्याने स्वाने स्वाने

विश्वास्ते त्यत्त्र न्त्र । "ध्यान् स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र । विश्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र । विश्वास्त्र स्वास्त्र स

यदेव पिरुश्चा स्वाप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्त प्र प्राप्त प्र प्र प्राप्त प्र प्र प्र प्र प्र प्र प्र प्र प्त

यवि'रे'या इर प्रहें व ह्र श्यावव र र से र प्रेन्य के र ये। रे प्रेन्य हें व र या वि र र र रे या ये श्राया वि र र या वि र या व

हिंद्रिः श्रेः स्वर्गावद्गः द्वर्गः स्वर्गः स्वर्गः विद्वर्गः स्वरंगः स्वरंगः

ने 'त्रवर्'रादे'मावव ग्री रा'यव 'र्मामा'रा'य'गिहेरा

मान्वराष्ट्री श्वमार्थः महिंदार्थः प्रमार्थः प्रमार्थः प्रमार्थः । प्रमार्थः प्रमार्थः प्रमार्थः । प्रमार्थः प

ग्वन्तुः शुग्रायः न्हें नः यं दे।

"यदेराविष्ठवावीयाहे सेस्यान्यास्य स्थान्य स्यान स्थान्य स्थान

न्भेगश्राम्ता नेथिन्त्राध्यामायान्भेगश्रामाक्षेश्राश्चेत्राम्याने निविद्याम्याम्याने स्थाने स्थाने

"न्द्रात्त्रेन्न स्ट्रिन्न स्ट्रिन्न स्ट्रिन्न स्ट्रिन्न स्ट्रिन्न स्ट्रिन्न स्ट्रिन्न स्ट्रिन्न स्ट्रिन्न स्ट्रिन स्

यर्ने शर्ते रश्चरक्ती स्वर्ते विश्वर्ते विश्व

"श्रॅं तिहें कर ने र्राया शर्में कर मालक स्विर के स्वस्था मालक स्वर के स्वस्था मालक स्वर के स्वस्था मालक स्वर के स्वस्था के स्वस्था

महिश्रामः "ध्यान्वत् व्यान्य श्रुः श्रे मार्डेन् प्रमः प्रयाने ही" भेश्रामः श्रुः श्रामं हेन् ते मार्जे मा

ग्याने क्रिंपहें तहें व क्रिंप्त क्रिं

यद्भेन्द्रस्थात्र स्वास्त्रस्था "इस्प्रान्त्रस्थात्र स्वास्त्रस्थात्र स्वास्त्रस्य स्वास्त्रस

र्ने ५ अट में अ अ देवा थ थूं निर्देश के दगार दुसर से वास प्रहे व परे

निश्चान्त्रः अवान्त्रः त्रः श्रुः न्याः अवान्त्रः व्याः व्य

मानेश्वाप्यात्वत्त्रिः निराम्य विष्णः विषणः विष्णः विषणः व

ख्यायारी प्रायापाराया ख्या

ग्वत्रः सुग्रभः न्यागः भः न्रेश

इन्न ने हिन् ग्रेशने श्रिम्न स्थान स्थान । नाय हे श्रिम् स्यान स्थान स्यान स्थान स

"नायाहे ह्र साम्मा अळ व हिन् ग्री साग्रामा निमान में स्थान हिन साम्मा निमान स्थान स

यः निव्यः निव्यः या श्राध्यः स्थान्यः स्थान्त्रः स्थाः स्था

ने 'क्षु' व 'खुव 'प्यय प्रत्य व व क्षुव 'प्यय प्रत्य क्षुव 'प्यय क्षुव 'प्यय क्षुव 'प्यय क्षुव 'प्यय क्षुव 'प्यय क्ष्य क्ष्य क्ष्य

"के के ने क्रम्क्यायमान् विनायान निमान

विश्वास्त्रास्त्राम्य विश्वास्त्र विश्वास विश्वास

ध्रैयःशैः"इत्वियःद्र्यःश्रूयःशैःख्यःश्रूरःशैःख्यःश्रूरःगोःक्रेयःदः निव्वःश्रीयःश्रूयःग्रवःग्ववःक्षेतःदः।
विदःश्रूयःग्रुयःश्रियःश्रूयःश्रूयःश्रूयःश्रूयःश्रूयः।
विदःश्रूयःग्रुययः।
विदःश्रूयःग्रुययः।
विदःश्रूयःग्रुययः।
विदःश्रूयःश्रूयःश्रूयःशेःक्षेयः।
विदःश्रूयःश्रूयः।
विदःश्रूयः।
विदेश्रूयः।
विदेश्यः।
विदेश्यः।
विदेश्यः।
विदेश्यः।

इना नावम्हिरसम्वेशः कुर्यः भ्रेशः सम्वेदा।

"श्रूम्यानेश्वात्राह्णेन्या हीम्या हिम्या ही स्वात्रा हो स्वात्रा हो स्वात्रा स्वात्र स्

इन्य गहरक्ष्म्यायदेशन्त्रे । विद्यास्त्रा गहरक्ष्म्या

"रटः सक्षत्रः श्री अः याव्य प्येतः प्रेतः स्त्री रः विश्वा याः स्त्री याः यदि शः वै । क्षु नः यादे याः पुः यादि या अः यादि स्त्री रः विश्वा यादि स्तरः स्त्री याः यदि शः यादि स्त्री स्त्री स्त ने न्या ग्रान्ते प्रस्थिक प्रस्ति वित्ते । यह वित्ते । यह वित्र वित्र । यह व

म्बर्यात्र केर्यं स्थान्य प्रति । म्बर्यं स्थान्य प्रति । म्बर्यं स्थान्य । म्बर्यं स्थान्य । प्रति ।

गल्दाये केट वया नित्र प्रमाय की

यायाने स्टार्स्या से पर्दे दाया हिंदा ही प्रमान स्वापा है। स्वापा

इत्या गराधेरागरागेशासुयाधेरायसूरादेश्यशा इत्यायदेशावत्रारायाधेराधेत्यस्या देशेराराधेश्वासेर्वराश्वराद्याराहे॥ वर्राधरायदेगाहेत्वश्वराश्वराख्याशाधेत॥

यर्गे भ्रेरक्र भ्रेर भ्रेर भ्रेर में के कारायर में का खुवा श्रेर निरम्भ

याने व्यायान्य स्वरं के या प्रति स्वरं स्व

या श्री वा क्षेत्र स्वार के स्वर के स्वार के स्

देग्द्रासाधितंत्र कुन्यावित श्री श्रिम्पायापान स्टर्मी द्वारा श्री न्या वश्य स्ट्री

इन्न ने हिर्द्राहेव श्रम्भून द्वापा स्वी

यः क्षेत्राः स्ट्रान्य व्यान्त्र व्यान्त्य व्यान्त्र व्यान्त्य व्यान्त्र व्यान्त्य व्यान्त्य व्यान्त्र व्यान्त्र व्यान्त्य व्यान्त्र व्

र्टायम् विषय्यम् इसार्टामे अळव हेट्र मे स्वाप्त स्वाप

ने त्याद्र अर्थेद्र सूत्र प्रज्ञान्त्र प्रज्ञान्त प्रज्ञान्त स्थ्र प्रज्ञान्त प्रज्ञान प्रज्ञान प्रज्ञान्त प्रज्ञान प्रज्ञान

हिन्द्रव्याम्याण्याः विद्रान्याः प्राप्तः विद्रान्याः विद्रान्याः विद्रान्याः विद्रान्याः विद्रान्याः विद्रान्य विद

বাইশ্যা

गल्दाम्बद्धान्य भ्रान्त्र प्रम्थः

रदःरेगाः सेर्'र्यः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्

हैं दिन्द्रिया प्या "याय हे स्टार्स्या प्याय है स्टार्स्या प्याय है स्टार्स्या । विश्वाय । विश्व

विष्य्रम् क्ष्याम् प्रत्याचित्रः स्वित् विष्य्ये । श्चित्र्यायः स्वतः प्रत्ये । स्वतः स्

हेश्रासाधेन्ने एए व्यक्ति स्वास्त्र व्यक्ति स्वास्त्र व्यक्ति स्वास्त्र स्व

यदी हैं स्टारेगा से दास्य द्वा स्थ्री स्थ्र

বাপ্তম:বা

ने सूर नगमा राया हैं न रा सूर न या महिया

अर्देव्'शुंश'ग्री'र्ळंट्'श'ग्विव्'ट्रा हे श'ट्राग्'य'र्सेट्'रा'श्रूट'रा'ट्रा' अट्'वेश'ग्विव्'ग्री'र्सेट्'श्रूट'र्ट्'।

55.51

यर्दिन्शुयाग्रीः कर्न्याविवादारहे याद्यवात्या हिन्याश्वरावादी

म्बर्ग्यरण्यार्णित्रहेशः ग्रुर्याः वेशःम्बर्ग्यः वेशः म्बर्ग्यः विश्वः म्बर्ग्यः म्बर्गः म्वरं म्बर्गः म्बर्यः म्बर्गः म्बर्यः म्बर्यः म्बर्गः म्बर्यः म्बर्यः म्बर्यः म्बर्यः म्बर्यः म्बर्यः म्बर्यः म्बर्यः म्वर्यः म्बर्यः म्बर्यः म्बर्

रटाचीशार्विःसटामाल्वराद्याः

पर्देन् माश्वराश्चित्त्विः नवतः नवतः विश्वास्याने । पर्वतः स्वितः स्वतः स्वितः स्वितः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वितः स्वतः स्व

क्रन्सावर्युनासम्बर्धुमःर्से॥

বাইশ্বস্থা

धीन्नेशयाववःश्रीः हैन् श्रूनःवी

महिश्राञ्चर सँम्। सहित्र संस्टरम्मयम् स्थित्र स्थित् स्य स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित्

त्दी स्यान्त्र न्यान्त स्याने स्थाने स्थाने

श्चे प्रवेद दी

निवान्तः प्रति प्रत्योग्यायायय। "क्रिंश अर्मेद्रायाद्र या त्राया अर्थायायया। "क्रिंश अर्मेद्रायाद्र या त्राया विष्या प्रति विद्या प्रति प

गहिश्रास्ति। नर्देश्राश्चित्राहित्ति। इस्यास्ति श्रास्ताधिताही न्वत्ति। हिस्यास्ति श्रास्ति। हिस्यास्ति श्रासि हिस्यास्ति। हिस्यास्ति श्रासि हिस्यास्ति। हिस्यासि हि

ने महिराशी श्री अति मिले नु राज्या ग्राम्या स्ट्राम्या स्ट्राम्या स्ट्राम्या स्ट्राम्या स्ट्राम्या स्ट्राम्या

दे ख्रिस्त्र कें स्प्या बेश्या के होत्या कें त्रा होत्या प्राप्त के स्वाया प्राप्त कें स्प्या होत्या कें स्प्या कें स्प्य कें स्प्या कें स्प्य कें स्प्या कें स्प्य कें स्प्य कें स्प्या कें स्प्या कें स्प्या कें स्प्य कें स्प्य कें स्प्य कें स्प्य कें स्प्य कें स्या कें स्प्य के

यदी यदा न विवार्कें स्प्ता वेश्वा माश्रुश पुरा स्थित है स्पा है स्प है स्पा है स्प है स्प है स्प है स्प है स्पा है स्पा है स्पा है स्पा है स्पा है स्

यदी 'प्यद 'प्येद 'प्ये श की 'द्राच द्राच का की 'द्राच द्राच की का की 'र्येद की

श्चित्रं से न्या श्वाद्या विष्य क्षेत्रं त्या श्वाद्य क्षेत्रं व्या श्वाद्य क्षेत्य व्या श्वाद्य क्षेत्रं व्या श्वाद्य क्षेत्रं व्या श्वाद्य क्षेत्रं व्या व्या व्याद्य क्षेत्रं व्या व्या व्याद्य क्षेत्रं व्या व्याद्य व्या व्याद्य व्याद्य व्या व्याद्य व्याद्य

धिन्ने अभी देन मेर नु अपा अया सूर से पा अर्के अभी भी अहेन यदे ग्राबुग्राश्रङ्गर नात्रा धेर नेश त्य रे इस्र श ग्री इस्र प्रभूर प्रदे हैं। वर्षानेषाने । इस्र वा गुनाया वा ने । वहीं वा ग्री । वे वा पा व गुनाया वे । व्य न प्राप्त है। धुयने इसमाने पेर् भेरा भेरा यस में में मान में मान में मान में में मान में मान में मान में मान में मान में गहिराष्ट्रानुदेधिराषेन्ये राग्ने से सामे हे हिष्ट्रमावन्य मही के मानाराया यथा "नायाने अर्द्धन नावित्यास्टानी अर्द्धन हेट्रम् अर्द्धने अर्द्धन हेट्रग्रह रुरक्षे। व्हेमाहेववाधेनवादेशवस्य उत्सर्वे सुस्य रुप्त सेम् नःलेब्रन्धेरःब्रेन्क्ष्म्वाःषुः सःक्षुनः सःलेब्रःषे देवेःब्रेन्द्रदेवःखुव्यः उवःब्रीः इसः धर्भेशमान्मध्रुव हेगा हु अर्देव शुंश हेन नु इस धर प्रवागीं। वेश महारमायर्भमाने माना महार्मे । दे त्या सक्तामनि प्रतासकें त्रामिक म अन्दिन परिवास्य विष्टु नाविष्ठेया वीया सक्त पार्विन नश्चन गैशःसर्ळेंद्राग्जरानश्चरःर्रे॥

नेशन्त्रविश्वस्त्रहेत्। स्त्रीत्। स्तित्। स्त्रीत्। स्त

स्वास्ति । व्याप्ति । व्यापति । व्याप्ति । व्यापति । व्

ने अन्तरम्दर्भे विषेशाचारायान् भेवाशासदिः वेशासायदराने विषेश ग्री सूर न व ग्रुर त्या सूर न ने के द ने के साम ने वे प्याय सर्दे न शुसा से ने ८८. रेट. ती. त. व. ची. स्थाने अ. यो हे अ. यो अर्टे व. श्रे अ. रे. वर्डे यो. ये. वी. वी. यो. यो. यः अर्देत् शुअः ग्रीः श्वः ५६६ अः ५८ : धुयः उत्रः यः नित्रा अः तह् नाः धरः निवेद्रास्त्री भिर्वेश्वासायादायादायी ह्रासासूदानिवे सूदाना त्रस्था उद् नेयामानेते पुषा सर्देव सुसाधेव वासूर नाने नेयामाने पासर्देव सुर धेव विद्या दे प्यद्र दे प्या के क्षुनिय के नियम धेव व वहिया हेव व के क्षुनिय नेशमायाळन्यम्यायायाययाळन्यम्यत्यूम्यावेषावेन्दे । । नेदेखे ग्विया गुःश्रूरामारे भ्वेषामारेषा गुमामार पुषा उदावगुमामारे श्रूरामिद धेवर्दे । दिवेरधेरःनद्यायहेवर्याहेश्यः सुन्तुः व्याधरानद्यायहेश्यः ग्रेर्स् नः अर्देवः शुअः नुः पळरः या नेदेः के मान्यः गुः श्रूरः नः अर्देवः गुरुने खुयः व्यन्त्रात्युनारार्श्वन्यात्रास्त्रम्। नेशालेवाधायात्रात्रात्रा ग्वर पर ने श सर होते।

ने क्ष्र के अपा इस्र अपाया न स्रूट नि स्रूट युवा सर्वे सुर सुवा सर्वे न

यश्याविवाः इयान्य स्थान्त्र हिंवा प्रदे त्यो स्थान्त्र स्थान्त्र

शुःवळद्ग्यर्व्यस्त्री

र्वे त्र त्र त्र श्रृंत्र त्र श्रृंत्र श्रृंत्य श्रृंत्र श्रृंत्य श्रृंत्य श्रृंत्य श्रृंत्य श्रृंत्य श्रृंत्य श्रृंत्य

नेशः श्रीं प्रहें व श्रीः वेशः प्राप्त प्रमाण प्राय्याया प्रश्ने स्वाया प्राय्याया स्वाया प्राय्याया स्वयं स्वयं

यदेते मर्ते न्यायन स्थाने स्यायन महिष्य स्थाने स्थान स्थान

श्रॅट्र अपि स्ट्रिया श्रेत्र श्रेत्र वा श्रेत्र स्वा श्रेत्र स्वा श्रेत्र श्र

नेश्व स्ट्रॉन निर्व के विषय श्री निर्व से स्था के स्था के स्था के स्था के स्था के स्था के स्था निर्व के स्था के स्था

नेश्वान्त्रेश्वाक्ष्याः अप्यान्त्रेश्वान्त्रं । विश्वान्त्रं । वि

ग्वित्र'न्नर'र्र्रावेत्रचे अ'ग्रुर्ग'र्रा वे व्यानुर्न्रा सर्द्र्र्र्य सर'र्न्यू व्यान्त्र

"त्री क्ष्र्म से ज्ञान्य क्ष्य क्ष्

शेसरार्धसामित्रम्यानित्राम्यानित्राम्यानित्रास्य स्थानित्रस्य स्थानित्रस्य स्थानित्रस्य स्थानित्रस्य स्थानित्र

"यार प्यर प्रदेश में प्रम्याश प्रम प्रिंत प्रदेश क्रुम खुम बिया विश श्रुश पर ने प्यर पावव प्रपर प्रम प्रविव क्रीश प्रेंत क्रिय स्था विया विश

> इन्य गरके मालक न्यर इर बर र्षेत् अक ना गुक हैं या साथे कुर के यार लेगा वकुरा।

ने अ'वे'ग्ववद्गन्नर'र्ने द्व'न्य'न् ग्रुन्य'न्देन्'य्य र्ने द्व'न्य'य्य अ' १ अर्थ्य'न्य न्य द्वे । "ने वे श्वे न्य से अर्थ्य स्व प्य प्य दिना हे द श्वे प्र १ श्वे प्र श्वे प्य प्य प्र प्र प्र श्वे प्र प्य श्वे प्य प्र श्वे प्र श्वे प्य प्र श्वे प्य

द्धना निवर शुः क्ष्रम् तः ह्यान्य स्थान्य । व्हिना हेत स्वायायायाये स्थान यावव सेस्र उस्पादे स्ट्रिम् व में व स्वर्म हुया सार हो न सदे । स्वर्म स

इन्य वह्याःहेवः य्यायायायाद्यः इयानावयाः गुवः स्टा

देवे हो र शे स्थान हो स्थान हो त्या सुद्द न स्थान हो स्थ

न्यात्र सुन ग्री सुना या विष्ट्र से या स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स

इन श्रॅनर्धेन्याःश्चनःवनशःशेःवश्यश्यश्ची। श्चेर्स्याश्चरायावे नदेःवनशःशेर्द्धा

इन्य देन्यागुनः हेन देने हेन यदेन यश्वस्य। देन्यस्वस्य सम्बन्धन वित्रसम्बन्धन

 र्वे॥

"धर हेते श्रेर नित्राष्ठिय प्रथा कुर्यया प्रथा वर प्राची प्रश्नी प्रथा वर्षे । वर्षे

इत्य व्यक्ष्ट्रत्यतेष्ठ्यः व्यवस्थः शुक्तः स्ट्रा देवः द्रसः यत्रेषः व्यवसः शुक्तः शुक्तः स्ट्रेष्ठ्रा देविष्ठसः इसः द्रश्चे व्यवस्थितः स्ट्रेष्ठाः स्ट्रेष्ठाः देवे द्रसः हिंगाः विवास्य स्यसः द्रव्यवस्थाः देवे द्रसः हिंगाः विवास्य स्थान्य स्वास्य

श्रुत् नित्रं स्वर्मित्रं स्वरं म्यानिया स्वरं मानि हिंद त्या महित्रं स्वरं मानि स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं मानि स्वरं स्वरं मानि स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं मानि स्वरं स्वरं मानि स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं मानि स्वरं स्

कुषाने हिन्सि सञ्जून माने निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के नि

यदी महिश्व हिंदा के सम्बद्ध सम्बद्ध मान स्था वार विया गुत हैं न दे न विव दें त

यदेवःयात्रुस्यःयादःधदःस्यःस्त्रेसःस्यः विश्वःस्यःवे श्वरःसः क्रियःश्चेत्रः यदेवःयाद्रेसःयाद्रः यदेवःयाद्रेसःयः विश्वःस्यः विश्वःस्यः विश्वःस्यः विश्वःस्यः विश्वः स्वयः स्वय

ने त्रया "यार मे श्रान्ते र ये र या भेया या प्रत्ये प्राप्त स्थ्या यहे प्रत्ये प्राप्त स्थ्या स्या स्थ्या स्थ्या

"श्रेश्रश्चर्र्द्धन्याश्चर्यां श्रेत्वां त्र्वां न्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्

"विदे थान्यावानवे वर्षे नावित्रान्या वर्षे नवे के अन्त मुन्याने

स्थाः स्वाः स्वाः स्वाः त्रं वाः त्रे वाः वर्षे वर्

"वहिनाहेन सन परि न हुन पर शु विना नेश । अ वे ना हैं धि श ह्र श सर्ह्रेग्राश्चरत्व व्रियःग्चिःसग्राश्चरःक्षरःस्वःश्चरःश्चरः वि गुरुष्यभावन्यस्य विष्यम्। विष्यावन् वस्य उन्मानिकः न्नेवर्राक्षे । क्षेंन्यायळवर्षायेन्यानेवर्षा । पान्यो विकायका ब्रिन् ग्रीय सुर से प्रतेव सर माने माया । विस्थय प्रतः क्री सिस्य स्थित स्थय ग्रीर ने निवन है। । निवन से वे से निवन से कि साम के निवास मानि । गुन गुन सुव मार्चित्राग्रीसाहै निवेदानी वेतासा। "वेसानसूदामानासुदारना वतासेदी देता ब्रेव के अ वें ना सर हैं ना शत्रा वार्षेर न या श्रेव या ने ना श्रेव का है ना श कुषाने हे पर्वाविषास्त्रसाया कें सायने मससाउन स्टानविषान् ने वारा र्शेम्थार्ग्री मान्यार्वे यायात्र प्रायायात्र यात्रीती दिने दिने दिनो यात्रीता स्वीता धराग्रुर्यात्रे क्रान्त्र क्रान्त्र क्रान्त्र क्रान्त्र क्रान्त्र क्रान्त्र क्रान्त्र क्रान्त्र क्रान्त्र क्रा पिस्रश्रे अदे पिस्रश्राय श्रें प्रश्राय । भ्रे सके द्वे प्रा व्या श्रे श्रें प्रा श्रे

NII.

"नेति श्रेम्गुं त हैं न नित्र म्या र स्थान् म्या नित्र श्रेम्य स्थान् नित्र श्रेम्य स्थान् नित्र श्रेम्य स्थान् स्यान् स्थान् स्थान्य स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान्य स्थान् स्थान् स्थान् स्थान्

हिर्दे प्रहें क्रिया क्रिया "धियो से द्राये के अप्या क्षित्र के प्राया है क्रिया क्रिया क्षित्र के प्राया के

धि मोदि अन् दिन् अम् विश्व स्था भी निर्मा त्या से निर्मा मानि स्था मानि स्थ

"श्रभूत्रिः तत्वेत्रयार्वेत्रयाव्यव्यव्यक्षिः देत्रत्ययाः भ्रेत्रया देश्ययः ग्रम् देत्रत्यायार्वेत् त्रुत्याय्ययः देत्रत्यायाः भ्रेत्यया देश्ययः य वर्षेत्रभ्रे।"

इ.ने.ज्या ६१ "वः सूर्यायां सामहेताम्य । न्यायवे र्हेतां नसूत

भे तुर्भ। | नुरुष्ये देव दे सहिष्य । यह प्रमा । यह प्रम । यह प्रम । यह प्रमा । यह प्रम । यह प्रमा । यह प्रम । यह प्रम । यह प्रम । यह प्रम । यह

ग्वित्र'न्नर'न्रदेगाहेत्'ग्री'शक्षुन्'दर्गेग्'रा'से'सक्रुंद्ररा'राम्य सूत्र'राहे।

"नायाने हिंद् हिंना सासे दारा देश त्राव स्वाप्त स्वाप

यदी भूर "है भूर से समा उसाया हिंद है सामा विदान निर्मा है से से स्राम्य के स्रित स्राम्य है से से स्राम्य है से स्राम है से स

इन्न वर्ष्यक्षेत्रवर्तेन्त्राक्षेत्रक्ष्यः वर्ष्यक्षेत्रक्षेत्

यदीरागुनिः हें नासवे सुरार्शे नासायहिना हेन मासूर् छो रें रायहें नामा व्यक्ष्या नहें नासायहै सामा स्वाप्त स्व

यदी से के दिन से नियं स्वास्त्र के स्वास्त्

इन्ता हे सूर्या स्वार्थे सूर्या स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्थित स्व

है 'श्रे' गुद्दा हैं न'पिने' "है 'श्रूम न्या नहें स्राम्य स्त्रम द्र्या स्त्रम हैं न'यह स्त्रम द्र्या स्त्रम स्त्

इन्य गयने हिंद्रयादिया हेव शेषार्वेद्रया।

> इन्न हिंद्र-द्र-प्रहेगाहेब-प्रदेर वे ईंद्र श्रेश-द्रा। धुन्य स्ट्रेंप्य क्ष्य प्रदेश की स्ट्रिय स्ट्रा।

चर्त्। त्वःहेः हिन्दिणःहेवः श्रीश्राध्यः यमः श्रुशः वः वे। विवः हः श्रूनशः नः श्रुशः वः वे। विवः हः श्रूनशः वः श्रुशः वः श्रीः वेवः वः श्रुशः वः श्

र्दे न से सम्भ हं सम्म ह्या का से न माना में न सम्म है न स्वीता प्रति से सम्म ह्या का से न स्वीता प्रति से माना स्वीता स

यदेशक्षेत्रभात्र्यः कुष्यः क्षेत्रः क्षेत्रः प्रमान्यः क्षेत्रः क

म्बित् म्यान्त्र म्यान्त्

বাধ্যম:বা

शेश्रश्चार्यात्री विश्वास्त्राच्या में स्त्री में स्त्राची में स्त्राची में स्त्राची स्त्राची

८८:३०

अ.प.वी.प.ज.अ.अ.अ.अ.१.५.वी.४८४.त्वी.८४.त.च.५८.त.व.वी.४४००

रंश्राची श्रूष्याची देश के त्या के त्

५८.स्

रमात्री सूर्या भी देवीं वा प्राप्त कर वह प्रदेश सुर वी राज सूर्य परि

"नायाहे हे विं दिन हो नायाहें नाया प्रदेश प्रवास के से नाया हो नाया है नाया हो नाया हो नाया है नाया है नाया है नाया हो नाया है नाया ह

ल्याप्यश्चरान्वेशिष्णे। यात्र स्थायया "ने प्रति स्रुयान् से स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स् स्थाप्य स्थाय स्थाय

"न्हेंन्यम्भानवे न्युन्ने ने के न्युन्य के के स्वार्थित के स्वार्थ के स्वार्

सर्ने ने शही होता स्थानित स्थाने स्थ

मन्द्रा श्रेश्रश्रायश्रायविष्ठासदिः होद्रासार्थे पर्वीयाः साधिवार्दे॥

द्रितः श्रुं न्याया स्थाया विश्व स्थाया ने त्या स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्थाय

বাইশ্বা

र्नेतरे हेर अर्ने मान्य श्री यार मश्चित या दी।

> इन्न ने धिरः र्वे 'श्वन र्वे 'वे 'वे ये या ज्वे 'श्वे ना। यर 'ग्राम प्राचे वाका समें 'ने 'यका गुव सिंग्वे सी। सु स्वे या का स्वे स्वे स्व से 'वर्डे सका मा महान विद्या।

र्रे हे पर्ने ने निर्मास्य निर्मा स्थान

डं अ. ब्री : श्रू अ : ब्रेट : या विद : दर्वी वा : या अ : व द्व : यदे : दें द : धे द : य नेवे भ्रिम् ने किं न हेन हिंग्रा न्या न्या प्रेस हैं ख़्त भ्री हैं ने प्रयेष नम् भ्रानि म्रेम यरमारमिनेवार्यस्य सर्दे सर्दे नियं सम्मान्त्र सिन् स्वारम् कुर्छे निम्नाद्र निर्देश के निम्नादेश के निम ख़ॖॱज़ॱॸढ़ॱय़ढ़ॆॱॸॆऀॱॺॖॕॱॺऻॾॕढ़ॱय़ॕॱढ़ऻॕॕॖॺॴॱय़ढ़ॆॱॸॴॱॵॱॸॸॱॻॿ<u>ऀ</u>ढ़ॱॶऀॱॸॕ॒ॱॾॆॱ देवान्य अप्रमुद्दान्य पदि हो। अर्दे पाव्य द्राये अस्य स्था वे अपाशुद्र अपरे न्वीरश्रामायदारावे भ्रीमान् स्वामाया स्वामायाया स्वामायाय स्वामायाय स्वामायाय स्वामाय स्वामाय स्वामायाय स्वामाय स्वामाया क्रुव-५८-धर-भें-५८। ने निवेब क्रेव-५८-६०-५०-५। गर्डे-में-५०८-धुना होत्रस्यम् भेसम्द्रम् द्रियम् निम्न रायशम्बर्धर्थाते। याराबवादश्रान्तराध्याचेरारार्धेराङ्कायाद्वश्याचे होत्रमर्भेदी देक्स्यराधेदाही सेस्यराद्याविषाहोत्रमर्भेर्मा विषा বাধ্যদ্রম:র্ম্যা

इत्या है निविद्यास्य निव्यक्ष निर्मा है निव्यक्षा । इत्रिक्ष मान्य क्ष्य मान्य निव्यक्ष मान्य क्ष्य । इत्रिक्ष मान्य है निव्यक्ष मान्य मान्य

कुषान्यासेस्याउसावहिषाःहेत् होत् सँराष्ट्रिया।

है निवेत है है शूर रूर रूर यो निश्च निर्म के श्री मुन पि स्वार है । इर है जिल्ला अ श्रेम श्री स्वर्भ श्री श्री श्री स्वर्भ श्री स्वर्भ श्री स्वर्भ है निर्म है निर्म

इ.चर., श्रे.केच्या प्रथम श्री शाची शाची शाची त्या कुराया किया त्या स्था किया त्या विषया किया त्या विषया किया त्या विषया किया विषया विषया किया विषया व

स्मान्त्राम् न्यान्त्राम् स्मान्त्रम् स्मान्त्रम्त्रम् स्मान्त्रम् स्मान्त्रम्

क्षर अदशः क्रुशः ग्री नक्ष्र्व परि देव द्विव दे अ विवा पर स हिंग् शापि देव स

र्रा देवे भ्रेर सुर्भेगया नेया यही हिनायर हेराय के वार्गी।"

 यिष्ठेशः श्रीः अवयः प्रतः विषाः प्रतः श्रीः विष्ठः विष्ठः

"वर्षित्रः वः विदे वे विषाः अति । विदे त्र क्षेत्रः द्र हे वा वे विषाः अति । विदे त्र क्षेत्रः विषाः अति । विदे त्र क्षेत्रः विषाः अति । विदे त्र क्षेत्रः व त्र त्र त्र क्षेत्रः व विषाः अति । विदे त्र क्षेत्रः व क्षेत्रः व विषाः अति । विदे त्र क्षेत्रः व विषाः अति । विदे त्र विषाः विदे त्र व विषाः अति । विदे त्र विषाः अति । विदे त्र विषाः विषाः विदे त्र विद

বাঝুঝ'বা

रं अ.मी. श्रू अ.शे अश्यार्टें में हिन्नु नश्रु न पर

"ने स्वर्त्तरे विवा होन् सर्धे अअश्यश्याव्य व्यवित स्वर्त्त विवा होन् सर्थे अअश्यश्य व्यवित स्वर्त्त हो स्वर्त हो स्वर्त्त हो स्वर्त हो

इत्य देशित् क्र श्राया अत्या क्र त्य स्त्र है। त्रित् व्या देशित् क्र श्राया है त्र ख्र त्य है त्य

यायाने । त्याया शुर्या सं त्ये । त्या स् न्या स् न्या स् न्या शुर्या स् त्या स् त्या

हेत् चूर र्णाण्या शुर्या या स्टानी सळत् छेट ग्री स्वाप्त स्वर्ण म्या स्वर्ण स्

महिरागास्तास्यारास्य से से स्टाना से "माया हे स्यापराने रापा

रद्या नित्र विश्व विश्व

देवाश्वानाः स्ट्याः स्ट्राः स्ट्राः स्ट्रिनः स्ट्राः स्ट्राः

त्र-व-माश्रयाश्चात्र्या॥ विश्वान्यन्त्रित्त्रः विश्वान्यः विश्वान

"ने या इत्या अवाया अवाया यह स्था या अवाया यह स्था या अवाया यह स्था यह

इ.च वर्ग्य.च.भ.धेभ.जभ.जभ.भेंभ.चर.चीशेटभी

शेशशःश्वरशःत्रशःते त्यशःग्रारः वित्राधित्।

पर्वे प्राप्त स्थान स्य

ते भूरत्य भाव द्वार्य "व्येत्र भार्य द्वार्य भार्य द्वार्य भार्य प्राप्त भार्य भार भार्य भार भार्य भार भार्य भार भार्य भार्य

भेते भेत्रमान्य प्रत्ये नाम्य प्रत्ये मार्थ में स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वय स्वयं स्वयं स्वयं

विया यार्डे में रामावया यो या त्या रामा स्वाप्त से साधित हैं।

मायाने मात्रम्याभित्र प्रमायम् प्रमायम् मायाने मात्रम्य प्रमायम् मायाने प्रमायम् प्रमायम्यम् प्रमायम् प्रमायम्यम् प्रमायम् प्रमायम्यम् प्रमायम् प्रमायम्

वशा गर्डे तें त्य श्रें न्य स्वार्थ स

বাইপ্রমা

ने भ्री र ने भ्रम स्मर है स्मर न स्वर प्रवे खुवा भी श

इत्या यहेगाहेव मधी ने छिन स्यानवश्वा स्रम्भे यहेगाहेव स्यानश्वेष है ख्रा कर स्थित। ने छेन स्थे भेश यकर नर यहें न स्यान ह्या यहें र स्था से ख्रा है ख्रा यहा है।

वहिमा हेत्र या थी 'ते 'हेत् 'ते 'क्र्यामावमा या मात्र या या श्री 'र्से या श्री '

म्ब्रम्था में मिं निष्ठित्य स्थानिय स

इन्य ग्राच्यायायेन्द्रन्तः वे स्रोध्ययः व्यन्तः विग्रा स्रोध्ययः विन्द्रन्तः विग्राच्यायः स्रोतः स्राप्ति विग्रा

श्चे द्वा श्चे वा श्चे वा श्चे वा श्चे वा श्वे वा श्व

हिन्द्रप्रस्थान्य स्थान्य विषय । स्थित स्थान्य स्थान्

बेद्रमः धेवः है।

"धुःण्चुरःसेन् सर्यर्गाश्वर्ण्या र्थ्यं म्यान् स्वेन् स्वेन् स्वान्यः स्वेन् स्वेन स्वेन् स्वेन स्वेन् स्व

ने त्युः स्राधित् स्य स्टिष्णाः वित्र द्याया ग्रीत् त्याः होत् । स्याधीः स्या

"इस्रायम्भेर्यान्द्रस्थित्त्र्वान्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्यान्यान्त्र्यान्त्रस्थित्त्रः विस्त्रम्यान्त्रस्य विद्यान्त्रहेत्रः सदिः द्वृत्यः श्रीरायह्वाः सःवादः भेतः विद्यान्तः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः मिंदि इस मिंदि हो मिंदि हो से मिंद हो से मिंदि हो से मिंद हो से मिंदि हो से मिंद है से मिंद हो से मिंद हो से मिंद हो से मिंद है से मिंद है से मिंद है से मिंद हो से मिंद है से

देश'व'क्य'पर'भेश'पर्य'त्रेव'श्चेश'श्चर'येद्र'प्य'य्य'त्रेत्र्यात्र्य'श्चे प्रश्नात्र्येद'श्चर'श्चे'र्र्य'प्रश्चात्र्यंत्रेत्र'श्चेत्र'श्चेत्र'श्चेत्र'श्चेत्र'श्चेत्र'श्चेत्र'श्चेत्र'श्चे पर'श्चे'श्चेश्चे

शेश्रंशाउँ शतीः श्रुवार्से माधिवायो स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्व

"सुर स्था ग्रार ही में या ग्री में तर मा प्रेर स्था भी भी या पा प्रेर से प्र सर्द्ध र या पर में स्था में स्था

सक्दियानियान्त्रेयान्त्रह्यास्त्रह्यास्त्रह्यान्त्रम्यान्त्रम्याः सक्दियान्त्रम्यान्त्रियान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्या

ग्राच्यायायार्थे ग्रायायाये स्वार्थे स

विश्वाशुर्यासंदेश्चिरः द्वि। क्रिंश्यास्त्रात्वाश्वराध्यास्तरः स्वाश्वराध्यास्तरः स्वाश्वर्यास्तरः स्वाश्वर्यस्तरः स्वाश्वर्यस्तरः स्वाश्वर्यस्तरः स्वाश्वर्यस्तरः स्वाश्वर्यस्तरः स्वाश्वर्यस्तरः स्वाश्वर्यस्तरः स्वाश्वर्यस्वर्यस्तरः स्वाश्वर्यस्तरः स्वाश्वर्यस्यस्तरः स्वाश्वर्यस्तरः स्वाश्वर्यस्तरः स्वाश्वर्यस्यस्तरः स्वाश्वर्यस्यस्यस्यस्तरः स्वाश्वर

इन्य यदेवत्यक्षेत्रः देशस्य प्रत्येत्य स्थान्य स्थान्

यदेवःगिष्ठेशःशिःदेशःयःवदेःद्याःयत्वेयाःयरःवश्चरःद्याः देशः "यत्वेयाःवशःशःवश्चरःद्याः । विवेःश्चरःवेःवाः यादःयोःश्चरःश्वरःयाववःद्यदः द्यायःयरःश्चेःवश्चरःद्याः । विवेःश्चरःवेःवाः यादःयोःश्चरःश्वरःयाववःद्यदः इशःशुःश्चयःयःव्यवःदःश्वरःवगयाःयःदेवःश्चरः । श्चिदःश्चेःद्यःयःवःदेवःश्चेदः यरःवश्चरःद्याः

> इन्त ने धेरने क्षेत्रेरेस्याम्यान्स्यान्त्र्या। ने किन्या क्षेत्रायहेषा हेत् क्षेत्रारेषा ग्रा

বাপ্তম'বা

यर ग्रम्यानेवारायाया सेस्रारं सात्रात्रीस्यात्रात्रीत्यात्रात्रीत्यात्रात्रीत्या

धुःर्रेषःसेन्'मदे'सेसस्य स्थान् वास्त्रम्य महेत्। वास्त्रम्य स्थान् स्थान्य स

55:31

म्री दिया से दारि से समार्थ सार् प्राम्य म्यान स्थान स्थान स्थान है सा

इट-र्नेव-र्-ख्ट-मीश-नश्रव-मा रेगाश-मश्रव-मर्ने। इट-र्ने

इटर्नेवर्रुख्टाचीयानस्वायायादिया

न्देश ग्री नें बन्दा ने प्यतः नवे स्थितः मान्य प्यतः महिं। नवें।

55.51

न्देशःशिः देवःवी

मायाने प्यत्यान द्वारि सर्वि देवाने प्रमान निष्म निष्म निष्म निष्म निष्म निष्म निष्म निष्म स्वार्थ मही स्वार्थ निष्म निष्म स्वार्थ स्वीर स्वार्थ निष्म निष्म स्वार्थ स्वीर स्वार्थ स्वीर स्वार्थ निष्म स्वार्थ स्वीर स्वार्थ स्वीर स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्

"ने त्या खु आ ने त्ये वा त्या अँ वा आ न्य ते हो हो ने त्या खु आ ने ते त्ये ते त्ये वा आ ने त्ये हो हो ने त्या खु आ ने त्ये ते हो ने त्या खु आ ने त्ये ते त्ये ते त्ये त्या के त्ये ते त्या हो ने त्या हो ने त्या के त

"अर्रे पर्ने प्यर प्रोरिका राउद हिन् प्रवे हिन परि हिन प्रामा

इन्या सर्ने है नार यस है दिय हूर पें र से द्या

शेसरादी श्रु केंग्रारा श्रूट में विशागश्रूट शाया

"नेविन्नों रश्यान के विने धीव है।"

म्या याञ्चयार्थायः भेतः हुः ते । याञ्चयार्थायः मेत्रः हिन्।।

इन् वा विकास

गुम्मः म्हारायमः देशः भेताः भित्रः भेताः भेताः

इन्या वर्ने हें हें दें स्वाय क्ष्य क्ष्य

धुःर्रेयःसेन्यरःसेस्रश्रं त्रेयः स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थानः स्यानः स्थानः स्थानः

"ने स्वराधी रें या स्वराना विष्ठा ने स्वराधी से स्वराध

বাইশ্বা

ने 'यइ 'नवे सर्ने मान्न 'यद 'इट 'र्ने न दु न सून पाने।

"भ्रे:र्रयःसूरःनर्धेन्सेन्ने। विश्वःश्वायःग्रेशःभ्रेःरयःसेन्सरः

श्रेश्वराद्धाः विवार्षित् प्रमानश्रुव पा "इटार्नेव प्रीव पा प्रमाद विवा हु सा अव

इन्त्र इस्तर्ने स्थेत्र पर्ने स्थानिक प्यत्ते॥ इन्त्रें क्षेत्र तुर्वे स्थानिक प्यत्ते स्थानिक प्यत्ते स्थानिक प्यत्ते स्थानिक प्यत्ते स्थानिक प्यत्ते स्थानिक

"क्रायाने क्षुत्रे अर्ने क्षेत्रे प्रायम् वित्र क्षेत्र क्षेत्र अर्ने क्षेत्र क्षेत्र

ने त्या अर्ने ने स्गुन नहमा अर्स्य ने अळ व के ने प्या अर्ने ने स्गुन नहमा अर्स्य प्या नित्र प्रा नित्र प्र नित्र प्रा नित्र प्र नित्र प्रा नित्र प्र नित्र प्रा नित्र प्र नित्र प्र नित्र प्र नित्र प्र नित्र प्रा नित्र प्र नित्र प्र नित्र प्र

यःविगावे गवि ग्रुन य भेव दे।

सर्ने ने स्यावित नियम् प्रियम् यात्र स्यावित स्यम् यात्र स्यावित स्यम् यात्र स्यावित स्यम् यात्र स्यम् स्यम् यात्र स्यम् यात्र स्यम् यात्र स्यम् स्यम् यात्र स्यम् स्यम्यम् स्यम् स्यम्यम् स्यम् स्यम् स्यम्यम् स्यम् स्यम्यम् स्यम् स्यम् स्यम्यम् स्यम् स्यम् स्यम् स्यम् स

णट्यार्ट् न्यः स्वेत्राविष्ट्यः स्वायः स्वेत्राव्यः स्वेत्राव्यः स्वेत्राव्यः स्वायः स्वेत्राव्यः स्वायः स्वेत्राव्यः स्वायः स्वयः स्वायः स्वयः स्वयः स्वयः

यम्बर्धाः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विषयः विष्यः विष्यः विषयः विष्यः विषयः वि

ख्रामा प्रदेश सूर निभूत परि देव के ता की मा इट देव द्वा वि मी देर्यामी मार्येय क्यापि हेमा इस देव दर्या वि हेमा देश देव द्रायमेया नःक्ष्रम्भे से सहर्दे । प्रदेष्यः प्यम् सम्मिन्ने नामान्यस्य र्वा वे प्रयाभाभाषे दारी भाषादे गावाय भाषा हुना या भाषा अवसः व्या विवासः गठेग', हु' नक्क्षुन'रा'यश'र्वे 'त्रा'यर' द्वे दिस'त्रा'त्रा क्षेत्र' र्शे । भ्रूपाः संपश्या शुः शुः देया से दाय र से स्र संस्था है या स्टाय है ता से स गुनःसरःनभूनःसःइरःर्देनःदुःखरःगीशःगशयःनरःग्रेदःसन्ती यरःगरः यानेवारायरा "हे सुर्वर्यं वर्षाया । सुर्यं सुर्वः सुर्वा वार्वेरः नःसून् । सरसः क्रुसः ने निवेदः सेससः उदःया । सेससः उसः नः परः नः ह्रमाशुरमा ।" वेशपायदीधिवाहे वदायार्शे सेंग्या सुवासे रामा दे सुवा मनिवर्त्राक्षेत्रकार्यसार् मासुरसामाधराङ्गेवामये स्टासुनामा ग्रीप्तर वीर्यासेर स्त्री वार्या स्त्रीत नामा स्त्रीय स्त्रीय स्त्रीय स्त्री स्त्रीय स्त्रीय स्त्रीय स्त्रीय स्त्रीय स् खरम्भः सन्दरमें तन्त्रः भेरास्या

हे सूर वर पं वेश श्रें ग्रां शुः अह् ग्रां मुः वर्षेया पायश "रे प्ववेदः

तुः नर्डे अः श्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य

त्रोयःमःष्य "श्रेस्रशः च्यान्यः मश्रूरशः मः इरः द्वाः प्रेस्यः प्रः चे स्वेतः चे स्वेतः प्रः चे स्वेतः च स्वेत

ने साहे 'सूरावद्दारा ले सार्थी मार्थी साथ स्थान स्यान स्थान स्थान

"क्वां क्वां के के दार्थ का क्षेत्र क

नेदेः यव न्। "ने सूर नसूव य ने सु है सविव य सेव य सा सु से गरा ग्री निर्माद्र से तर् "बेरा पळ द सार्वा मार त्या द्रों र राष्य मारा स्वारी न्वीर्यायावि वे सेंद्रिन हेन न्दर सक्त सेन न्दर सेंद्र सेन वे कें या ग्री निद्या बेद्रमर्दे ।दे.व्यद्वेद्रश्चर्याम्बद्धर्यासदेर्द्वेष्यास्त्रे हीस्यस्स्रस्य नन्नाः भेन् प्रयादिनायायाञ्चरान्ता सुः भ्रेनाया हेन् नन्ना हुः भ्रानाया सर्वित्यम् विवायः इसस्य न्मा क्रिं ने देवे देवे देवे द्वारा विवाय विवाय स्वायः ॲंट्र-पर्-प्रश्नुत्र-प्रशन्दि त्याद्र-प्रश्नुर-प्रश्नित्र अस्ति । जुद्र-श्रेस्र शामी श नन्गाः हुः लेवः सर्वः श्चः नरः माशुर्यः हेः श्वरः वेवः श्वरः मा बुरः वः शुः श्वेनायः য়ৢ৾৾৽য়ৼয়৽ড়৽ঀ৾৾য়৽য়৽ৼৼৼৼয়য়য়য়ৣ৽৾ৼ৽য়৾ঀয়৽য়ৼ৽ঀ৾য়৽য়ৼ৽য়৾৽য়ৢ৽য়৾য়৽৾ৼ৾য়৽ वै। । श्वाद्यानिवायान्येयायार्वे दान्ने द्वारा श्वाद्यात्र । श्वाद्यात्र । श्वाद्यात्र । श्वाद्यात्र । श्वाद्य क्षेत्रायाः ग्री मन्त्राप्तराह्यन् स्वराधिन स्वर

यमःगविवः तुः चलितः वेवः यशः विषे मः अशि

इस्रामाने १२ मुद्दे स्मिन् दे १५ दि १५ द्रामा स्मानिय । स्मानिय ।

"खुर्दिश" वेश्वायवीयात्र विराधश्य शावहायि स्मिन्दि हैन प्रतियात्र हैं नामित स्मिन्द्र स्मिन्द्र

नेश्व इत्या "इट र्हेन् छेट र खट खट श्वा वाश्व वर होट "हेश प्रिय का वाश्व क

वै:हे:क्ष्र-विद्या वेश्वाय विद्या । गुवाय वि:इट:हेंब:हु:क्ष्रेंव: यं वे:ह्या यहतः श्रेंद्र: वे:ह्या यहतः वि:ह्या यहतः वि

यद्यानेवाश्वर्याद्या "ने निवेद्यानेवाश्वर्यते श्रीद्या गुद्रावादे । स्याप्तरं भे स्याप्तरं स्थारं स्यारं स्थारं स

रेग्रयाययात्रभूतायात्री

"न्दे नेपार्यायार्था सेस्यायां सुन्यायाः इन्दे न्यायायाः वर्यायाः स्वर्यायाः स्वर्यायाः स्वर्यायाः स्वर्यायाः स्वर्यायाः स्वर्यायाः स्वर्यायाः स्वरं स्वर्यायाः स्वरं स

इत्य नेश्चां अद्यं नेश्वां या स्वयं विश्वां विश्वां स्वयं केश्वां स्वयं स्वयं केश्वां स्वयं स्ययं स्वयं स्ययं स्वयं स्वयं

देश्यानश्चित्रम्थान्यम् । स्वाप्तान्यम् स्वयः क्षेत्रः स्वयः स्वय

अह्र भारे निवास निवास के स्ट्री।"
अह्र भारे निवास निवास के स्ट्री।"
अह्र भारे निवास निवास के स्ट्री।"

इत्य विश्वास्त्रित्वं विश्वास्त्रात्वे । यदे स्त्र्या के श्वास्त्र स्त्र स्त्

ने निर्देशन व्यास्त्रित्ते क्षेत्र निर्देश के निर्देश

ग्वराग्रीशास्त्राच्यात्रस्रम्यारास्याग्रीशाहेग्रास्या

धुःर्रेशः सेट्राय्य्यात्रः प्रत्यात्रः प्रत्यात्रः प्रत्यात्रः स्त्रः स

বাইশ্বা

अर्दिः इट देश शुः देव हिंग्या अधिः वन या न सून पाने।

> इत्या ने स्वर्धित यो खें कु अ ले अ श्वर हो। अर्ने यादाने केन अपना ने विषय अपना ने विषय इत ने ने ये अपना स्वर हे या अपना स्वर श्वर हो। केंन् केन ने विषय अपना स्वर हे या अपना स्वर्धित स्वर्धा

स्राम्यन्तिः ने स्राप्तिः मि दिन् में स्राप्ति स्राप्ति

इन। क्रॅन्देन देव देव ने या देव ने या सम् श्रीया।

য়र्ने'ग्नार'য়য়'ग्नार'য়ग्ना'त्र'ळॅয়'য়र'য়ेवेत'য়ৢয়'য়ूँर'য়'য়ेत्'য়ৢ र्नेव'उव'हे'त्रेंस'য়ु'য়्र्डेत्'য়য়'য়ेत्'য়য়'য়য়' য়ৢয়ড়ीग

ने ख्रिस्पार हिर्देश हिला है ज्या है ज्या विका निर्मा के स्वार्थ है स्वार्थ

यद्भेत्र विकान्त्र विकान्

क्रेन्स्य । वियान्य वियान्य

नेते ही र प्यहेगा हेत ही । प्रमाय स्थान स्थित स्थान स

न्द्रभः भें जिन्ने जिन्न निन्न निन्

त्रुप्तः स्वात्रः स्

"ध्रिंगश्रासंभाविगाने निर्देन्। स्वास्त्री" विश्वासनि निर्वादशायोयः यश्रास्त्री क्षेत्राम्य स्वास्त्राम्य स्वास्त्रीयः यश्रास्त्री प्रदेश विश्वास स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्व

"न्येर्त्र श्रुव्य दे विषा य नर्श्व ष्राया यहे हेद वही वा वा विषा यर नन्ग्रायायाधेताने क्रियाने विष्याने विष्या से न्या से धॅरश्रासुन्य मःधेरिने सेर निवेद र्ग्युर हुः सः निवास मिरे हिरे में। दे नविव : र् : र र नविव : या ने या खुया या ग्या । या वव : र य र या ग्या या ये : रे र : बेन्-निवन्नुगुव्यक्ष्यम्याध्यक्षित्रहे। इन्ने यथा "स्ट-निवन्न्र वे नर्डे अ से द ५८ । । पावद य दें अ य से ५ य थे द । " वे अ पासु र अ य अ ग्ने अ'ख़्ग्र्य्य अ'ग्रे'र्ने 'हे न्दे 'तु अ'स' ठद' अ'धे द'सदे 'त्रे <u>न</u>्दे | । न्द्रन नवित्रः भे अर्वेदः नवित्रः भरे हेतः द्रोयः गुरुषः भ उत्राग्नुग्रारा नहुतः दरः वर्रानायायायीयासुरागुर्वानाम्यायाये स्टानिव्यने से स्टार्स क्रुया ग्रीहि क्षात्राम्बन्नारुष्यः स्टेर्न्सून् प्रायायान्ते मानिरुष्यायान्यः न्देर्रुष्यः प्रेत्रः स्टेर्न्स्यः स्टेर्न्स्य बेद्रान्वेद्रानुगुद्रानुग्रान्वार्यायात्रीयात्री द्रेन्त्रान्त्रानुन्नेद्रानुन्नान्त्रा यः उत्रः वः पो भी शः ने शः सः से गः यसः समः निव तः विवा समितः शुसः न्ः

"नेति श्री माने प्रमामें मिन्न में मिन्न में

श्रेश्रश्चायश्चात्वाश्चाविष्णविष्ठःत्वरः या व्याविद्यात्वरः विष्ठः विष्

বাধ্যম'না

गहिरागायमा हो नामायाया

दे'त्य'नद्ग'द्रद्र'यावद'त्यशःश्चे'नदे'क्वंग'ग्ययम्हेशःशुःश्चान्वेदः द्य'न्य'त्रस्थर्थादे त्यद्देश्चार्यदे त्यांत्य्याद्वेद्याद्वेद्यः त्यांत्र्यं द्याः स्वाद्येद्यः व्याद्वेद्यः व कु'द्रद्यः स्वापद्यः व्यावद्यावद्याः स्वापद्याः स्वाप्त्याः स्वाप्त्याः स्वाप्त्याः स्वाप्त्याः स्वाप्त्याः स

सदे निर्मा हेर्र् र्षेर्या में मिर्म हो निर्मे से स्वापन धेत्रप्रदेश्वेम् ज्ञाव्रप्रश्चाराष्ट्रीयम् सेस्रास्त्री व्रेस्यायाहिःसूनः नवित्र: न्दरः यः प्यरः नद्याः नदः यवित्रः यवित्रः योष्ट्रिकः याः यकाः क्रीः नदः दशुदः द्याः ॥ "ने'ल'मार बमा'न्र मन्मामा हे अ'सदे श्रीमा'न्र । न्नर सें ल' र्शेग्राश्चर्याः अप्तान्यः अर्देत् अर्थे न्द्राने या विष्यान्य । अर्देत् अर्थे न्द्राने या विष्याने । क्रॅशन्दा देखरानर्ज्जेगायदेळ्यासेदासन्। क्रॅवासेंदरायदेखायाया ८८.५७७. विश्वश्चात्रीया.सदुःर्श्वेश्वास्तर्दा वार्श्वयाश्चात्रस्त र्ष्या नर्षा न्त्रा क्षेत्राचात्रा राष्ट्री विदाने या सदि क्षेत्रा सदि । तुं नदेः भ्वायाते। केंगायो देव न्त्र्वे स्यायावया त्र्यास्य स्यायाया के रवर्षाम्बद्धान् । प्रत्येषान् । वर्षान्त्रेन् नुः प्रत्यान्त्रेन् । विष्यान् । वर्षेन् । वर्षेन् । वर्षेन् । व वर्रे खेत्र मदे भ्रेर वर्षा खरा हु। हु सरा मार्ट हैं वा विहेश वा वह से द स्यार्श्रेवाश्वाद्येत्वर्त्ते वर्त्त्ये वर्त्त्ये वर्त्त्या विष्या विष्या विष्या विषय विषय विषय विषय विषय विषय र्रमी सन्दर्भन्म केंग्रन्स केंग्राह्म केंग्राह्म संस्था केंग्रिय स गवर,रं.क्रेंस्त्राक्षश्चें,यदुःह्येंस्यावरायशःग्रहःह्येत्। १देवःह्येंस्यर्गः ग्वित रे रे वि त त्य रा ह्ये वर विश्व की खेत राश ह्यर वर्ग ग्वित रे रे व

यश्रुं नानग्वायं दे विं वें उवायं के वादें ने दें दें व

इन्य गहेशयशक्षेत्रम्न प्रत्येत्रम्न प्रत्येत्रम् स्वा गहेशयश्चित्रम् वित्रम् वित्रम् वित्रम् वित्रम् वित्रम् वित्रम्

"में रित्र हे 'क्षेर प्रत्माद्यात्वर 'यश क्षे प्रत्मे में हेत की 'गुव हें न' दिन देव द्या प्रत्म प्यत् की से में या अर्थ 'बे अ प्रकृत पादे प्रतिव हो। पर्देर ' पर महिका गाय अरक्षे प्रतिक की की दिन हो। पर्देर 'बे अर्थ हमा प्रकृत परि हो राज विद हो। 'यह से प्रतिक की स्वाप

इन्य यर्ने ने यहिया हेत यश्येत्र से ने हिन्न् प्याप्त यर्ने न से ति हो। यर हिन्दे र ने स्थाप के हो न यश्येत संस्थित।

यन्यायाववःयाहेशःयाः यशः श्चीः यः यदे विः विद्याः हेवः यशः ग्राटः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्य

म्बद्दार्भः में त्या अदि क्षेष्ट्री न्या प्राप्त क्षेष्ट्र में स्था क्षेष्ट्र में स्था

कुं सेर सर हो नामा माने

"वर्नेर-रेर-वेरिक्र-व्यया हुट-वर-क्षुन क्रुट-वर-घन्य वाद्याने क्रुट-वर-क्षुन कुं त्यर्था त्येत्र त्यं राज्य राज्य रहें राजे व्याप्त प्राप्त वित्र प्राप्त राज्य र मं विमा हु भ्रे नमा भ्रें वादे नमा हु त्यू रावामा मी मादी कु त्यमा भ्रे नर पिर्यास सुर्यास्य सुर्यायायायायाय अपरासंदे हेया संसे दि । ख्र-पङ्गते कु'न'न्ट'नेते पन्न साह्यस्य राष्ट्री हुन'र'न्ट्र सहस्र १९८० । वयायः विवागी शा हो दासरा साम में दि । वद्या ना साम हो । वद्या ना से । ने निवित्र नु मान साम्य स्थानित वा स्थानित स्थ त्रभाषः र्रेगः ५८:५ ही नर्भः यः श्रेग्रथः यः वर्गे ५ : स्र स्थि । देवेः वर्दे वात्र वित्र सम् नुः हो।"

ङ्गा मायाने कुं से दार्य त्र हो निर्मा हो निर्मा क्ष्य निर्मा हो निर्मा निर्मा हो निर

"ण्याने निर्देश में इससा कु सेन मार्चि वर क्षे नर खेले पा त्युर वर वि ने देश के निर्देश में समय न्या के मस्य कर प्राप्त के निर्देश में इससा मन वि कु सेव मायस ग्रम क्षे नम व्युम हे मससा कि माम वर्ष के मम वर्ष के माम व्या के माम वर्ष के माम वर्ष के माम व्या क

णटान्य विनाषास्य या स्वासान स्वस्य श्री स्वासान स्वस्य स्वस्य

इन्त व्यक्षव्युह्रकेट्र, व्हिन्हेन्द्रेन्य स्थित्र क्रास्त्र व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व वक्क स्वन द्वार्ग ने सिंदि क्रास्ट्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व क्षेत्र कें नाया अन्य भाषा प्रत्य भाषा प्रत्य क्षेत्र कें ना क्षेत्र कें नाया के नाया कें नाया कें नाया कें नाया कें नाया कें नाया के नाया के

इत्या यात्राहे त्य्यू त्य कुष्ण अः कूर्त्य स्वाह्य त्य स्वाह्य स्वाहित्य क्षित्र त्य क्षित्र त्य क्षित्र त्य क्षित्र त्य क्षेत्र त्य त्य क्षेत्र त्य त्य क्षेत्र

"ण्याने तर्चे न कुते हें त्यान ने या वित्र ने प्राप्त ने प्

इस्रश्रेष्ठ्व ने द्वस्रश्रेष्ठ विद्या श्रेष्ठ विद्या विद्

"दिःशन्तर्हेन्द्रम्मानुः ह्रेष्ट्री हिन्गुः दिन्नाः हेन्द्रम्भेन्द्रम्भेन्द्रम्भः स्तिः देश्यः स्तिः देशः स्तिः स

श्चेर्यस्व शुंशरु सः वर् "हेशर्याण्यश्चर रतः हु गुनः प्रशःगुरः

इत्या द्वरायाने प्राप्त वा किन्या कि

"श्रायाश्चित्रायि । श्चित्राया । श्चित्राय । श्च

यहिना हेत संस्थायर्गेना सम् होत संदे तु अ शु नत्ना हेत हो।
ने अ होते स्तान वित होत हे अंगा हु स्व संस्था हो हो।
ते भी स्व ने से स्व संदे हेत अर्द्ध स्था शु अ न्तर हेन हो स्व।
नार के यह त्र निव निव हो के स्था संदे होता स्था स्व होता हो स्व।
नार के यह त्र स्व संदे निव संस्था संदे होता स्व संदे से के निव हो।

यहोगाहेत्यार्स्यार्स्यायम्यान् निर्मानेत्याः निर्माहेत्याः स्वानेत्रेत्याः स्वानेत्याः स्वानेत्यः स्वानेत्याः स्वानेत्यः स्वानेत्यः

यदेशके स्टामी ह्याश्राधार प्यामी हैं स्वास्थ्य या प्रमेस वहर या या प्रमुवा चुवे के शामिश के से हिंदा या प्रमेश के विकास के प्रमास के प्

इन्न वहुरन्नि र्माहे सूर्ये रिश्वे से दि सूर्ये प्रियं से स्वार्धित स्वार्थित स्वार्धित स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्य स

यश्चर्यात्रे द्वाद्दे द्वाद्दे द्वाद्दे द्वादे व्याद्दे त्वाद्दे द्वाद्दे द्वादे त्वादे त्वा

"ईवाश्वास्त्रेश्वर्त्तात्वात्तात्त्र्यात्त्रेत्त्र्यात्त्र्वात्त्रः हिन्द्र्यात्त्रः हिन्द्रात्त्रः हिन्द्र्यात्त्रः हिन्द्रः हिन्द्र्यात्त्रः हिन्द्रः हिन्द्र्यात्त्रः हिन्द्रः हिन

त्हिमाःहेत्रःमाल्त्यार्हेम्यार्थेत् संहित्तःहेम्यायायेतः तुयायाः स्वितः न्यायाः स्वितः स्वतः स्वतः

दे निवेत्त्र प्रेन्त्र व्याप्त वित्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र

বাঝুষ্ণ'না

सबदःचिते भे प्राचनाया प्रसः ग्रुचः परे देव दी

"यदेरःश्चर्या दर्स्यार्थः इस्यार्थः विवाय्याः विवायः वि

"वारान्वान्वराष्ट्रवायाः श्रेवाश्चायाः वायाव्याः हिंशः हें न्याः व्यायाव्याः हिंदाः ह

₹7|

म् त्यासार्द्धेशार्त्यन्यान्द्रायाव्यन्त्रात्विश्यायायश्चेत्रात्या। म् त्यासार्द्धेशार्त्यन्यान्द्रायाव्यन्त्रात्विश्यायायश्चेत्रात्या।

क्रुं अळ्द्र याट यो श्रेर द यह या दि या व्या प्रता विद्या प्रिया या प्रश्ने क्रिया या प्रता क्रिया या प्रता क्रिया या प्रता क्रिया या प्रता विद्या विद्या क्रिया या प्रता विद्या क्रिया या प्रता विद्या क्रिया या प्रता विद्या क्रिया या प्रता विद्या व

स्रवतः नविदे हो नानगाना साया हिना सुरायाया के सा

नर्देशःश्चित्तं न्ता नेवित्तं वस्त्रशाने वस्त्रवार्थे। न्तःस्

न्देशःग्रीःनेवःवी

"वायाने निर्देश में इससा महामित्र की साक्षेत्र में भारती वा धित त्या

"र्दे ज्ञान विवापित प्रत्याम प्रत्याम

₹7|

यारायोशःश्चेत्रःक्ष्त्रात्रः स्वर्धः स्वरं स्वरं

नर'वशुर'र्रे॥"

₹7

देशः श्रुभः श्रुः विवाः श्रुः र्वेषाः श्रुः विवाः विवाः श्रुः विवाः विवाः श्रुः विवाः विव

हे स्वराद्वराधे स्वास्त्र स्वास्त्र

वर्रे हेत वर्षेया की सर्रे वस्त्री "सर्मेन परि केत की सावर् होत

इस्रश्निश्वा निर्मित्र निर्मित् निर्मित्र निर्मित्र निर्मित्र निर्मित्र निर्मित्र निर

₹7|

यायाने यानि ख्रानानहेन न सायसाय हुट यानि ख्राना सेट सर दे।। से प्रदूर वे साह्य से सामसामि न साहि स्यासर में र सा कमा। से प्रवार ने स्थान साहि स्थान से स्थान साम या प्राची । सामसामा ने से से ट्रिन मिट एं कुट केट से साम प्रवास प्रदूष्ण मा

यायाने याने स्वाप्तायाने यात्रायाने विष्यात्र स्वाप्तायाने विषयात्र स्वाप्तायाने स्वाप्तायाने स्वाप्तायाने स्व

इन अविश्वान्त्राचे केंद्रिन्देन वित्तत्त्र केंद्र

यात्रश्चान्त्राचे "अन्त्रमान्द्रित् क्रीत् म्हेत् क्रिन्द्रित क्ष्या स्वत्र क्षेत्र क

इन्न हैं नबरहे सम्बद्धत्य स्तुन में हमान्य प्रमान

"हेव प्रजूर गो 'रे 'हेर 'हेंग्र प्राये हैं प्रवर्ग से हैं है स्था सुव प्राये हैं प्रवर्ग से प्राये हैं प्रवर्ग से प्रायं से हैं प्रवर्ग से प्रायं हैं हैं प्रवर्ग हैं प्रवर्ग

इन्न गयाने नहें अइसस्य ने ने नित्र से नित्र

मःसूनःतुः ष्यदः सें या न्या याः है । यति वा। ने 'न्या' सेन् 'सं 'हेन् 'य्यु सः ने 'षे ' श्रेन्। ने 'न्या' स्ट 'यति वा से सं दे 'षेन् 'सं हेन्।।

णयः हे 'दे 'क्ष्रेस्' वा बुवा श्रःश्रें वा श्रःशः द्वा श्रः व्यायस्य स्टा विद्या द्वा व्यायस्य स्टा विद्या विद्या

इत्या वार्यत्यास्य स्वार्थत्य स्वार्थित्य स्वार्य स्वार्य स्वार्थित्य स्वार्य स

"न्यार्य्यास्यास्य स्थान्त्रास्थित्यः स्थान्य स्थान्त्रास्य स्थान्य स

प्राचित्रस्था हेते हो रहित्रमानि सार्येत्रस्य स्थान स्यान स्थान स

"विं तें ह्या त्य ने त्ये निका त्ये

व्या वेशन्त्रः न्द्रः न्द्रः न्द्रः न्त्रः व्या । व्या क्ष्यः व्या श्री द्रा वेशः विश्वा व्या विश्वा व्या विश्व व्या विश्व विष्य विश्व विष

"नेवे श्रेन्वाने दे द्वानिक्ष वर्षेत्र मा द्वानिक्ष वर्षेत्र विष्ठ स्वानिक्ष स्वानिक्

इत्या यायाने से त्यस्त ने निर्मा विस्त प्रमा श्री या स्त्र के त्र स्त्र त्या या स्त्र त्या स्त्र स्त्र त्या स्त्र त्या स्त्र स्

"ण्याने हो त्यस की प्रमानि हो सामानि सामानि हो सामानि ह

सर्वेद्द्रप्तः देर्द्रप्तः विद्यान्त्र विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्या

नेति श्री माने वित्त कित्त नित्त कित्त नित्त किता हो नित्त हो नि

यर्डे अप्युव प्यूव प्यूव प्राण्य प्रति प्रति प्राण्य प्रति प्रति

स्यान्त्राच्या ने प्रविद्याने प्रमानिका क्षेत्र प्रमानिका क्षेत्र

বাইশ্বনা

नेविन्द्रिनम्बुगाने नमूदायादी

हिंद्रिंगुःश्वम्राग्नेश्वम्या देव्यम्यात्र्यम्यस्यस्यस्यस्यस्य हिंद्रिंगुः स्ट्रिय्यस्य हिंद्रियः हिंद्रि

इन्य र्रेजिन्यस्य स्ट्रिया हेन्ये श्री क्रेजिन हेन्द्र सेन्य स्ट्रिया हेन्द्र स्ट्रिया

थॅन्से बन्ने निव्य निर्मेश प्रमे गुवर्ने में।। केन् ग्रीय प्रमेग हेव ने केन् नु या क्रीया।

वेशनश्रुद्दश्यम् प्रदेशम् इस्थान्य स्ट्रिं हिन् श्रेशक्षे न्यः स्ट्रिं स्ट्रि

इत्या ने श्वेर पर्ने श्वर श्वेर प्रश्ने त्या के श्वेर प्रश्ने श्वर श्वेर श्वे

नेवे भ्रिम्प्रेम्भून्या नर्डे अप्यन्य प्रम्थ ग्री अप्टें अप्रस्थ अप्राप्त

श्चीर्र्यास्य अवि विरास्ताय विष्णे अश्ची यार्त्य विषण्य व

र्क्ष्यात्रम्थान्ते। विद्वान्ते स्वान्ते स्वाने स्वान्ते स्वाने स्वान्ते स

यार्ने न्द्र संबेश संवेश के संवेश के स्वार्थ के स्वार्थ स्वार्य स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार

"र्रामिश्रियम्बर्गम्यान्त्रम्य वित्रम्य वित्यम्य वित्रम्य वित्रम्

तुअः श्रेंग्राश्चाने 'हेन्'तुः श्वें 'र्न्न्य' मर्से न्हेन' होन्न्य' होन्ने न्हेन् हो स्वाद्याने स

"नाय हे तु अ साय अँ ना अ सम् ना ना अ सि हे हे त स्तु है न स्ति है न स्तु है न स्त्र है न

नर्द्रभग्राम्यः ने निवेदः तुः दिर्देशः में निविद्यास्य स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स याद्रयास्यः यावि स्थान्दर्देशः में निविद्यास्य स्थान्यः स्थितः संक्षेत्रः तुः सेयासः स्था ॥ ॥ यास्य स्थान्यः स यास्य स्थान्यः स्थान

हेन'य्युट'मी'श्चे'न'हेट्'ग्रेश'सबर'य्द्देन'ग्चे'र्सेना'हेना'

"नायाने हिंद्रश्री अग्नान्द्रणावित्तान्द्रणावितान्द्रणावितान्द्रणावितान्द्रणावितान्द्रणावितान्द्रण

इत्या यद्भिरः श्रुः अदः राद्यः द्वायां विद्याः विद्या

विश्वाद्या इति। विश्वाद्या "च्चेद्रार्थे त्यश्वाद्या विश्वाद्या व

र्श्वेन'न्देन'वर्ने अ'श्चेन'श्चे'न'वाववा'न्वे अ'य'न्ना अवव'नवे' ययासी भ्रे निवे भ्रे रामहेव वया भ्रे नर त्यूर रे वियायन पर्य स्था नङ्गनरायायवदानवे यया से हो न हो न न न से न में वियासन से न <u> न्यायशस्त्रेव के वेया हु नर्ह्हे या वश्राचा की न्व हेया यी दे अपस्त्रया से श</u> र्केट हेन हेन अपने कु अळव सुन अेट अहेन प्रमुट बन सेंदि हैन केंट राकेट्रा शेर् देवर् प्रकर प्रवेश्यवाश्चात्र सेट्रा राखेवाश्वासर हेर्ट्र प्राधेत्र धरम्बेशसराग्रीशस्विषा "ने सूर क्रेन हेन पर्ने पार्ड शाग्री हेन पर्ने पा नन्द्राम् कुःसेद्रायसाङ्गेर्नायार्सम्यान्ति से सेद्रायनदानिमाः अन् डिया अवे अे ह्या भन्ता न्रें अ से न्रम् र्रे अ से म्रोन् रामे के अ से से क्षेत्रःग्रीक्षःग्रुवःसःवःश्रेषाक्षःसरःहेषाःसवदःवहषाक्षःसवेःधुवःषावदःद्याः ग्रम् भे भेर्न्स् लेखानसूत्र प्रदे से मान्य ।

इन्या यह श्री स्ट्रिस्ट

त्ने भूर क्रेन हित्य राज्य विषा हेन प्रते या श्री प्रते प्र

गरा । ने वे क्रेंर म केर र नन्ता । ने वे क्रू र र र मार्ग र मे । । ने वे : न्नुःसदेःषसःधेन्द्र्याः वेसःहेन्द्रुनःधेन्द्रःभेन्द्रिसःन्नेन्त्रीसः व्ययःसर्थः क्रेंदःसरः याशुद्रश्चितः। अर्देः क्षेःसर्थः ग्रदः। यदः वियाः क्रेंद्रःसर्थः भ्रेमान ने साभ्रेमा निष्या भ्रेनिय महामानिय प्रिमाणीया भिर्मेन प्राप्त । यशनार ने क्रेंर यर नभूता । नार विना क्रेंर क्रें र भेश ने नना पेंर पे बा वेशमशुरशर्भे । मुद्रायशभुभारादेमात्रदार्क्षमशर्भे । मञ्जूनपर्मः ज्ञः नः अः श्ले अः विश्वः दिन्दि ने मिरः या विश्वः यश्च यश्च ते । स्रायं विदः श्ले अः सः भ्रेअः हे विश्वः पदिः देवः प्येवः ही। द्यायाः हाः यः हिदः यसः सः श्रू सः वः स्रेवः है। यर ग्रेनिश केंग्राम्थय र इंस्थान सें में अर के दिसे र र र निवर ग्रीयायाञ्जेयायायान्त्रीत्यात्या त्याक्रयायययाउत्याञ्जेयायद्यी विया नसूत्रहे।" वेशःस्राम् अःहेर्ग्येशःस्रामे पर्वेत्रायःस्रामेशः सुरुषः मवेश्चिरःर्रे।।

मानिकः क्षेः स्टानिक् क्षेत्रः स्वे स्वत्वामानिकः स्वर्धः स्वे स्वर्धः स्वरं स्वर

इन्त हैंगाइसस्टिंस सें प्येन्त प्रश्ना हैंगाइस्य निर्मा निर्मा सें हि स्ट्रम सेन् प्रम प्येन्स प्यान होन् हेना। निर्मा सें सेन्य प्रम प्येन्स स्था से प्रश्ना होन् से मा। नुन भीन सेन् प्रम से प्येन्स से प्रम से से प्रश्ना होन् से मा।

ने भूरत्ने निव्हित्ती निविद्दित्ती निव्हित्ती निविद्दित्ती निविद्दित्ति निविदित्ती निविदित्ती निविदित्ती निविदित्ती निविदित्ती निवित

বল্পি:মা

रेग्रास्यान्ध्रन्या ग्रुस्याये त्र्य्या स्ट्रास्या स्ट्रास्य

ळूब्राध्यात्त्र्रीत्राच्याव्यायात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यत्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यत्यात्र्यत्यात्र्यात्र्यत्यात्यात्र्यत्यात्र्यत्यात्यात्र्यत्यात्यात्र्यत्यात्यात्र्यत्या

नक्कुःसःस्यश्यम्। "न्हेंशःक्ष्यश्यस्यविद्वाक्षेशः स्विद्वाक्षः हिंवाःस्यः स्विद्वाक्षः हिंवाःस्यः स्विद्वाक्षः स्विद्वाः स्विद्वाक्षः स्विद्वाः स्विद्वः स्विद्वाः स्

सन्नर्भित्ते के किया स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वापति स्वापति स्वापति स्वापति स्वापति स्वापति स्वापति स्वापति

स्टामी दें स्वेद निवालित की प्रिंत की प्रत्या की प्रत्

ने प्यराहे सूराव बुरावा ने सूराधेन प्रवेष्ण प्राहे त्रिया है प्यते राम्य प्रवेष प्रवेश प्रवे

यश्चात्र्वश्वार्थात्र्वेष्ठ्यात्र्वः व्यव्यात्रः व्यव्यात्यः व्यव्यव्यवयः व्यव्यव्यवयः व्यव्यवयः व्यव्यवयः व्यवयः व्यवयः व्यव

में अत्यार्भें विश्वे भें प्रतिन्व अत्यार्थ में स्वार्थ स्वार

नेति श्वी स्थ्य स्वाप्त प्रिया प्राची स्वाप्त स्वाप्त

रा नम्भन् नर्डे अय्ययन् स्ट्रिन् स्ट्रिन्यः स्ट्रायः स्ट्रिन्यः स

"वस्त्राम्यान्त्र्यात्रे तसूत्र वर्षे माय्या नेत्राम्य प्रति स्मायम् प्रति सम्प्रति स्मायम् प्रति सम्प्रति सम्परति सम्परति सम्प्रति सम्प्रति सम्प्रति सम्प्रति सम्प्रति सम्परति सम्प्रति सम्परति सम्

इन्न व्यक्तियः श्रेम्द

श्रेश्रश्चित्रम्

न्तुः अवे न्यूव्य नर्डे अप्य अपे विं त्रे दे न्यूव्य प्राची अय अप्य उत्र क्षेत्र न्यूव्य प्राची क्षेत्र प्राची

"नाय हे हिंद श्रेशन्स्य स्वाप्त स्वाप्त है हिंद श्रेशन्त स्वाप्त है हिंद श्रेशन्त स्वाप्त स्व

इन् चन्न

म्या मायाने ने ने ने निस्त्र स्याप्तर प्रमा

इन्य रट्यो क्षायाळग्रायट्टे प्रविव है॥ यावव श्रीक्षायायह्यायट्टे यापि हैन।

ग्रामी के के अप्ति के प्राप्ति के प्राप्ति

इन्य देवे धेरल्द्रिं क्याश्वार्य वित्त वित्त स्थान्य वित्त स्थान्त्र । इस्य देवें देवें स्थाने स्था

देशःश्चित्रः स्टःश्चित्रायः व्यव्दित् क्ष्यायः दिश्चित्रः स्वायः व्यक्तः स्वायः व्यव्दः स्वायः व्यवः स्वायः व्यवः स्वायः व्यवः स्वायः व्यवः स्वायः स्वयः स्

द्रवाश्वाद्य के हिंग्या क्ष्य क्ष्य

ठनाः इस्रश्राणः श्रुन्याः स्ट्रेन्यः स्ट्रे

বাইশ্বা

नाट बना नी निर्मा से द दिना साम साम सुना साम सुसा

वर पर्ने न्यो अर्घे न्या स्वर प्रत्या स्वर प्रत्य प्रत्य प्रत्य स्वर प्रत्य स्वर प्रत्य प्रत्य स्वर प्रत्य प्रत्य स्वर प्रत्य प्र

वर पर्ने प्रश्रेश विवास स्वत्वा स्ट प्रतिव श्री श्रा श्री प्रति । प्रवादी स्वाप स्वत्वा स्ट प्रतिव स्वत्वा स्वत्व स्वत्व स्वत्व स्वत्व स्वत्व स्वत्व स्वत्व स्वत्व स्वत्व स्वत्व

"ने स्ट्रम् स्थान निर्मा स्थान स्था

इत्य हें व्यूट्या हैं व्यूट्या

इ'न। हें द'र्श्वर्थः मुंद्रित्वस्थयः संस्थाः सहेनाः र्ह्हेन। र्ह्हेनाः स्वा

"हॅं द्रार्थे स्थान है। दे स्थान स्

ने 'सूर्य अर्थेन न त्य स्वी 'सूर्येन स्वा स्व क्षेत्र स्व क्य क्षेत्र स्व क्षेत्र स्व क्षेत्र स्व क्षेत्र स्व क्षेत्र स्व क्ष

इन्य यर्वाः वे तर्ने त्ये त्युत्यः नु हैं वायः नु यः वया।

"नन्नाक्षे र वेश्वरादे र वे नन्ना हु क्ष न व ने वेश्वराद्ये व स्वरादे के स्वराद के स्वराद

इन्य इत्यत्वेर्यस्थियन्यन्यादे वर्षेषायम् हेन्।

"इयादर्वेरायाधेयानन्गाने ने र्नार्याने ने स्टानिव स्त्रीया स्या

होन्यायया वहेनाः सुन्यात्रे स्थान्त्रे स्था

त्रे क्ष्र वाश्व स्थाय श्वाय श्वाय स्थित स्थाय स्थाय

ग्याने सेव केव पश्चेर ग्या "हे श्चेर श्वर सेंस पहें व र्षेर ग्या है श्चेर हे ज्या है ज्या है व र्षेर श्चेर सेंस पहें व र्षेर श्चेर सेंस पहें व र्षेर सेंस पहें व राषेर सेंस पहें के राषेर से राषेर सेंस से राषेर से र

वमायाने। वर्षिरानवे इत्यक्षे समुद्रामाने सामी वमा प्रवे मुर्गे विना

श्चित्रसेट्राट्रियदे स्वित्रस्य स्वास्त्र स्वास्त्र मान्न स्वित्र स्वित्र स्वास्त्र स

नेश्व क्रिंश क्री प्रत्य क्रिंश क्रि

বাইপ্রমা

नन्ना'न्र'नन्ना'नी'न'मिहेश'र्य'याहेश। वर्तीना'र्यते'र्ख्य'य'महिश

नन्गायर निवेद श्री श्रायुन संनिवाया संस्था द्वा

याल्क् श्रेश्वान्त्रम्थाः सदिः सुदः सँ स्थाः सँ ति स्वान्त्र स्वान्त्रम्य स्वान्त्र स्वान्त्रम्य स्वान्त्र स्वान्त्

55:39

याववरश्चेशः यहमाशः यदेः स्ट्रां यशः में हैश् याववरश्चेशः यहमाशः यदेः स्ट्रां यशः यहिश्

र्चे म्राज्य महित्य प्रम्य स्थाय स्थाय स्था । स्थाय । स्

मुग्राश्राया हिन्दारी

"यहिवा र्क्कें वार्या यह प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त

य:न्रा ही:ज्ञनाय:य:श्रेन्यय:यदे:खन्ययः न्रहें। न्रहें।

म्रम्भ उत्री स्याय महिंद मारी

रे:विगःरी

इत्या बर्धिः ह्या दिश्वा दिश्वा विद्या विद्

बार्या के त्रा के त्र के त्र

श्चनरः छेरः र्रे॥

"ने प्यायव्यक्ष तु स्ता हु वे न्यक्ष त्य स्ता निवित्ते । अत्र का मान्य त्य के त्य के

"नेतिः खं व्यन्ते प्यने प्येत्र है। म्हा मित्र व्यक्ष मित्र के व्यक्ष विष्ट विष्ट व्यक्ष विष्ट विषट विष्ट व

"क्यात्युर्यः सेवाया वेशायां वे त्यायाः प्राप्ताः प्राप्ताः विवायाः विवायः विवायः

भूर्याकाः भूर्याकाः स्वाद्यान्य स्वाद्य स्वा

देविशः क्षेत्राविद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य विद्या विद्यान्य विद

यद्यादि त्री ह्या हु प्यव या स्वित दे दे स्वा त्र स्वा त्र स्वा त्र स्वा त्र स्वा त्र स्वा त्र स्व त्य त्र स्व त्य त्र स्व त्र स्व त्य त्य त्य त्र स्व त्य त्य त्य त्

यर्दे र्याः क्रं अव्यायिः भ्रम्य अवे यार्दे में भ्रे। यदे रार्थे व रित्र प्रें व रित्

यह्नुम्यिक्ष्याप्रक्रम्य विवार्षे। | म्यायिक्ष्य विवार्षे। विवार्

केव दि त्या अव दि त्या के विष्ठ विष

श्रेट श्रें नश्र उदा श्री टा क्या यश्य श्री व्यश्य श्री ट्या दि स्था विषय श्री ट्या प्राप्त विषय श्री व्यश्य श्री प्राप्त विषय श्री व्यश्य श्री प्राप्त विषय श्री विषय श्री व्यश्य श्री व

स्वाप्त स्व स्वाप्त स

ने त्या के वर्गे निर्मा के व्याप्त के वर्गे निर्मा के वर्गे के वर्ये के वर्गे के वर्गे के वर्गे के वर्गे के वर्गे के वर्गे के वर्ग

हे सूर ग्राम्य उद न्या यो य न्या प्रया ह्रम्य पारे निवेद न्

स्या नेतिन्ते। ख्रान्य प्रमायाने विष्या मा

"नन्नानित्रेन्ते। नः इतः बन् छ्तः बन् त्यः नहेन न्यः सुः श्लेनायः उतः क्ययः ग्रेः त्यायः ने विद्यायः विद्यायः

धेव'मर्दे॥"

"नेश्वास्त्रश्चेश्वास्त्रश्चेश्वास्त्रभ्वेत्त्रस्त्रीं स्त्राचित्रस्त्रभ्वेत्त्रस्त्रस्त्रस्त्रभ्वेत्त्रस्त्रस्त्रस्त्रस्त्रस्त्रस्त्रस्तिः

"नन्नाने 'अरम्बा'स'न्ना वर्ष्य स्वित्रेत्ते होन् संसि न्ना वर्ष्य स्वायः स्वित्र स्वि

त्रे त्रवाभागाः विष्ठेवाः श्रुवाधाः प्रमान्तः क्रितः विष्ठाः विष्ठाः

त्योयःसम्। "नन्याःचीः छन् सम् उत्तावन्ति। अप्तान्ति। अप्तानि। अप्तान्ति। अप्

বাইশ্বা

ख्यारुने द्याया य दी।

"अुश्चेग्रारुत्त्व्यस्थराश्ची'ग्विद्राशुग्रारु'रे'यस्य प्राप्ति । "अ्त्रेग्रारुत्ते।"

इन्न र्रेग्न्य व्याप्त स्थान स्थान

श्रीश्वात्रात्रेश्वात्रात्रेश्व स्वात्रात्रेश्व स्वात्रेश्व स्व स्वात्रेश

इना वर्ने वे रूर वहें व हेव नुवर से रेग्र वा

"यरे ने प्रस्विष्ठ भूत भ्रेत भ्रेत भ्रेत प्रस्ति । ह्या अ इस्ति ने स्वर्भ स्व

द्याया । देवाया विषय विषय । देवाया । द

इन वर्ते ते गुर्त हैं न हु स्पर से द से वर्ते द्या

इस्रायदे खुत्य दे नाट बना नी नित्र नाय थे द्वाय है । " व सूत्र र स्थात् । यह सम्बद्धा सम्बद्धा

भूत्राक्षः प्रत्ये प्रेशः चे व्याप्ते क्षः यो व्याप्ते क्षः वर्षे व्याप्ते व्यापते व्यापत

स्रा श्रे न्या स्था निष्य स्था निष्य स्था निष्य स्था स्था निष्य स

क्षेत्राश्चादिशक्षात्रे प्राचित्राचित्राचित्रा हे प्राचित्र

र्रे:र्ने:न्राष्ट्रप्रम्स्स्राण्ययान्यरःनेष्राप्रमः हुर्दे॥"

ने ते 'नन्मा स्टार्से 'यस हैं ते 'च न्त्र 'व ने या ने 'व या से हिं 'यस हैं 'च ने प्र के 'च ने 'च ने के 'च ने 'च '

ने स्वर्ष्य स्वर्ष्य विषया "यन्याने हे यर्षे स्वर्ष्य स्वर्य स्वर्ष्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ये स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वयः स्वर्यः स्वयः स्वर्यः स्वयः स्व

"र्भेव्यावव्यपर्य"

इन्य वह्याहेवर्न्यवह्य ह्या थि हेवर्ण्या। अवर्न्द्रिने नेया अवस्यवस्य विष्णे हेवर्

सुर्ग्भेष्यभर्भेन्द्र्यः व्यक्त्यः व्यक्ति । व्यक्ति ।

"ठे हे मार बना निर्मा निष्ण निर्मा निष्ण निर्मा स्था हो स्था निर्मा निष्ण निष

स्टार्से त्यक्षार्टे में मान्त्र प्रदेश मान्त्र प्रदेश में में स्वर्ध मान्त्र प्रदेश में स्वर्ध मान्त्र प्रदेश में स्वर्ध माने स्वर्ध मान

वर्ते सुरक्षे।"

इत्या यट्ट्यार्ट्ट्रिय्य्य्यात्र्याः स्थाः स्था

"श्रेश्वरा।

"श्रेश्वरा।

"श्रेश्वरा।

"श्रेश्वरान्त्रान्त्रम्न्त्रम्न्त्रम्न्त्रम्न्त्रम्न्त्रम्न्त्रम्न्त्रम्म् स्त्रम्न्त्त्रम्न्त्त्रम्न्त्रम्न्त्त्रम्न्त्त्रम्न्त्रम्न्त्त्त्रम्न्त्रम्न्त्रम्न्त्त्त्रम्न्त्रम्न्त्त्त्रम्न्त्त्त्त्त्त्त्त्त्त्त्त्त्त्त्त्त

ररः श्रेश्रानन्त्राश्रास्त्रः सुरः सें छित्। नित्रा कुः वर्देत्। सात्रावा । सात्रा श्रा

स्राम्भित्वत्वा पुरवर्षेत् स्राप्यावार्षेत् होत् वस्रुवाचा ते स्रूप्यवर्षेत् स्रा

भ्रास्त्राक्ष्यास्त्रः श्रुवा श्रीत्र वित्राच्याः स्त्राक्ष्यः वित्र वि

स्राम्यान्त्र प्राप्त वर्षेत्र प्राप्त वर प्राप्त वर्षेत्र प्राप्त वर्षेत्र प्राप्त वर्षेत्र प्राप्त वर्षेत्र प्राप्त वर्षेत्र प्राप्त वर्य प्राप्त वर्षेत्र प्राप्त वर्य प्राप्त वर्षेत्र प्राप्त वर्षेत्र प्राप्त वर्षेत्र प्राप्त वर्षेत्र प्राप्त वर्य प्राप्त वर प्राप्त वर्य प्राप्त वर प्राप्त वर्य प्राप्त वर्य प्राप्त वर्य प्राप्त वर प्राप्त वर प्राप्त वर्य प्राप्त वर प्राप्त वर प्राप्त वर प्राप्त वर प्राप्त वर प्राप्त वर

नर्रेश श्री त्रित प्राम्य श्री विश्व श्री त्र श्री त्य व्यापा प्रदेश विश्व श्री विश्व श

न्देशभी द्वायायाहेश

स्यायाः स्थायाः स्थायाः स्थायाः स्थायाः स्था स्थायाः स्था

"वर्ने र:ररायी क्षेपार्यादारी"

सुरार्धे त्यश्चार्थ स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्

इन्य विक्रियान्य स्थिते हेत्र तुः स्ट्रिया स्थिते । इन्य विक्रिया स्थित स्थित स्थित । स्थित स्थित । स्थित स्थित

स्रान्त्रगुर्त्तः "विष्ठेषाः यद्याः भ्रेषेः हेत्रः दुः भ्रेषेः दक्षेषाश्रास्तरः वेषि स्राः विष्टाः स्रितः स्रितः

व्यायित्राक्षेत्रः विद्यायाय्यायम् स्ट्रात्यः स्ट्रात्यः स्ट्रात्यः स्ट्रात्यः स्ट्रात्यः स्ट्रात्यः स्ट्रात्य विश्वास्त्रः स्ट्रात्यम् विद्यायाय्यायम् विद्यायाः स्ट्रात्यः स्

इन्। ""प्रिन्ति सेस्यम्बिनायर्नि ।

अदःचगुरःच।षाठेगादीः"श्रेश्रशःगठिगाःगुःशःगद्याःगिःवेशःवर्देदः दे।"

स्तर्याक्षेत्रप्रेत्वाक्षां स्वर्ष्य स्वर्य स्वर्ष्य स्वर्य स्वर्ष्य स्वर्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्ययः स्वयः स

वेशक्षण्यात्रात्र वहन्याय्य स्थाय्य विष्णाः व

हेंगानो प्रवस्तायका ग्रामा "प्रदे स्ट्रमार्वे केंग ग्राम श्रुप्त द्वार

বাইশ্বা

ख्याराने न्याया यात्री

इन्या यायाने स्ट्रास्य यन्याय ने विष्ट्रीय ने ॥

सर नर्भानि निष्ण मा स्थानि स्थानि । स्

म्बारिया में स्टार्स्य स्ट्रास्य स्

यारायो स्वरः त्र श्रे श्रश्यात्र प्रति स्वरः त्र श्रे या श्राण्य श्रे या श्राण्य स्वरः त्र श्रे या श्रे या या श

ने प्यर द्रान्त स्था विष्ण वि

र्भा । "नेते के प्रहेगा हेत हुं। नाता नामा हमा हमा हमा हुं में हिं। निका हुं निका हुं निका हुं निका हुं निका है। निका ह

इन् नन्गानिः ह्यासुः तसुरावितः।

"न्गे:र्श्वर-न्गः श्र-रंगः देन्नः ते स्थर-रं स्थर्नः स्थर-रं स्थर्नः स्थर-रं स्थर्मः स्थर-रं स्थर्मः स्थर-रं स्थर्मः स्थर-रं स्थरः स्थर-रं स्थरः स्थर-रं स्थरः स्थर-रं स्थरः स्थरः स्थरः स्थर-रं स्थरः स्थर

इस.ज.उह्या.यस.हीय.इ.ज्या.स.ट्यूम्।

ग्वित्र'थ्यद्।"

नेतिः श्री मः अवमः तिहेतः श्रीः कनः प्रतिः श्रुः नमः तश्री मानः विनः उनाः गीराः नामः निन्नाः तुः नि श्रीः किनः विनः अवमः तिहेतः श्रीः श्रुः

नर:वर्देर:मधे:मुर:र्दे॥

₹7	शुःदत्रःव	ন্থাস্থ্র	শ্লেদ:উবা	ব্বা:ম	न्धा
	व्हिमाः "	•••••••	***************************************		

देवे हो र श्रु र श्रु र वह मान कर दि श्रु र वह र वह स्थान कर के प्राप्त कर कर के प्राप्त के प्राप्त कर के प्राप्त

इन्या """ वेन्यं सेन्यमने त्वस्य सेन्।

"नेवि के छोन् मार्सि निम्मार्थे निम्मा यमायाप्य प्रमानिक मित्र के निम्मार्थे के निम्म

इ.च। चार्ष्य.क्रीमानमामान्य.का.चार्षय.क्रीमा

र्ने म्हर्रायाया होराया कुर्ने क्ष्या मान्या कुर्ने क्ष्या मान्या कुर्मे क्ष्या मान्या कुर्मे क्ष्या मान्या कुर्मे कुष्या मान्या कुर्मे कुष्या मान्या कुर्मे कुष्या मान्या कुर्मे कुष्या मान्या कुष्या कुष्या मान्या कुष्या कुष्य

বাইপ্রমা

श्चितःश्चितःयो त्यवः द्यायाः यः वे।

"नायाने अत्राक्ष्याक्ष्य विष्णान्य विष्णेत्र स्त्रित् । ते विष्णेत्र स्त्रित् । ते विष्णेत्र स्त्रित् । स्त्र

इना ने हेन र कुन व्यन्त के वा ने होन से न स्था

श्रम्बर्गन्धन्छैं कुन्या है स्वर्गन्ति ने विष्ट्र है स्वर्ग स्वर्गन्ति है स्वर्वर्गन्ति है स्वर्गन्

इस्ने प्यश्च ग्रहा "वाया हे प्याया से प्राया विद्या है प्राया से प्राया विद्या है प्राया स्था विद्या है प्राया है प्राय है प्राया है प्राय है प्राया है प्र

इन ने हिरस्र रें न्र सेस्य स्वा

नेतिः श्रेन्यान्याः स्वार्थाः इस्यम्य प्रत्याः स्वार्थाः स्वर्थाः स्वर्याः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्याः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्ये स्वर्याः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्याः स्वर्यः स्वर्याः स्वर

বাইপ্রমা

ने सूर पर्ने न पर से देवा राय है सूर हो न सूर पर है।

"हे भ्रून् न्निन् प्रते से ग्रम्भ प्रतः से प्रतः से स्रम् । स्वतः विगा पुः स्रम् । स्वतः स्वतः विगा पुः स्रम् । स्वतः स्वतः

इना वहिना हेत सबय खूत या श्रें ना श से न हिन दी।

यहेगाहेवः समयः निर्ध्वासंहिनः निर्धितः स्वास्त्रः सम्बद्धाः स्वास्त्रः सम्बद्धाः स्वास्त्रः सम्बद्धाः स्वास्त्रः स्वास्त्यः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त

श्रेन्यश्र्री।

ने त्यः श्रॅम् ने नित्म मि इस म्यास्य श्रॅ । विद्याः हेत ने नित्य स्थाः वस्य स्थाः वस्य स्थाः विद्याः मि स्थाः मि स्थाः

বাঝুঝ'বা

स्रामित्रा हुः श्रुप्ताया मर्दे न हो न माल्य न स्र्य पादी।

"क्रुॅं त'गावत'णर'र्षे र'रे।

इन्य हिन्शिक्यप्रहें स्वन्या सेन्स स्वाप्त हैं से स्वर्थ सेन्स स्वर्थ सेन्स स्वर्थ स्वर्थ सेन्स स्वर्थ स्वर्थ सेन्स स्वर्थ स्वर्थ सेन्स सेन्स स्वर्थ सेन्स सेन्स

"नायाने हिंद् श्री स्वापत्रें स्

न्वीं अय्या स्ट्रिंग्यां या स्ट्रिंग्यां स्ट्रिंग्यं स्ट्रिंग्यं स्ट्रिंग्यं स्ट्रिंग्यं स्ट्रिंग्यां स्ट्रिंग्यं स्ट्रिं

इन्। स्वानन्वाःश्वरः देन्ते के ने धिःश्वर॥ विन्योः सेससः सम्याः श्वरः देन्ते के ने धिःश्वर॥

ब्रियायाष्ट्रसयायरावसूरार्द्र॥

"ठे हो त्यमायन्त्रमायी प्रतिया प्रति हो ने ते है ने ते हो ने ते है ते हो ने ते है ने ते हो ने ते है न

ने'स्परक्षें तेन्याक्षित् वित्राचे वित्राचे के स्वर्ण क

म्या हिंद्रिंग्रे म्यायहें स्यायहें स्

श्चे त्युरने धिर्ने में म्याया से न्धिया

"हिंद्रिशेश्वर्त्त्रस्यावर्धेराम्यावद्यासेद्रास्यावर्षित्रः स्वाद्यासेद्रास्याद्यासेद्रास्याद्यासेद्रास्याद्यासेद्रास्याद्यासेद्रास्याद्यासेद्रास्याद्यासेद्रास्याद्यासेद्रास्याद्यासेद्रास्याद्यास्याद्यासेद्रास्याद्यास्यात्यास्याद्यास्याद्यास्याद्यास्याद्यास्याद्यास्याद्यास्याद्यास्याद्यास्याद्यास्याद्यास्याद्यास्याद्यास्याद्यास्याद्यास्याद्यास्यात्यास्याद्यास्याद्यास्याद्यास्याद्यास्याद्यास्याद्यास्याद्यास्यात्यास्याद्यास्याद्यास्याद्यास्याद्यास्यात्यास्याद्यास्यात्यास्यात्यास्यात्यास्यात्यास्यात्यास्यात्यात्यात्यास्यात्यास्यात्यात्यास

"नेते श्री मा ब्रावाय व्याय व

लर. इ. १ वर्षे १ वर्षे

"ह्नामित्यन्त्रम् सेन्यम् सर्वेन्यम् सर्वेन्यस्य म्व्यास्य स्वास्य स्

বন্ধি:শা

सुर-में नित्रा कुर्यासुरस्य संस्थाय सी द्वीरस्य साम्भित्र साम्य सू

বদ্যাপ্তমে-যাগ্রম্প্রমের্নী। ব্যক্তি

বব্বাদ্ভাষ্ণবাষ্ট্ৰম্মান্তব্যধ্যমান্ত্ৰির ক্রেন্ড্রার্ডার্ডার বিশ্বন্ধ্রমান্ত্রির বিশ্বন্ধ্রমান্ত্র বিশ্বন্ধ্যমান্ত্র বিশ্বন্ধ্রমান্ত্র বিশ্বন্ধর বিশ্বন্ধ্রমান্ত্র বিশ্বন্ধ্রমান্ত্র বিশ্বন্ধ্রমান্ত্র বিশ্বন্ধ্রমান্ত্র বিশ্বন্ধ্রমান্ত্র বিশ্বন্ধ্রমান্ত্র বিশ্বন্ধ্রমান্ত্র বিশ্বন্ধ্রমান্ত্র বিশ্বন্ধর বিশ্বন্ধ্রমান্ত্র বিশ্বন্ধ্রমান্ত্র বিশ্বন্ধ বিশ্বন্ধ্রমান্ত্র বিশ্বন্ধ বিশ্বন্ধ্রমান্ত্র বিশ্বন্ধ্রমান্ত্র বিশ্বন্ধ্রমান্ত্র বিশ্বন্ধ্রমান্ত্র বিশ্বন্ধ বিশ্

खरनी द्वीर्यान्य प्राची श्री व्याप्त स्थान स्था

ख्र-'वी'न्वेन्श्र'र'न्वाया'ग्रु'यार्डेन्'रवे र्श्वेयार्थं त्र स्थाया

"ठे भ्रे किं कें ठमा खर कर अर हो र मा मे के कर अर मोर्के र मा अप्योक्ष स्वर मी ग्राम सुमार्के किं का मन मा कि भ्रें का मो के किं मा मो के किं मा मो के किं मा मो के किं म

ग्राज्याराय्याः सेदः सँग्रायाः सर्दे ग्राव्यः ग्रास्ट्रायः सेट्रा

इन देवे स्टब्स्य अवावन द्या वर्षे ग्राम है।

"अर्ने ने ने सुन में इससायनि ए हें ना साथि ने नि के ले ने नि हैं ने सि ने सि

इन्य वाञ्चवारायन्याः भेषः स्वायाः सर्ने वाष्ट्रम्या स्वायाः स्वायाः

"अर्रे ग्वित यश्रा त्रुग्रा निमा सेत र्हे विश सेंग्रा श्री श

चया स्टार्स इयया च्या क्षेत्र प्रधाया विया स्टार्स स्था स्ट्रिस चया स्ट्रिस च्या स्ट्रिस चया स्ट्रिस चया स्ट्रिस चया स्ट्रिस चया स्ट्रिस चया स्ट्रिस

न्में न्यास्त्रः स्त्राचित्राकृते न्ये ग्यासः धेव के स्थ्रया व

नेते भ्रीत्राच्या स्थान में त्या स्थान स्

"अर्दे निर्ध्यक्ष निर्ध्यक्ष निर्ध्य क्षेत्र क्षेत्र

ব্দার্থানাবেশ্বদ্বাধান্তিদার্দ্বী।"

अर्दे :श्रे :यद :ढुंद :ग्रे :ग्र्नि ग्राय :यद :प्र ग्रे ग्राय :द्र : य अ :दें : र्वे मन्द्रायन्त्र स्ट्रिस्स्रम् यद्यायहीत् स्त्री द्रियामाया स्ट्रिस्स्य स्त्राया वया नन्नाः सुरः में वा नहेव वया नन्नाया या भेरानी वा सूर् ग्री प्राया में या नव्याभार्यसम्भेगामः वयायो निम्यासेन ग्रीप्यहें या सुवासें मास्य स्थान मा रदमी श्रेम में दिया मी स्वायम सम्बद्धि दर्गे दर्भ सम्बर्ध या न द्वीय न दिस् रेग्र भीत्र हे अ वेंग्र पदे यस दस सूर्व पर्ट्य हे या पहेत्र दस केंस ग्रथयः नरः नश्रुवः वया अरयः क्रुयः नर्डे यः ध्रुवः वर्यः ग्रीः द्वेरियः यः विवः *ज़ॖॱ*ख़ॱॸढ़ॆॱॻऻढ़ॸॱॾऺॣॺॴॱॾॖ॓ढ़ॱक़॓ॸॱॸ॔ॱऄॣढ़ॱॸढ़॓ॱॴढ़ॴॸऄॱॸढ़॓ॱॸढ़ॸॱॸॕढ़ऀॱॸढ़॓ॸॱ मः बुद्रःब्रॅटः सः धेदः मः पदिः इस्र सः येवासः मरः च-१८ मः यः प्रवटः मरः ग्रीसः न्वेग

বাইশ্যা

वर्त्ते। "भूतःभ्रेत्राराधे स्वर्धाः स्वर्धः स्वरं स्

रे रे त्र अ निष्ठ में त्र अव के विष्ठ क

सुर में नित्रा में बिश निर्दे र सदे हैं। सुर में इसस छी हैं निर्म नित्रा में नित्रा में

"न्येन्द्रः भिन्द्रस्य स्वाधान्त्रः विष्या विष्यः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विषयः

इन्य अर्गेव सेव प्रत्यानयस न्यर में हिन ग्राम सेव॥ ने सेन सेम ने सेंग्राम साधिव में॥

या छिन् भूम्य "र्केष्म्र म्याम् न्याने सर्वे व स्व व स

र्रे हिन् ग्रम् अव हो। कें नाया प्रयाप्त कें हो। " ने सुन स्वि कें नाया प्रयाप्त कें नाया

यद्याः अर्वे द्रायः अर्वे । विष्यः अर्थः अर्थः अर्थः अर्थः अर्थः । विषयः विषयः अर्थः अर्थः । विषयः अर्थः । विषयः । वि

বাপ্তাম'ন'।

ने न्या यावव श्री हैंन या श्रम्य दी

"केश्वे क्वां श्राम् के क्वां श्राम क्वां श्री स्था क्वां क्वां श्री स्था क्वां क्व

इन्न ने के ने प्राप्त प्रमार्के म्यान्य स्था। विराह हेन प्रमुक्त विराह न्या सर्द्ध म्या।

सुर्-सॅवे कें वाश्वायन्त्र वा कुर्ने त्या है वि कें कि राह है वे प्यवायवा की कें वाश्वाय है वाश्वाय वा कें वाश्वाय है वाश्वाय वा कें वाश्वाय है वाश्वय ह

अळ्डम्अयम्यम्भ्रत्माध्यम् । "नन्ना हे अञ्चान नन्न । वित्र क्षेत्र वित्र वित

বাইপ্রমা

सर्ने प्राविव त्यान्ते विश्व स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्

इन्य अर्दे त्ययः स्ट्रास्ट्रिं यहेत्वयः धीतः माश्रुरयः या। दे श्रिमः स्ट्रास्ट्रिं यह्या यह या। या धीत्।। यर्ने त्ययः सुदः से र्केन् यायः यायः यहेतः तयः यो यायः यायः यायः वित्रायः यायः वित्रायः यायः वित्रायः यायः वित्रायः वित्रायः यायः वित्रायः वित्राय

"ग्रान्तेग्यानेहें वस्यान्य निष्याने निष्यान्य निष्यात्य निष्यान्य निष्यान्य निष्यात्य निष्यात्

नायाने सर्ने त्या स्तुरार्मे किंगायामा नहेत्र त्या वेया मार्युर्या वेया या स्तुरार्मे किंगायामा नामा स्वा क्रिया स्तुरार्मे किंगायामा स्वा क्रिया स्तुरार्मे क्रिया स्तुरार्मे किंगायामा स्तुरार्मे किंगायामा स्तुरार्मे किंगायामा स्तुरार्मे किंगायामा स्तुरार्मे क्रिया स्तुर्वे स्तुरार्मे क्रिया स्तुरा

त्वे संभित्र प्रे निर्मित स्वा है स्व संभित्र प्राच है से स्व संभित्र स्व संभित्य स्व संभित्र स्व संभित्य स्व संभित्र स्व संभित्य स्व संभित्र स्व संभित्र स्व संभित्र स्व संभित्य स्व संभित्र स्व संभित्य स्व संभित्य स्व संभित्य स्व संभित्य स्व संभित्य स्व संभ

वर्देन'ख्यार्राणेत'यर्रा विच'यर्रामें न हैं 'व्य'न्याव'यः हुने 'पर्वा नुस'यायः र्शेयार्राप्त हस्र राग्नेरारा हेन हें 'वे'ना

বাঝুষ্যমা

"ठे-श्रेप्तयर विष्याश्चित्रायाः स्वित्रायाः स्वित्रायः स्वत्रायाः स्वित्रायः स्वत्रायः स्वत

इत्या रश्चित्रश्रावित्राचे त्या स्था प्रश्नित्रा श्चित्र । प्रश्नित्र । स्था प्रश्नित्य । स्था प्रश्नित्र । स्था प्रत्य । स्था प्

"शेशशरुव्यक्ति मुन्योग्या व्यव्यक्षाया श्री या श्री स्थाया स्याया स्थाया स्थाय

श्रेय।न् न्याक्षेत्र न्याक्षेत्र व्यक्ष्य स्थित्। वित्रायात्रे त्याक्षेत्र न्यत्याक्षेत्र व्यक्ष्य स्थित्। श्रेय।न् न्याक्षेत्र न्यत्याक्षेत्र व्यक्ष्य स्थित्।

न्श्चित्रशाने 'वे 'या श्वयाश्चारु वित् 'या 'थे न् 'या दे या श्वर 'वे 'या श्वयाश्चार 'वित् 'या 'वित 'या 'वित् 'या 'वित

इन। गराधेराने नगायान् वेनशार्थना साधित।

বন্ধিয়া

स्र में कें ग्रायाय मान्य मान

र्श्चेतः "गव्य प्यरः" विन्ने

इन्य जेवर्से स्टाहेस्लेव याडेया सेया अन्दिश क्षेत्रा

"वित्राहि निर्मित्राहि निर्मित्राहि निर्मित्राहि है निर्मित्राहि निर्

इन देन्द्रन्थरा होत्र में निष्ठमा हेत् वसूत्रा

इ.ने.जश्रामा "वायानेसेटाने से प्रवा वितामार्थे प्रता व

इन्न वेन्निंसेन्यश्रिन्सूस्रिंधेन्स्य स्थिन्यन्धिन्देन्सेन्स्यश्रिन्स्य

इस्ने'यश्राण्या "ने'निव्वद्रिन्यसे नेश्वस्त्रम् । यश्चन्द्रिन्यसे न्याया विश्वस्त्रम् । यश्चन्यस्त्रम् । यश्चन्यस्त्रम्यस्त्रम् । यश्चन्यस्त्रम् । यश्चन्यस्त्रम्यस्त्रम् । यश्चन्यस्त्रम् । यश्चन्यस्त्रम् । यश्चन्यस्त्रम् । यश्चन्यस्त्रम् । यश्चन्यस्त्रम् । यश्चन्यस्त्रम्यस्त्रम् । यश्चन्यस्त्रम्यस्यस्यस

न्र्स्थास्य विष्ण्यास्य क्ष्या विष्ण्यास्य क्ष्या क्ष्या

ण्याने खु निवे क्रें व क्री श्राप्त श्री श्री त्र प्रें त्र क्रें त्र क्र क्रें त्र क्रें क्रें त्र क्र क्रें त्र क्रें त्र क्रें त्र क्रें त्र क्रें त्र क्रें क्रें क्रें क्रें त्र क्रें क्रें क्रें त्र क्रें क्रें क्रें क्रें क्र क्रें क्रें क्रें त्र क्रें क्रें क्रें क्रें क्रें क्रें क्रें

न्हें न'स'से'स्याय सें।

इन्ने यश्याम् "ने सूर्येव यश्याव्य स्थित् । ने वे हेर येव हैन'ग्रम्'भेवा । नन्या'वे हे नम्'येव'भेन'भेवा । सेन'स'हैन'न्दरने स' देश। ।"वेशन्तर्याकेन्तरायेवन्यायश्रादेनीं मन्द्रायन्ता हेन्तरायेवः महिन्यन्यासेवामान्या वन्यादे हे वस्येवामाव इत्याय हे श्रामासेन मदर भेव मान्या निष्या ने भेर मा प्या भेर मेर मा सुर राजी । "ने दे ध्रेरानेन्यार्थितेन्यरायमायमायाराधिन्यासेन्द्री। यारार्देन्य्यायार्स्ट्रेन्या क्षेत्रः श्रीः सर्वेत्रः स्राचेत्रः स्राचेत्रः स्रोत्रः स्रोत्ता स्राच्याः स्राचः स्राच्याः स्राचः स्र यमःश्चेत्रःयः प्यदः प्येतः ने । विश्वः नहेंदः यदेः स्रोतेः त्रे ने । यश्चेतः से निष्यः से । से निष्यः से । नविदाग्रीशः ग्रुनः यानापाः यमः विशायमः ग्रुदे। नहेदः दशः मान्याशः यमः ग्रुः नः इः ऋदः ग्रीः व्यवः व्यवाः पुः श्रुद्रः यः व्यवः वर्गावाः वे विश्वः श्रुः वदः वे विश्वः यदः श्रीः ब्रिया" ने भ्रम् न् प्याना "अन्या प्यान्य प्रमान् । इस स्थान्य विष्य प्रमान । विष्य नर्भेन्द्रस्थास्त्रस्यर्द्र्नुन्यःषर्स्स्त्रस्यर्द्र्नेन्द्र् । विश्वःक्तः ळेर:पाशुरशःश्री॥"

सर्ने मिन्या से निर्मे हिन्यो न्या स्थान व्या स्थान व्या स्थान व्या स्थान स्य

त्रुन्यश्चान्त्रात्त्र्यः त्रुन्यः श्वायः व्यायः विष्ययः व्यायः विष्ययः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः वि

स्र में श्रेष्य श्रेष्ठ्य श्रेष्ठ प्र प्र स्त्रेष्ठ प्र स्त्र स्त्रेष्ठ प्र स्त्रेष्ठ प्र स्त्रेष्ठ प्र स्त्रेष्ठ प्र स्त्र स्त्रेष्ठ प्र स्त्र स्त

इत्या गराधिर ध्रुत स्थान्त्र न्या है स्था छ स्था हुत स्थाने स्थान स्थान

कुः अळंद्र नार नी भ्रेर श्रुत प्रशास्त्र भ्राय श्रुश अह्य प्रिर स्त्री प्रशास्त्र भ्राय स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स

प्रसम्प्रत्या श्रूतिः त्राण्यात्र व्याप्त व्यापत व्यापत

इन्न निनेन्द्रम्था नेनिन्द्रम्था निनेन्द्रम्था निनेन्द्रम्य निनेन्द्रम्था निनेन्द्रम्य निनेन्द्रम्था निनेन्द्रम्था निनेन्द्रम्था निनेन्द्रम्य निनेन्द्रम्था निनेन्द्रम्य निनेन्द्रम्य निनेन्द्रम्य निनेन्द्रम्य निनेन्द्रम्य निने

त्रवादे वे अदे विस्थाय श्रिष्य प्राच्य प्राच्

वनार्क्षते त्रश्चर त्या विस्रक्ष द्वा त्र्र्य क्षेत्र त्या के विस्त क्षेत्र त्या के विस्त क्षेत्र त्या के विस्

धर्गे हेर कु नर्रे नकु नर्रे । ध्रय धर् नु दिर्ग या कु या किया कि या कि

"ने क्ष्र्म्स्य स्वार्धः द्वस्य स्वार्धः द्वस्य स्वार्धः व्याप्त स्वार्धः द्वस्य स्वार्धः व्याप्त स्वार्धः द्वस्य स्वार्धः व्याप्त स्वार्धः स्वर्धः स्वार्धः स्वरं स्वरं

न्भ्रम्भायम् भारत्वे वास्तर्मः निष्ण्यस्य विद्यास्तर्भावे स्वर्यः विद्याः विद

गावन श्री स्याय यहोता से न र न सुन यहो

इन्या नन्याः अन्दिन्य अक्ताः अविः नन्याः श्रीतः विन्याः विन्य

न्ध्रेशःग्रम्प्रित्वेत्रः ब्रेशः श्रुप्तः भीतः तुर्धिकंत्र॥

ह्ना'सदे'नद्मा'ङस'सेद्'सर'सर्घेद्द्रम्'न्या'सेद्द्रम्'न्ये'नद्मा' यह्नेत्रःश्चॅर्न्यर'यहेद्द्रम्'यदे'ह्नेत्रा "स्व्रःद्ध्व'यत्रेय'न'सेद्रम्' यह्नेत्रा'हेव'सदे'द्रमेदे'श्चेर्'व्याम्ययानर'त्तु'नदे'श्चेर'न्वर्'म्।"

यादाः वर्षाः वर

ने त्रिम् श्रुष्य स्वर्णा स्व

म्बर्भायान्याना चेत्रप्रमान्ध्रम् हो। यदे क्षेत्राया क्षेत्रा म्बर्ध्या म्बर्ध्या स्वर्ध्या स्वर्ध्य स्वर्ध्या स्वर्ध्य स्वर्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्य स्वर्ध्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्

हेव:८८:१६व:४:८८:ध्व:४२:ध्वाश:८गाग:४। नगाग:४:इसशःग्री: र्देव:नर्धेसशःहे:नश्रूव:४२॥ ८८:४॥

हेव-५८-१ हेव-४-५८-१३व-४१८-१३ माया-४-१३

ने भूर निवासित में नित्र राज्य विवासित में क्षेत्र मान्ने वा निवासित में नित्र मान्ने वा निवासित में निवासित मान्ने वा निवासित मान्ने मान्ने मान्ने मान्ने वा निवासित मान्ने मान्

इन्त्रा स्ट्रिंस्यन्याः वित्रः स्ट्रिंस्य स

गावन हेर रे सेर रे छेर परी हैंग पर्दे।

न्धेर्यः विष्यः हेत्र व्यवस्या विष्टः न्दः विष्या हे अः देश्यः व्यवस्या विष्टः न्दः विष्यः विष्यः विष्टः विष्यः विष्टः विष्यः विष्टः व

"स्ट्रार्से न्द्राध्व माने न्यून माने स्ट्रिन स्ट्रिन

नन्गानि मा बुमार्याययाने हिन मान्व हिन सेन्।

यन्तान्ते म्त्रुत्ता स्तर्भे स्तर्भे

বাইপ্রমা

नग्रापार्यः इस्राराणीः देवः नर्देस्यारे नियम्वर्याते।

"ग्राञ्चन्रार्थे निर्मायाधिव न्यायान्य निर्मात्ते निर्

ग्राह्मण्यात्रम्यात्रम्यात्रे स्वार्धः यहेग्राष्ट्रमा स्वार्थः स्वार्थः वित्रस्व स्वार्थः वित्रस्व स्वार्थः यहेन् स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्

"नायाने निवासास्य स्वराधिता ने निविद्या ने निवास स्वराधिता" स्वराधिता स्वराधित स्वराधिता स्वराधित स्वराधि

"यहेगास्रवे करे नुर्धे ने न्या के स्वर्धे त्या स्वर्धा स्वर्धा व्या स्वर्धे व स्वर्धे त्या स्वर्ये स्वर्ये स्वर्धे त्या स्वर्धे त्या स्वर्धे त्या स

"हम्ने त्यस्ति विषयम् विषयम्यम् विषयम् विषयम्यम् विषयम् विषयम्यम् विषयम् विषयम् विषयम् विषयम् विषयम् विषयम् विषयम् विषयम् विषयम

इत्य क्षेत्रं यद्या क्षेत्रं त्या क्षेत्रं यद्या क्षेत्रं यद्या क्षेत्रं यद्या क्षेत्रं यद्या क्षेत्रं यद्या क्षेत्रं यद्या व्यव्या यद्या यद्या

इ.या यक्रुश्चर्यात्वारः स्ट्रियः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः स्ट्रियः स्ट्र

यर्डें अपा क्षे प्रत्वेना पात्र ॥ यर्डे अपा दे प्रत्वे प्रत्व

दिन्दिन्त्रोयापित्वयुन्त्यया "हे से से से स्वित्त्र वाद्यान्त्र प्रमा हे स्वित्त्र स्वित्त्र स्वित्त्र स्वित्त " वे सार्वित्याप्त्र स्वित्त्र स्वित्त्र स्वित्त्र स्वित्त्र स्वित्त्र स्वित्त्र स्वित्त्र स्वित्त्र स्वित्त्र हे सार्वित्त्र स्वित्त्र स्वित्त्र स्वित्त्र स्वित्त्र स्वित्त्र स्वित्त्र स्वित्त्र स्वित्त्र स्वित्त्र स्वित्

ने प्यत्रः भ्रम्भ मा भी प्रहेषा भ्रात्रः प्रहेष स्वरं प्रत्रः विश्वरं स्वरं के स्वरं प्रति के स्वरं प्रति के स्वरं प्रति के स्वरं के स्वरं प्रति के स्वरं प्

के. खेट. तह्या के. चट्टा के. व्या के.

याद्याद्यात्र क्षेत्र क्षेत्र

ने छेन न्याव्य न्या व्याप्त स्थाय विश्वास्त्र । स्थाय । स

ब्रियाश्वर्श्वरायार्ह्स्तरान्दा ख्वाशने नवाया मही।

55.51

र्द्धेग्रायः श्रायाः विष्

"५:वे 'वसवास'स'सद'र्से स'नगुर'न'५वा'वी स'नहवास'सवे 'वाद' ववा'इस'सु'र्षे५'सर'झु'न'नसव्यानवे सुरानन्द्राम्"

इना मिडियाने हिन्याबन हिन्हिया थे हिया।

यःश्वीश्वाह्य स्थान्य स्थान्य

र्या के स्थान के स्थ

इन्न """देन्द्रिन्म्बद्दिन्द्रिन्द्रम्यः अःह्रम् ।

वाः अवाश्वान्द्रद्दिन् अन्यान्द्रम्यः अन्यान्द्रस्यः अन्यान्यः अन्यान्द्रस्यः अन्यान्द्य

शुःषरः नः र्येष्यः र्योषः प्रेष्टः प्रेष्टः स्थितः स्थितः

याहेशःया

ख्याराने न्याया यात्री

ग्राम्बग्राह्र्यार्षेत्रतुः क्षुप्राप्ति । प्रमायाः विष्या । विष्या ।

इत्या यारश्चिर्याञ्चयायय्ययः श्रेस्याय्ययः स्ट्रिंस्य स्ट्रिंस्य

षरःनर्हेर्र्नेर्भेर्भरःश्चेष्यूरःर्रे॥

"देवे:धेरःक्षेण्यास्य प्राचित्रःस्य स्था विद्वा विद्वा स्थाःस्य स्य स्थाःस्य स्य स्थाःस्य स्य स्थाःस्य स्य स्थाःस्य स्य स्थाःस्य स्य स्य स्य स्य स्य स्थाःस्य स्य स्य स्थाःस्य स्य स्य स्य स्य स्थाःस्य स्य स्थाः

इत्या यार श्रेम श्रिम श

"ने स्वरक्षित्र के वार्य के प्रत्य के स्वर्य के स्वर्य

महिरान्द्रिं संविद्धेत्ति । प्रमान्त्रिं । प्रमान्त्रिं । प्रमान्त्रिं । प्रमान्त्रिं । प्रमान्त्रिं । प्रमान्य

इत्य हिन्शिः इस्य नेश्वास्त्र प्राण्य स्वाब्द द्वी। भारतेन पा ह्या स्वास्त्र स्वास्त्र प्राण्य स्वास्त्र स्

"नायाने हिंदा शे क्ष्रायान्य है स्थान स्थान है दिन शे क्ष्राय ने स्थान है दिन शे क्ष्राय ने स्थान है दे स्थान है स्था स्थान है स्था

일'지

यन्याः यहेवः वर्षः यहमार्थः यः उद्यः प्रः यव्याः यः प्रे ः प्रः यः यः यः यः यः विष्

न्द्रणास्त्रव्यत्त्रत्त्रः सेद्रायद्रात्त्रः सेत्रः स्त्रः स्त्त

नन्गाः सम्वयः नन्तु नः नुः सेन् ग्याः निहेन् न्याः निमा स्थाः निमा स्थाः निमा स्थाः निमा स्थाः निमा स्थाः निमा स

"ग्रन्गे भ्रेत्रः श्रूत्रः त्र्याः ने श्रूत्रः इस्राध्यः न्ध्रुतः यादः वर्णः इस्राक्षुः विद्यान्यः स्राध्याः

"नेते श्री स्टार प्रहें वा पारे हेव हो निश्च मान हो। ने स्थान स्थान हो। विवाद हो स्थान स्थान हो। व्याप स्थान

"नेति श्वेर रूर वी श्वेर पान प्राप्त वा प्रम्य वा प्रम्

इन्य यहे ते स्ट्रास्य स्थाय महेत य्याय स्थाय स्

सर्गात्रश्रास्त्रः श्रीत्रः श

इत्य निरःहः स्टः प्यवः ययाः यश्याः याववः यहें दः श्रेवा।
याववः श्रेवः श्रं ययदः ययः श्रेवः विदः॥
यवः ययाः यः श्रेवः प्यवः ययाः द्याः देरः श्रेव॥
यद्याः यः श्रेवः प्यवः ययाः द्याः देरः श्रेव॥
यद्याः यः श्रेवः श्रेवः द्ये त्रश्रः श्रेवः हैः यविवः विदः

শৃষ্ঠশ্যা শুম্মেম্বিশ্বের্টিরাক্যঞ্জ্বাম্যার্টিকাক্ত্রক্রাম্যার্কিকা শ্বাম্বাদ্ধিকা

न्हें अर्थे हेव। देवाश्वराने वाववरण पर्शे नहीं। न्हें

न्देशभी देव या महिया

र्वेनश्राप्ति । क्रिंग्स्य पर्ते प्राप्ति । क्रिंग्स्य पर्ते प्राप्ति । क्रिंग्स्य पर्ते प्राप्ति । क्रिंग्स्य पर्ते । क्रिंग्स्य । क्रिंग्स्य पर्ते । क्रिंग्स्य पर

र्केंग्रायानियः हिम्प्येत्रायान्यान्यः दी।

इन्य यात्राने केंग्राया संस्थित हमाया मान्या मान्या साम

श्रेयानुराम्बर्गायाःविराहानेनार्येनायम्

यायाने भीटाहते प्यतायार्के यात्रा संस्था प्रताया स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स

यत्र त्या नी कें ना का प्रमान कें का प्रमान कें ना का प्रमान कें निष्ट कें ना कि प्रमान कें निष्ट कें निष

अन्या नाराष्ट्रीम् व्यवस्थिता उत्रासेन् व्यवस्थिता ।

कुःशळ्तः"नारःमीःधिरःष्यतःत्यमाः उत्रःशेर्दा ष्यतःत्यमाः न्याःग्रहः श्रेरःसः देवेःधिरा"

यत्रः यत्राः क्रम्भः स्त्रेत्रः स्त्रः स्त्

स्टानी खुना श्र ते स्युटा से दि प्या ग्राया है स्वा ना है स्व ना

इन्न """न्त्रीनशर्वसंभित्रहर्रम्यश्यवर्धित्।

"तर्गिःश्चरात्रे निर्म्याः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः मित्रः मित्रः

न्विन्यार्थ्याः निराहरायर्ने नायानायाः दी

इत्य हिन्दिश्चित्रश्यम्थम्ययात्रे से स्ट्रस्थित् श्रुम्। दे त्रिन्दिन्दिन्द्रस्य हिंग्रश्यम् दे त्रिन्दिन्दि। श्रेन्यस्य स्ट्रम्पा त्रिन्द्रस्य स्ट्रम्। ते स्ट्रम्प्य दे स्ट्रिन्स्य स्ट्रम्

"हिंद्रिक्षेत्रस्त्रंभित्रहेरित्यत्त्रं हिंद्रहें।"

"हिंद्रिक्षेत्रस्त्रं भित्रहेरित्यत्त्रं हिंद्रस्त्रं विश्वास्त्रे प्राप्त स्वास्त्रे स्वास्त्र स्वास्त्रे स्वास्त्र स्वास

"हे के हिं न्या याहे या या के प्राया है या या निवास है या निवास ह

इन्न नःक्षणणाने निरः हुन्न स्ति । वसरामें भेजायाया ने निराह हुन्य स्ति मा।

यदी मा बुद यशुर व दो 'यद थेंद 'सेव 'हे॥ दे श्रीर द्रीय शास्त्र श्रीर हर थेंद 'सा धीव॥

"ठे.क्रे.प्यर.ज्.ज.क्र्याक्षण्यत्याच्याच्याच्याक्षण्याः व्याक्षण्याः विव्याक्षण्याः विव्याकष्णिः विष्याकष्णिः विव्याकष्णिः विव्याकष्णिः विव्याकष्णिः विव्याकष्णिः विव्याकष्णिः विव्याकष्णिः विव्याकष्णिः विव्याकष्णिः विव्याकष्णिः व

इत्या गर धेर छिन् ग्रे खें गर्थ स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर

"नायाने किंग्यान वेया ग्रानाने स्थाने स्थान स्यान स्थान स्य

इ.च। वटा हुँ र हुँ र जी हैं वाया स्टा हु र स्था। र हु र या र स्था

यदे प्रदानवे नहना अर्थिन इस्र अते हिंदा क्षेत्र प्रतान के निर्दान क्षेत्र क्ष

इन्न गर्वेन्डिनर्स्सुः क्षेत्रं हेन्द्रेस्त्या

"नार विना हे प्यर संभी त्र मा श्रे हर बर्ग । विर हरे अन्य पर्दे र वेर विर

हर वहेंगा परे न् ही नशर्श क्ष विवा है क्षर वशुर है। शे वशुर हैं।

यदेरायर्स्यार्स्याः अभागविराधित् ग्रीः द्वेश्वाः स्थाः स्था

ব্যন্ত্র শাস্থা

रेग्रयायाने मान्याया हिंदि ।

> इन्न हिन्ग्रेशन्दि है है है सूर पर्देन ने सूर्या भेग्ने व संभी हु त्य नहेव हु श्वर्य वशा वत्रश्राति है स्थाप से निव स्टानिव स्वा

वस्रश्राहित्युर दे क्षे निर्मा के साम की साम

इन्य वर्षेश्वर्त्ते या ब्रुवाश्वर्श्वरायाश्वर्त्ते या वर्ष्यर्थः व्याव्याश्वर्त्ते या व्याव्याश्वर्त्ते या व्याव्याश्वर्त्ते या व्याव्याः स्वाव्याः स्वाव्य

इन्म क्रेन्य सेन्य महिन्य स्था है। सेन्य सेन्य सेन्य सेन्य स्था है। सेन्य सेन्य

বাধ্যম'না

ने सूर्यन्त्र प्रायाविष्य श्री शार्से दाया श्री दाया है।

"यदेन् श्रुश्यान्य मायाने ते निर्देशन हान शर्में निर्देश निर्

श्री अंश्वितः हा निर्माश्चितः स्थान्य स्थान्य

र्हेन्यने त्यान्यस्व नर्हे सासहन समाने त्यत्त ने त्यू मानि न्या ना स्थि ने निष्ठ ने त्या निष्ठ ने त्या त्या ना स्थि ने त्या त्या निष्ठ ने त्या त्या निष्ठ ने त्या त्या निष्ठ ने त्या त्या स्थि ने स्था ने त्या निष्ठ ने त्या स्था ने स्था ने स्था ने स्था ने त्या ने

"र्विःर्वे रुवा यादी सूर न्वि निर्मे रिवे हैं प्राये है सामा दे से प्राये ।

हु न ह मा अ देव दिया प्राप्त न त्व की प्राप्त के की प्राप्त के की प्राप्त की

ने भ्रावयर भीर हायरे वे नित्रम्थ में वायर्के या नित्र समाम नित्र यः सेन्यः यहेवा हेव श्रीः श्रम् केन्या क्वार्यः न्या क्षेत्रः यः यः क्षेत्रायः य ख़ॣॸॱढ़ॸऀॸॱक़ऀॱॸॸॱॺॊॱ୴*ॺॱॺॺऻॱढ़ॺॸॱख़ॕॱऄॕॺऻॺॱॺॱॸहॆक़ॱक़ऄॕॺऻॺ*ॱय़ॱ धेवरमनेवरिष्ट्रेम्"र्थास्यार्थेग्रायाया "हेवरवेषरमेवरिपदिरपर्देश विश्वास्त्रम् निरम्णरम्म विश्वास्त्रम् विश्वास्त्रम् धरावराञ्चरराधिर। विर्धेरवाची ध्रिवारायानी र देवारा विराह र्शेग्राशा विदेशाहेत श्री श्रम्भूत से सुत्र स्वर्म स्वर्म सार्मे साम्या सार्मे साम्या साम्या साम्या साम्या साम्या वर्रे विश्वास्त्र न्यर देश मध्येष स्त्री । विश्वाम्य स्थान्य स्थान्य स्त्री प्रमान्य स्त्री । र्नेत्र नरं यात्र या से पर्दे गाया न्त्र गाया न्ये गाया न्ये प्राप्त स्थान नुदे। सरायायसम्बादविः क्रेनिः सुरानिः निर्मादिः स्टे त्यत् सामेनबादान्यः। त्रूट्येट्र हेशः श्रुप्तर्से हिर्दे।

বন্ধি:খা

भेरामी मासूर ग्री देवामावन पर ग्रीय पर समून पानी

न्तुः स्राप्तिः "र्श्वेषास्राप्ति स्राप्ति माने स्राप्ति स्रापति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति

निरम्हेरे सेर मी । हिर्प्य पात्वत प्राप्य प्रत्य मा स्वर्ष्य प्रत्य स्वर्ष्य प्रत्य स्वर्ष्य स्वर्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्य स्वर्ष्य स्वर्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वयः स्वर्य स्वयः स्

इन्न ने हिन्यम्यम् उत्ते ने क्ष्म्य उत्ता निन्दि होन् होन् से लेखान्य न्यून्। क्रे में इस्य याये व से हिन्द् व्यून।

"न्दार्यायः विनान्यं द्वाराण्यं द्वाराण्यं

र्रे. में मान्त्रास्य स्थित्य स्थित् । वेश ने प्राप्त स्था स्या प्राप्त स्था प्राप्त स्था प्राप्त । विश्व प्राप्त स्था प्राप्त । विश्व प्राप्त स्था प्राप्त । विश्व प्राप्त ।

इन्य वह्याःहेवःच्यायायःसदेःगुवःह्यःयःयक्वाःदेगा

यहेगा हेत त्या म्या यह राष्ट्र राष्ट्

"डेशप्दिन्देन्यात्त्र्यात्रम्य न्यात्त्र्याः । प्रदेन्य स्याप्त्रम्य स्थाप्त्रम्य स्याप्त्रम्य स्थाप्त्रम्य स्थाप्त्रम्य

प्राचित्रःश्चित्रः व्याप्तः व्यापतः व्यापत

হ্বশ্যা

ने भूम नव्या राषा अवम वहित श्री शहिया राष्ट्रा नवे । धें त न्त्र नक्ष्त राषा थ्रा

55:31

नर्रेशःग्रीःनेवादी।

इयायर्चेरामश्राष्ट्रराम्बन्धराम्बन्धरामित्र स्थायर्थः स्थायर्थः स्थायर्थः स्थायर्थः स्थायर्थः स्थायर्थः स्थायर्थः स्थायर्थः स्थायर्थः स्थायं स्थायः स्थायः

इन्न इसन्तुन्धेश्येन्यान्ते हे श्वेन्या विन्देश्येन्यविन्यं स्थाप्ते स्थाप्ते से प्रेन्थे हे न्या देशने हे न प्यवन्यने स्वाप्त ह्याप्त स्थाप्त विन्ने ने वे सुन्य स्वाप्त ह्याप्त स्थाप्त स्थाप्त

"नेति धेर निरह में ति हो राष्ट्री राष्

इन देशने हेन्ययर ने स्वाप्यह्या यश्चर नशा वर्देर देवे सुन मं दे नबिन पर्दे न मर हा।

क्ष्याने सः "ने विष्ठ हेन सः प्यान स्वान हैं राधा सन् विष्ठ हैं ने सः सन् स्वान हैं स्वान स्वान स्वान हैं स्वान स्व

ব্যন্তিশ্বা

ने'म'र्हेन्'मञ्चर'न'वै।

यदेरःश्रूश्या "इयायर्जेरायश्रूरःष्ट्ररःप्रश्रूरःप्रग्र्यःप्रश्रूरःप्रश्रूरःप्रश्रूरःप्रश्रूरःप्रश्रूरःप्रश्रूरःप्रश्रूरःप्रश्रूरःप्रश्रूरःप्रश्रूरःप्रश्यःप्रश्रूरःप्रश्यःप्रश्रूरःप्रश्यःप्रश्रूरःप्रश्रूरःप्रश्रूरःप्रश्यःप्रश्रूरःप्रश्रूरःप्रश्रूरःप्रश्यःप्रश्रूरःप्रश्यःप्रश्यःप्रश्रूरःप्रश्यःप्रश्यःप्रश्यःप्रश्यःप्रश्यःप्रश्यःप्रश्यःप्रश्यःप्रश्यःप्रश्यःप्रश्यःप्रश्यःप

इन्न निरम्पिन्छेन् सेवन्तने पी के।। यव यन उव सेन्ने देश्यव यन गुरसेन्।।

निरम्ग्रस्य विवाधीयार्थित्य हिन्सी निर्वे के प्यवायमा उवार्षे विक्षेत्र के प्यवायमा उवार्षे विक्षेत्र के प्रायम विकास के प्रायम के प्रा

"नायाने ने दार हो से राज्यान ने दे त्या राज्या का स्वार के नि स्व

इन्न निरम्हळेग्न प्यम्यम्थित्र प्रमानित्। र्हे से संप्यम्यम्यम्यम्यम्यम्यम्यम्

"न्येर्यं भीराहाणवाण्या उवरं ये या विवादा स्वार्यं स्थान स्

বাপ্তম:বা

निरःहर्दरन्यामी शक्षुद्र इसस्य दिने देव दुः श्रु र प्रदेश

"हे क्ष्र्रग्रुव हैं न ग्रे निव त्या भी माठन स्य ग्रुव है स्य ग्रुव है न स्य प्र विक्र में स्थ के में में के कि प्र के स्थ के में में के कि प्र के स्थ के में में के कि प्र के स्थ के स

इन्य ने निविव वहिया हेव यायायायाया स्ट्रासी

विस्रक्षः प्रमानितः क्षेत्रः कष्टे क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः कषेत्रः कष्टे क्षेत्रः कष्टे क्षेत्रः कष्टे क्षेत्रः कष्टे कष्टे क्षेत्रः कष्टे क्षेत्रः कष्टे क्षेत्रः कष्टे कष्टे क्षेत्रः कष्टे कष्ट

ने निवित्तः विद्याः हेतः श्राम्याश्चार्यः श्चित्तः श्चित्तः स्थाः स्वतः स्वतः स्थाः स्वतः स्वतः

ने'निव्हेत्'तु'हे'नर'येद'र्यस्प्रिट'र्से'दे'यश'येद'य। नन्ग'यदे'दे' होत्'र्यस्य प्रेद्धां प्रेट्स्य प्रेट्स्य प्रेट्स्य प्रेट्स्य प्रेट्स्य प्रेट्स्य प्रेट्स्य प्रेट्स्य प्रेट्स्य नवि'र्या

महेत्रत्र महामार्था स्थित । प्रमार्थ स्थार स्थार । प्रमार्थ स्थार । प्रमार्थ स्थार स्थार । प्रमार्थ स्थार स्थार स्थार । प्रमार्थ स्थार स्थार स्थार स्थार । प्रमार्थ स्थार । प्रमार्थ स्थार स्था स्थार स

"स्टार्से न्याया यहेव वसायहमासाय यह यह ती यह है यह इसायह स्वाह स्

<u> नृतुःसःनृर्वोदसःसःस्वःग्रस्य</u>ा

धेवर्ते । विश्वान्य स्त्रान्त्र । श्चे प्रदेश विश्वान्य स्त्री। श्चे प्रदेश विश्वान्य स्त्री। श्चे प्रदेश विश्वान्य स्त्री। श्चे प्रदेश विश्वान्य स्त्री।

व्यूट-भूष्

"नन्नायने त्यास्त्रापाने न्यास्त्रीय स्वास्त्रीय स्वा

इन्य " ने हेन्निन्द्र वे मान्य हेन् सेना

इन्न न्देशलॅन्सेन्सेन्सेन्स

মূ'ম'

यात्रयः हेन्या ग्री प्रकेट में व्या ग्री मानिये निया में या निया म

"म्प्रान्त्रम्थार्थ्व स्थायाय तुर्व श्री अप्यर्थ्य या त्र हिष्ण स्थाय त्र स्थाया स्थाया त्र स्थाया स्थाया त्र स्थाया स्थाया त्र स्थाया स्थाया त्र स्थाया त्र स्थाया त्र स्थाया स्थाया त्र स्थाया स्थाया

नक्तुरःर्ग्रेल्यनरःव्युर्न्यने दे निम्पाधिवःविद्या

इत्या यार त्यः ह्याः हुः तर्शेः इस्य स्टर्स्ट्रेषः श्ली स्वार्णः तर्शेषः त्री स्वार्णः तर्शेषः त्री स्वार्णः तर्शेषः त्री स्वार्णः तर्शेषः त्री स्वार्णः तर्शेषः तर्श

"ग्रान्ते। ध्रेन्त्राप्ते। प्रमाप्ते। प्रमाप्ते। प्रमाप्ते। ध्रेन्त्राप्ते। ध्रेन्त्राप्ते। ध्रेन्त्राप्ते। ध्रेन्त्राप्ते। क्ष्याः प्रमाप्ते। ध्रेन्त्राप्ते। क्ष्याः प्रमाप्ते। क्ष्याः प्रमापति। कष्याः प्रमापति। कष्यः प्रमापति। कष्याः प्रमापति।

वर्षित्रः सम्बर्धः द्रियायायायाः स्थाः द्र्यायः स्थाः द्र्याः द्र्यः द्रः द्र्यः द्र्यः द्र्यः द्र्यः द्र्यः द्र्यः द्र्यः द्र्यः द्र्यः द्रः

ব্যন্ত্র মান্য

नन्गानी न रूर निवेद की राजुन र प्रामा र दी।

"धरःहे स्ट्रूरः नद्याः स्टः निष्ठेषः भेदः वः नद्याः यो नः धरः स्टः निष्ठेषः भेदः के त्याः

> इत्या गरक्षिर होत् सें सेत् उत्य श्रास्त सेत् स्था ते हो राजन्या यो जन्या सेत् स्य स्थित सेत्रा ते हो राजन्या त्र प्रत्या यो हिंद से बिहा। इय यहाँ राजने इस स्य से सें या जर यहा राष्ट्र

भेर्न्स्न होत्राची न्यान्य सेन्स्य ह्या ह्या है। यह वा स्यान्य सेन्स्य हो स्थान्य सेन्स्य सेन्स्य हो स्थान्य सेन्स्य सेन्स्य हो स्थान्य सेन्स्य हो स्थान्य सेन्स्य सेन्स्य हो स्थान्य सेन्स्य से

"ग्राञ्चन्यास्य स्वान्य स्वान

বাপ্তম:মা

नन्गान्दर्भेदर्भेदर्भेद्रप्त स्थान्य स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्थाप

तुस्रश्वर्भगर्भग्ना ने प्यापालक की स्ट्रिंग्या के प्रत्यक्ष प्रति के प्रति

नुअःश्रूअःश्रेम्राशःगुःन्देशःशःवाश्रुःनःशि

"हे क्ष्ररावन्तान्ताने के के न्यराये तान्त्राया न्यया का स्थाने निर्देश न्याने के स्थाने स

हान। त्रस्य स्थ्रस्य त्राचे प्रमान्त्रम्य स्थ्रस्य स्थ्रस्य स्थ्रस्य स्थ्रस्य स्थ्रस्य स्थ्रस्य स्थ्रस्य स्थ्र स्य विस्ति स्थ्रस्य स्थ्रस्य

न्सवान्दरववाश्वास्त्रवाहरा विद्योद्दर्गान्दराष्ट्रें विश्वास्तर्भित्र विद्यास्त्र विद्यास्त्य विद्यास्त्र विद्यास्त्य विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्य विद्यास्त विद्यास्य विद्यास्य विद्यास्य विद्यास्त विद्यास्त विद्यास्त विद्य विद्यास्त विद्य

निरम्भवायार्वेत् श्रीम्थायार्थेया निर्णायार्थे त्यित्र स्वर्णे स्वरमेश्री हिर्म्ण स्वरम्भवायार्थेया स्वर्णे स्वरम्भवायार्थेयार्थेयाः स्वर्णे स्वरम्भवायां स्वरम्यां स्वरम्भवायां स्वरम्भवायां स्वरम्भवायां स्वरम्भवायां स्वरम्भवा

इन्न नेनिवनमारन्मार्झेन्य अक्षेप्तियात्रसूर्याने स्थयार्हेम्य स्था

"ने निवेद निर्म्य निर्मे निर्

कुः सळदः "गर्ने श्वेर्य सुनः सदे द्वर्यो दे ति ति ति गहे त्राहे त्राहे ते स्वरं ने प्राहे ते ति ति स्वरं ते स्वरं ने प्राहे ते ति स्वरं ते स्वरं ने स्वरं ते स्वरं त

इत्य त्यत्राः स्वाध्य स्वाध्य

বাইশ্বনা

कु: ५८: त्रव्या श्रादे १५६ मार्से व्याप्त क्षे १ वर्षे

युन्यायायार्थित्र म्या वार्यो श्री स्वर्धित स्वर्य स्

इन्न नियाने के लियान के नियान के नियान

न्याने कुं धियान क्षेत्र प्रमान्त व्यापान क्षेत्र क्ष

इन्य यटायश्यानः विवायकुरानानाट विवायशस्य वाट विवायकुरान र्स्स्या

त्र्युर्ग्न त्रेश्वेषःविषाः नःचारः विषाः भ्रेष्टे । याहेश्वाः यश्वेषः यह त्र्युः यह विषाः याद्राः विषाः प्रात्य्याः यह विषाः विषाः

महिशार्से प्रदे न्वाःश्वर्यात्रस्त्राह्म स्वाः याव्य प्यतः स्वितः यत्र स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्व

इन्न हे हे हिंद् श्रे हु प्षेत्र प्यत्र स्त्र स्त्र हो दे हो है प्रत्य स्त्र स्त्र हो हो है प्रत्य स्त्र स्त्र विस्त्र हो है प्रत्य है हो है प्रत्य स्त्र स

हे हैं हिंद् ग्रे क्ष्र रूट निवेद ग्री अग्रान प्रते "क्रु खे अप्या अग्री हैंद पर भे होद पर देवे होर "व्या अग्रा बे अग्रा न रूट न बेद ग्री अखेद प्रा भेद या क्रु क्रु हिंद दि से प्रते क्रु अळद दे। व्या अग्रा व्या प्रते स्वा

इना """ पर्यश्रायका की सुन्धे सुन्धे राष्ट्र प्रकारकी राष्ट्र स्वराधिया

श्रीशर्षिन् माश्रीत हीं। वित्र श्रिन्शी सुमात ही सुमाधीत वित्र।"

इन्न न्याः श्रीतः द्वीर्या निष्ठाः विष्ठाः विष्ठाः

र्वेषान्यान्यो क्षेत्रान्य क्षेत्र न्या क्ष

"रदःविद्वाश्चित्रःश्चःश्चित्र

इन्

नन्नात्यः श्रुविन्तु स्वित्तु स्वित्ते ना होत्र साधी निर्देश से स्वर्था ग्राम प्येन्।

यदेर्ययोग्यस्थर्वनायदेवस्थर्यः स्ट्राचित्रः स्ट्राचेत्रः स्ट्राचित्रः स्ट्राचेत्रः स्ट्राचित्रः स्ट्राचेत्रः स्ट्राचेत्रः स्ट्राचित्रः स्ट्राच्यः स्ट्राच्यः

বাধ্যম'না

ने या वावन शे केंद्र पा श्रदाया वादिया

कुं प्रत्रश्रम्पायक्षेत्रश्री श्राम्य । प्रत्ये व्याप्त । प्रित्य । प्रत्ये व्याप्त । प्रत्ये व्याप्त । प्रत्य । प्रत्य

८८:स्र्

मुःतत्र्रथः स्टः निव्यम् राष्ट्रे राष्

"यद्देरःकुःवज्ञश्रास्त्रविदःश्चेशःग्रुचःशःयग्वागःश्वेःवदःगुः वि ठेगायदेःश्चदःद्वाःश्वेदःशःश्वेदःशःश्वदःशःश्वदःशःयदःशःविदःशःवेः होदःशःष्यदःशःश्वे । हिःश्वरःवेःद्वाः

इन्य श्वात्त्रीय प्रमायने स्वाहित स्व

र्श्विरश्चे अव प्रतिवादित स्वादि अव प्रति अव प्

"यर्ने स्वर्गाया है। अर्ज स्वर्गाय स्वर्गाय मुक्ता स्वर्गाय स्वर्

विषायह्रवः प्रदेश्चिरः श्रूष्णः ॥ "
विषायह्रवः प्रदेश्चिरः श्रूष्णः ॥ "

इन्य गरकेरे अन्ध्य विरम्स ध्रियायार्थे व स्थायहँ सयाया। ने के विन् ग्रेयायायाया

यद्रात्ती श्री मान के त्या मान के त्या के त्य

বা

"अः ब्रद्दान्य स्क्रीदान अः ब्रद्दान्य स्थळ्ढंद्र अः यः व्यव्य स्वर्त्त स्थित्र स्थित्य स्थित

हाँ न्या व्याप्त क्षेत्र क्षे

"ग्वरण्यान्यो ध्रिम्हिन्दे स्तुव के ध्रित्त मियान हेन्त् प्यान विद्यान के प्राच्या विद्या विद्यान के प्राच्या विद्यान के प्राच्या विद्यान के प्राच्या विद्या विद्

महेशम।

र्ट्या श्रीत्राक्षात्रात्र स्त्रीत्र प्रस्ति स्त्रीत्र प्रस्ति स्त्र स्त्री स्त्र स्त्री स्त्र स्त्री स्त्र स्त्र

८८:स्र्

रटानी सुँगारा तारा शुक्र प्रतिव प्रति । सुनारा प्रवट सुनारा प्रवि ।

त्रुं योशः श्रीयः याविषः श्रीयाशः श्रीयः यद्यीतः याविषः श्रीयः यद्यीतः यद्यात्रः यद्यात्यः यद्यात्रः यद्यात्यः यद्यात्रः यद्यात्रः यद्यात्रः यद्यात्यः यद्यात्यः यद्यात्यः यद्यात्यः यद्यात्रः यद्यात्यः यद्यात्यः यद्यात्यः यद्यात्यः यद्यात

55.51

मः भूतः तुः यावतः र्सुया भः शुतः यद्येतः याप्यभः येतः रहं यः दी।

"वर्रे'ल'न्र्ह्र्न्'सर्ग्रुःह्रे|"

इन्य श्वायविष्यश्याश्वाप्य श्वाय श्वय श्वाय श्व

"शुक् पश्चिक स्था शुक् पश्चिक स्था शुक् प्रश्चिक स्था शुक् पश्चिक स्था शुक् स्था शुक्य

यर्ग्यायम् स्मान्त्र विष्ण्यायम् सम्यान्त्र विष्ण्यायम्यान्त्र विष्ण्याः सम्यान्त्र विष्ण्याः सम्यान्य सम्यान्त्र विष्ण्याः सम्य

मुंग्रायाहेशस्टायविवाग्रीयाग्रायाम्याभ्रायेवायाधिवायसः

यार्नेत्रः श्रे त्राच्यायः पर्नेत् प्रमः त्रुक्ति । त्रे त्रे श्रे मः क्रें त्राच्यायः प्रमः त्रि त्रः त्रे त्र त्राच्यायः प्रमः त्रि त्रः त्रे त्रः त्रः त्रे त्रः त्रः त्रे त्रः त्रः त्रः त्रे त्

हे अत्र प्रेच्या विदेश विद्या विद्या

र्विनामा से न्रायम् स्वास्त्र स्वास

ने त्यासा क्षेत्र स्वारे वितासा वर्षेता सम् क्षेत्र वर्षेत्र में त्वेत्र स्वार्थ कर्षेत्र स्वार्थ क्षेत्र स्वार्थ कर्षेत्र स्वार्थ क्षेत्र स्वार्य स्वार्थ क्षेत्र स्वार्थ क्षेत्र स्वार्य स्वार्थ क्षेत्र स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्थ स्वार्य स्

বাইপ্রমা

रटामी स्मित्रा सुनामान्या येव रहेवा दी।

गावव थर।

म्या हे स्ट्रिम् हिन् ग्रीश्वि अदे न्यीय परिम् या प्रमा है स्ट्रम् हिन् या स्ट्रम् स्ट्रम् या विष्य परिम् स्ट्रम् हिन् या स्ट्रम् स्ट्रम् या विष्य परिम् स्ट्रम् स्ट्रम् या विष्य परिम् स्ट्रम् स्ट्रम् या विष्य परिम् स्ट्रम् स्ट्रम् स्ट्रम् स्ट्रम् या विष्य परिम् स्ट्रम् स

क्षे-स्वाकार्क्षद्वाक्षात्रक्ष्यः स्वाध्यात्रम् । भ्राप्तिकार्क्षद्वाक्षात्रम् स्वाध्यात्रम् । भ्राप्तिकार्क्षद्वाक्षात्रम् स्वाध्यात्रम् स्वाध्यात्रम् ।

इत्य भ्रे.यन्वेत्रत्वेत् नृत्यः स्टा भ्रे.यन्वेत् प्रदेश्यः स्थाः स्याः स्थाः स्थाः

र्वतः। स्टामी म्हार प्रवेत सहे अया स्टाम मुन्य स्टामी स्ट

यक्ष्वाने त्यावे त्रुक्षामार्थे न्याहे श्वामाने निवास है निवास है

वर्दरायेग्राश्वराष्ट्रीश्रा"र्तुःस्रवेरम्रूवःवर्देशावदेराङ्गेर्द्राष्ट्रीराष्ट्रीः

श्चिमःश्चिम्यःश्चिम्यःश्चिम्यःश्चिमःश्चिमः व्याप्त्रःश्चिमःश्चिमःश्चिमः व्याप्त्रःश्चिमःश्चिमः व्याप्त्रःश्चिमः व्याप्त्रःश्चिमः व्याप्त्रःश्चिमः व्याप्त्रःश्चिमः व्याप्त्रःश्चिमः व्याप्त्रःश्चिमः व्याप्त्रःश्चिमः व्याप्त्रःश्चिमः व्याप्त्रःश्चिमः व्याप्त्रः व्याप्त्यः व्याप्त्रः व्याप्त्रः व्याप्त्यः व्या

শ্রীমানা মান্ব্রান্ত্রিমানা মান্ব্রান্ত্রিমানা মান্ত্র্রান্ত্র্রান্ত্র্রান্ত্র্রান্ত্র্রান্ত্র্রান্ত্র্রান্ত্র্রান্ত্র্রান্ত্র্রান্ত্র্রান্ত্র্রান্ত্র্রান্ত্র

इत्या यात्राने स्टायी तश्चित्रायी श्चित्रायान्त्र क्षेत्राया स्ट्रिया यात्र स्ट्

णयः हे : स्टः गो : नश्चु नः ग्रः गि ह्य : ग्रे के स्टः गे : न्रे के : श्रः गे : न्रे के : ग्रं के : ग्रं

इन्न ने निर्मा सेन् ना सेन् ना सेन् ना सेन् ना सेन् ना सेन्।

र्तिः र्वा त्यः र्देव से दः प्रमः धे कदः यः हो धी दः प्रमुदः यः प्रवादः विवाधी वः प्रमः हे विवाधी वः प्रमः

र्टा विविद्या श्री स्वाप्त स्

শৃপ্তম'শ্য

रद्धा स्थान स्यान स्थान स्थान

"ग्वित्रः धर्।"

इन्न द्रिंशः इस्रशं सम्बद्धान्त्र द्रिंगः द्रिंगः स्ट्रिंग्यः द्रिंग्यः स्ट्रिंग्यः स्ट्र

"हे खूर ख़ु अद्दर्ध अया या श्री न श्री या श्री र ते विष्य श्री या श्री र ते विषय श्री या श्री

वर्ष्याचे निर्वे से मुन्या मिन के मान्या हेन वर्षे वा सामे के निर्वे वा सामे निर्

वर्ने व से दे श्री का विवास सम्म मुक्त दि से दे हैं द र स्था से का सम्म की विवास सम्म मुक्त की दि से दे से दे से का सम्म स्थान की से कि से दे से कि से दे से कि स

"ने भुनि ते के अन्ति के अन्ति

इन्म हिंगमो न्द्रमधे इन्म श्रिम हिंद है है वहीर नहें वा होता

नवे'म। यदेर'स'न्यन्पर'मदे'सुद'यद्वेद'सून्यास'नेस'मर'हेर्'स्यंदी

इत्य श्वायत्त्रिवाश्यायार्वे त्रायायार्वे त्रियायार्थे विषयत्त्रियायार्थे विषयत्त्रियाय्याय्ये विषयत्त्रियाय्ये विषयत्त्रियायाय्ये विषयत्त्रियाय्ये विषयत्त्रिये विषयत्ति विष

न्द्रभःस्र-श्चानविः "श्चित्रभाषाः श्वान्य वित्रः वित्रः स्वान्यः स्वान्यः श्चित्रः स्वान्यः स्वान्यः

सर्द्धरम्भः मद्भः त्रम् श्रुवः यद्येवः मान्त्रान्य स्त्रः स्रोत्। स्रूयः मह्रवः माने दिः स्त्रेवः माने स्त्रः मह्रवः माने स्त्रः स्त्रेवः स्त्रेवः स्त्रः स्त्रेवः स्त्रः स्त्रेवः स्त्रः स्त्रेवः स्त्रः स्त्रेवः स्त्रेवः स्त्रः स्त्रेवः स्त

"नष्ट्रद्व नर्डे अः इः ले त्य अ दे : न्याया याव्या : इ अ स्वे : न्याँ अ स्व : न्यां अ

इन्य श्व.इ.व्या.स.व्याय.स्याय.स्याय.स्याय.स्याय

धेवर् र्केष्यान प्यत् प्यत् राधेवर्यम् इस्य प्राच्यस्य उत्र र्वेष्ट्र स्थान्य स्थान्त स्थान स्यान स्थान स

"ने प्याने हिन्दो प्यश्च प्रमुद्द सेवा वेश म्यान स्थान स्थान हो इस नि हो नि स्थान हो स्था

বাপ্তম'না

ने यश्चान मंदे क्रेंद हेट ग्री स्व द्री न न्य मादिश्व

र्श्वर्गा केर् केर् केर् केर् केर्य केर्य

55:31

"क्रॅर्य नित्र्य स्त्रित्र के स्वर्य स्त्रित्र क्रिय्य स्त्रित्र क्रिय्य स्त्रित्र क्रिय्य स्त्रित्र क्रिय्य स्त्रित्र क्रिय्य स्त्र क्रिय स्त्र क्रिय्य स्त्र क्रिय स्त्र क्रिय्य स्त्र क्रिय्य स्त्र क्रिय स्त्र क्र स्त्र क्र स्त्र स्त्

"र्केशः इस्र स्टान् विद्या स्ट्री स्ट्री निर्मा स्ट्री स्

यार वया यहेत सुरा दर्गे या पादे से या शासदे हुस सामा स्था समय प्या

सदिःविश्वास्ताः श्रेष्ट्रित्याः हें द्वार्याः स्वार्थः यो श्रेष्ट्रियाः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः

इन्न ने सूर हूँ न न शुरू थर स्वर् कि न निष्ठ के न निष्ठ स्वर् स्व

ने भूर निवासे द्राया है शर्मे प्रति है निवास स्वास्त्र स्वास्त्र

इत्या स्ट्रिंग्यहेत्। यहात्वायम्प्रत्यश्राहे॥ श्रम्भ्रम्यत्यविम्यम्प्रत्येत्। श्रेम्यस्यविम्यम्यविम्यस्येत्।

न्तर्वत्र क्ष्यः क्ष्यः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विषय

केत्र-तुःष्परः नवेत् सः क्षे नवितः सः धेतः त्री। ते स्वरः त्र स्वरः त्रे नवे नवः वित्रः त्रे नवे नवः वित्रः स्वरः त्रे नवः त्रे स्वरः स्वरः त्रे नवः स्वरः स्वरः त्रे नवः स्वरः स्वरः त्र स्वरः त्रे नवः स्वरः स्वरः त्रे स्वरः स्वरः त्रे स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः त्रे स्वरः स

है अन् न्त्रा "र्ना वर्जेर माल्य प्यर ग्रुर स्थेर से से निर्म के निर्म के

वेशः ब्रॅन्छेन नड्ड नुषान ब्रुव वशा "स्वादर्शे स्वावव प्यमा नर्देशः वित्त देशः वित्त व्या प्रमाय वित्त वित्

विश्वास्त्रम्भराभराष्ट्रीत्राक्षेत्राचि । "क्ष्रित्रमाक्षेत्राचि । स्वित्रमाक्षेत्राच । स्वित्रमाक्षेत्रमाकष्ठित्रमाक्षेत्रमाकष्ठि

देः अदः द्वान्य स्वान्य स्वान

বাইপ্রমা

म्रेज्यस्त्रिक्तम्यस्य विष्या

55.51

र्बेट हेर नड्ड इग हु से न कु अयर न निर्माय नि

वरःश्रॅरःयःहेर्यःयःश्रेत्यःश्रॅवाश्रयःयविःयन्त्रःयःद्राः क्रेत्यःश्रेत्यः हेर्यःयःश्रेवाश्रयःयविःयन्त्रःयःद्राः अवयःयश्रयःयःश्रेत्यःश्रेत्यः श्रेवाश्रयःयविःयन्त्रःयःद्राः क्रेश्रयःश्रेत्यःयःश्रेत्यःश्रेत्यःश्रेत्यःश्रेत्यःश्रेत्यःयःश्रेत्यः

र्ट्स्या वटक्ट्रिट्स् हेट्स केट्स क्या केट्स विकास क्या किया

यद्भिर्यः केर् न्यत्र स्प्रित्यः केर्यः वित्र स्थ्री स्थित स्थ्री स्थ्री स्थ्री स्थ्री स्थ्री स्थ्री स्थ्री स्थ्री स्थ्र

55.51

वरःश्रृदःयःहेदःयन्वदःयःयःयाहेश

न्देशःशिः न्त्रा वरायः स्टानिवाष्यः येवः ख्यानश्रवः पर्दा। न्दः सी

नर्रेशःग्रीःनेवःवै।

श्रेमान्यःश्रॅमश्रम्भः तुमार्ने प्थे।। महामित्र स्थेन स्थेन स्थितः स्था ने से सहस्थितः स्थितः स्था

ने स्वर्भें रायते कुं सळव गारा गी श्वेराव श्रे गार्शे ग्राय है । र्ने वर्ष स्वर्भ हेरा श्वेरा श्वेरा श्वेरा स्वर्भ स्वर्थ स्वर्भ स्वर्येष्य स

¥II

देशक्षक्षव्यक्षित्रक्षक्ष्यक्ष ॥ "द्रिशक्षं वाद्यक्षित्रक्षेत्रक्

वेसः त्रुवा हु वावस्य संस्थित हो । वेस संस्था स्वा स्व संस्था हि स्व संस्था संस्था स्व संस्था संस्था स्व संस्था संस

र्या । क्रिंशः स्थान्य विद्यान्त प्राप्त विद्यान स्थान स्था

वरायारमानविदाप्रशायेदाकुषानमूदायादे।

र्केशकेट्र हेश द्वानायदे प्यट हे बिना प्येत्र । अगाय अँना श्वानायदे द्वानी प्रत्य विद्वा । दे द्वानी प्रत्य प्रत्य विद्वा के ना अगा अँना श्र प्रदे द्वानी प्रकेश अञ्चल प्रत्य । अने द्वानाय के ना अगा अंना श्री प्रत्य । अने प्रत्य के स्वान्य क

"रेग्रार्शःग्रे:तुःर्नेद्रान्यायाद्वे:ने निव्देदानेग्राराः ह्यसा शुराष्ट्रा

त्रः या श्रुद्रः प्यदः स्ट्री यादः यो दिवः तुः श्रुद्रः यो स्य द्रायः स्था स्थाः स्

"रेग्र्याश्चीःतुःग्रायःहेर्न्द्र्यःसःखेन्यःसःख्नुरःदःदे। ळेन्सः धरःश्चेन्द्र्यःसेन्द्र्यःसेन्द्र्यःस्वेन्द्र्यः नेन्द्र्यःसःनेव्यःश्चेन्द्र्यः देवःसेन्द्र्यःस्व्युर्द्शः । ग्रान्द्र्योःश्चेरःनेवःत्र्यःसःनेःखेन्द्र्यःसेन्द्रिःश्चेरःग्चनः कुनःसेस्रयःत्र्यःस्रस्ययःयःनेवःन्द्र्यःसःयःयःस्वयःसःवेशःग्चेन्द्र्यः वेशः वेशःहःग्रस्ययःवरःग्रस्ट्रस्यःस्रा।

यहॅर्न्, सेन्यन्ता ह्यां स्वायास्य स्वायस्य स्वायास्य स्वायस्य स्वयस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वयस्य स्वयस्य

राक्ष्याग्री त्युराग्री द्वेश यहारी त्या क्षेत्र विद्यार त्या । "जुरायर स्वा ॥ अजुरायर स्व ॥ अज

यद्दार्श्व प्रमानिक विकाय विक

मञ्जूर बन् गुर से प्रदेन केरा क्रें तुर नु नर्के सामाधिव मान्या जाववः यार्द्धेश्वायासेन्यते स्टायविवाधार पर्देन्या हिन्दी यव स्व स्व त्यायाय परि न्वीं रश्यास्यासे वाप्या विवास्त्री वरे वित्वीं रश्यास वेषाया हे सेवाप्या सेवास য়য়য়য়ৠৢ৽ৼৼঀ৾৽ৼৼয়৾৽ড়য়ড়ৼঢ়য়৾য়৽য়ৼ৽য়য়ৢৼ৽য়য়ৢয়৽য়৾য়৽য়৾য় ॻऻॿॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॸॱॻऻॸॱऄढ़ॱय़ॱय़ॸॖऀॱढ़ॖॆॸॱऄॻऻॱय़ॱऄॕॻऻॺॱय़ॱॸॖ॓ॱॾॖॺॺॱॻॖऀॱॸॸॱ नविव धिव खुम्ब धिव व दे। रूप नविव दे छिव छ । स्यापी हिं ब गुर सर्दिन शुस्र न् रहेन स्थान स्य यार यो ' श्रेर ' श्रेया' श्रेया श्राहेत ' यहोत्य 'प्येत ' या प्रदे ' स्राय वित 'प्येत ' ख्र्या श्राय धेवन्यनेविष्ठिम् नेनवः नविः नेवन्तविः नेवन्तविः निवन्तविः विवन्तविः विवन्तवि ধ্য-বেক্সু-স্থা"

बेश गशुरशाही स्ट प्रविद प्रगागा पार दे शेगा श्रें गशा गिरा प्रें शेगा श्रें गशा गिरा प्रें शेगा श्रें गशा प्रा श्रें गशा प्र प्रा श्रें गशा प्र श्रें गशा प्र श्रें गशा प्र श्रें प्रश्नें श्रें गश्नें प्रश्नें श्रें गश्नें प्रश्नें प्रश्नें श्रें प्रश्नें श्रें श्

दे तद् निक्ष के दे निक्ष के दे निक्ष के निक्ष क

धैरःहे।"

विश्वास्त्रवाणीः वर्णुम् स्वश्वस्त्र विश्वस्त्र विश्वस्त्र स्वर्णे स्

"ने ख से वा से वा स्व स्व स्व से से वा से

मुन'मर्थ'क्षेर्ह्रा"
सून'मेर्थ'क्षेर्ह्रा"
महिर्याम्

र्श्रेट:हेट:ख्रमाः सम्माश्रुसः नश्रदः रादे।

कुन् ग्रेश्रास्त्र स्वर्धः स्वरं म् ब्रुवाश्रास्त्र स्वरं स्वरं स्वरं म् विवरं में स्वरं स्वरं

यदे 'दर' श्रूमा' स' इस स' त्या सिर्" श्रेर ' श्रुम 'त्र मात्र स्य प्र सिर्म 'त्र सिरम 'त्र सिर्म 'त्र सिरम 'त्र सिर्म 'त

इन्या गहेशक्तरस्य निवासेन हैन है। इन्हेंन सहित से कि से कि से कि से कि

नेशः कुन् ग्रीशः नश्रुशः प्रदे न्वनः हेतः विषाः पः श्रुः तुः ते नेशः कुनः श्रीशः नश्रुशः निरा न्वनः येशः या स्थुशः प्रश्नः श्रीः वनः प्रिशः करः प्रेतः या ने स्रान्तः विषः सेनः प्रेतः विषः स्रीः स्रान्तः स्रीः स्रान्तः स्रीः स्रान्तः स्रीः स्रीः स्रान्तः स्रीः स्र

इन्न केंग्रह्मश्रास्त्र विवासित्र से न्या केंग्रह्म स्था केंग्रह्म स्था केंग्रह्म स्था केंग्रह्म स्था केंग्रह्म स्था केंग्रह्म केंग्रह्म स्था केंग्रहम स्था केंग्रह्म स्था केंग्रह्म स्था केंग्रहम स्था केंग्रह

मु वरमी कें अ इस्र अर्थर नित्र प्राप्त केर स्टर्ग विद्यम् अर्यु न स

य्यान्य क्षेत्र क्षेत

ने स्वराव के स्वराव वि के राष्ट्र के राष्ट्

ने त्थून भी व सम् भारत्ये व स्था त्यून सम् न हिंदा स्था त्यून सम् न हिंदा स्था सम् न सम्य सम् न सम्

त्दीः न्याः यो श्रांते विष्ठ्याः नेति न्याः या नेति । या विष्ठः न्याः न्याः विष्ठः विष्

महेशमा केत्रसंक्षित्रपंहित्यार्श्वम्यायायावीयन्त्रपंहि।

"न्याश्चित्रायिः श्चित्राय्यः श्चित्राय्यः श्चित्रायः श्चित्रयः श्

सेन्यानिव न्या ने क्ष्र क्षेत्र क्षेत्र स्थानिव स्थानिव क्षेत्र सेन्य स्थानिव स्थानिव

इत्या परी न्यान इक्तर श्रीयाश इसश श्रीश्री हिंद संदेत संदेश महिंद स्थान हो। केन से स्थान हिंद संदेश संदेश स्थान हो। केन से संदेश संदर्शन हिंद संदर्शन हिंद संदर्शन हो।

"न्यार्थन्य स्वाराय्य स्वाराय स्वाराय्य स्वाराय्य स्वाराय स्व

इन्न ने ने ने ने ने ने ने स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्य

र्नेव न्या विश्व प्रति विश्व श्री विश्व प्रति विष्व प्रति विश्व प्रति विश्व प्रति विश्व प्रति विश्व प्रति विश्व प

इन्य क्रेव्यायम्ब्रिम्यम्यम्यम्यम् । वर्षात्रम्यम्यम्यम्यम्यम्यम्

> इत्या यार त्यः श्चे त्यावयः श्चे ह्याः हेत्। दे त्याः श्चेत्रः त्याः त्याः श्चेत्रः श्चेतः त्याः श्चेतः श्चेतः श्चेतः हेत्। दे त्ये त्याः श्चेतः श्चेतः हेत्।। दे त्ये त्याः श्चेतः श्चेतः हेत्।।

"र्केश्वान्त्यःश्चेश्वान्त्रःश्चेश्वान्त्रःश्चेश्वान्यः विष्याः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विषयः विषयः विष्यः विषयः विषयः

মহার মার্থ মার্থ

स्त्रा ग्राम्यास्त्रया स्त्रित्से द्वा व्याप्त्रया स्त्रया स्

म्बिन्यारायाः अवरायद्देत् न् नुःश्वरायाये ह्याः क्ष्राः क्ष्राः विश्वरायायः विश्वरायः विश्वर्यः विश्वर्यः

विने के किरावहें के का में स्था "ध्यूर्य के प्राचित्र के

इत्य यटायःश्चेत्यवश्चःश्चः नेत्रायेट्याय्ट्याय्याय्याः नेत्रेत्येथ्यःश्चेट्येट्याः नेत्रेत्र्याय्याय्याय्याः नेत्रेत्र्याय्याय्याय्याः

"र्के अग्वाद्रायाः श्री अग्वाद्राद्रायाः श्री प्रवाद्यात्रायाः श्री अग्वाद्रायाः श्री अग्वाद्रायाः श्री अग्वाद्रायाः श्री अग्वाद्रायाः श्री प्रवाद्रायाः श्री प्रवाद्रायः श्री प्रवाद

स्वतः वे 'ह्या'स' प्रांचा प्रांचा प्रांचा प्रांचा प्रांचा प्रियं या प्रांचा प

ग्रिक्तिम् स्वर्धित् प्रस्ति स्वर्धित स्वर्येष्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्

यदे 'प्यत्र क्रद्र 'तु स्य 'यद्भ 'य

इन्न वर्ते दिन्य प्रिम्से प्रमान्त्री स्थित प्रमान्ति स्थित प्रमानित स्थान प्रमानित स्थित प्रमानित स्थान स्थान

दर्शिर्देर स्टानिव श्री श्राम्य स्टानिव श्री श्री स्ट्री स्ट्री स्ट्री स्ट्री स्ट्री श्री स्ट्री स्

इत्या देर्या विश्वास्त्र स्वाद्या विश्वास्त्र स्वाद्या विश्वास्त्र स्वाद्या स्वाद्य स्वाद स

ने'नेवे'श्चेर'व'र्नेर'येन'या। क्रॅन'य'हेन'डेश'शु'नर'नहेंना।

> इत्या पर्याच्यायाः श्वीयायाः देतिः हेत्। याराध्ये राश्चित्राया नेपायाः इययाः ग्रीया। स्वायाय्या नेपायाः इययाः ग्रीया। स्वायाय्या नेपायाः इययाः ग्रीया। स्वायाः इययाः ग्रीयायाः इययाः ग्रीयाः स्वायाः इययाः ग्रीयायः इययाः ग्रीयायः इययाः ग्रीयाः स्वायाः इययाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वयाः ग्रीयाः स्वयः ग्रीयः स्वयः स्वयः स्वयः ग्रीयः स्वयः स्वयः

यत्रानुर्यायाः स्वायाः स्वय्याः भेट्टा स्वितः हिट्टा स्वायाः स्वय्याः भेट्टा स्वयः स्वयः

त्रं त्र दें त्र त्र े क्रें त्र त्र हें त्र त्र हें त्र हें त्र त्र हें त्र हैं त्र हें त्र हैं ते हैं ह

বন্ধি:শা

र्क्ष्यायययः उत् र्र्ष्ट्रित्यः हेत् द्र्याः या स्टानीः यक्ष्यः हेत् र्र्ष्ट्रित्यः हेत् । स्टानीः यक्ष्यः या स्टानीः या स्टा

55.51

क्रॅश्म्यस्थाउन् स्रूट्स १९७१

इत्य विस्रक्षत्वर्धः यक्कित्त्वर्धः स्थ्याः विद्याः व

क्रें अप्रसम्भारत्ने अपार्श्व प्रमान्ते व्याप्त क्रिया मिस्र क्रिया विश्व क्रिय क्र क्रिय क्र

বাইপ্রমা

रदानी अळव हे दार्श्वेदाय हे दान निवास मार्थिया

सर्देर'नश्रुवा कुरु'नर्दा। इट'र्ने।

सर्नेर नमून दे।

इन्य ग्राच्याश्चर्यःश्चर्याश्चर्याः देन्देन्द्रः सळ्दःश्चरः प्रति।

मञ्जूषायाम्याधिवाधीः नर्मा श्रुप्तान्याका स्थानम् स्यानम् स्थानम् स्यानम् स्थानम् स्थानम् स्थानम् स्थानम्यम् स्थानम् स्थानम् स्थानम्य

मुरुष्यराचन्द्रायायायाया

म्बितिः के स्वाप्ता स्वाप्तीः के स्वाप्ता स्वाप

गविदे केंग दी

"धरम्ब्याश्रायाश्चित्राश्चार्यास्य स्थार्यः म्यायाः स्थार्यः स्थार्यः विष्टित् । स्थार्यः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थार्यः स्थायः स्थायः स्थायः स्थार्य

इन्य ग्रम्थर्भः म्रम्थर्भः स्ट्रम्थर्भः स्ट्रम्

ग्राच्याश्राक्षे ग्राच्याश्रास्त्र प्रति स्वतं स्वतं

इन्न क्रे. अक्टर इयय दे. यह या क्रे. यह या क्रे. यह स्था प्राची क्रे. यह स्था क्रे. यह स्था क्रे. यह स्था क्रे. यह स्था प्राची क्रे. यह स्था क्रे. यह स्था

श्चे अळे द द्वा अविष्ठ अद्या कुषा श्चे या प्राप्त प्राप्त के प्रा

यमाग्री केंगदी

श्चेत्रमदेम्मर्मि, मित्रमदेम्मर्मि, स्थित्मदेभ्यक्ष्यम्भिन्ने स्थित्मः स्थित्मः स्थित्मः स्थितः स्यतः स्थितः स्यतः स्थितः स्थितः

सन्। नरायान्त्रसून्यदेशस्त्रतंत्रेन्रस्त्रा

न्गे'नदे'र्केश'मसस्य उन्सून'मदे'श्चिम्'न्'न्गे'नदे'न्सेग्रास्य संस्था सेस्य हेन्'हेन्'ठ्व'र्के॥ सेस्य हे'ग्रेग्'न्ग्न्य स्थापदे सक्व हेन्'ठ्व'र्के॥ सेस्य न्ये'स्य ग्री'सक्व हेन्द्री

इना नेशन्यक्याशसेन्सक्रमंहिन्द्री।

सळ्य हेर तर्रे प्याधिय प्रमास्य अर्थी। सळ्य हेर प्यते प्रमाधिय प्रमास्य

ने भूरत्य संस्था हु ही वार्या हु वार्या ह्या स्था ही अळव हे न ही स्था विवास स्था है न हो। स्था विवास स्था है न हो।

इत्या यश्रम्भवितः स्थ्यः प्रत्यं स्थितः स्थितः स्था देः प्रतिवः पालवः पारः पाञ्चम्यः सेरः स्था देः प्रयाः प्यतः प्रसिवः प्रायः स्थित्रः। से प्रतिवाशः सक्षवः केरः ठवः दः प्रायः स्था

इत्य श्रम्य श्रम् श्रम्य श्रम श्रम्य श्रम श्रम्य श्

त्रा अपर प्रत्येष स्था के स्थ

इन्य क्रिंट्स हिन्दी। निर्धेया अपना सेन्स अपनि क्रिन्ती

"इस्रायम् वर्षः श्री श्री स्त्री स्त

इन। अक्रवः अभेनः मश्वे छेनः ने॥

"इस्रायम् वम् प्रिये क्षेत्र्यक्ष्य स्थान्य स

इन्य वश्रिम्भवेशस्त्रेशस्त्रम्भवानस्यन्ता

महि स्मासे ५

"क्यानर्धराविःक्ष्म् नाश्च्याराक्ष्म् नाश्च्याराक्ष्म् नाश्च्यार्ध्याः श्चित्रः स्वान्त्रः स्वान्त्यः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त

इन्य क्ष्यं क्षेत्र ह्या क्ष्यं ह्या हिन्द्र ह्या हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र हिन्द इन्या क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं हिन्द्र हि

इस्रायम् वस्यानम् निर्मित्रस्य । श्री स्वर्धानि । स्व

श्रुवा प्रति क्या प्रमः वर्षः प्रत्य स्था प्रति । व्या स्था प्रति स्था प्रमः वर्षः प्रति । व्या सः श्रुवा प्रति स्था प्रति । व्या सः श्रुवा प्रति स्था प्रति । व्या सः श्रुवा प्रति स्था प्रति । व्या से प्रवि स्था से स्था से स्था से प्रवि स्था से स

सर्चेत्र स्थान्त्र स्थान्य स्था विष्य स्थान्य स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान

याह्रवा क्षेत्रश्रह्मश्रश्वेत्रश्रह्मश्राध्या क्षेत्रश्राध्या क्षेत्रश्राध्य क्षेत्रश्राध्य क्षेत्रश्राध्य क्षेत्रश्राध्य क्षेत्रश्राध्य क्षेत्रश्राध्य क्षेत्रश्राध्य क्षेत्रश्राध्य क्षेत्रश्राध्य क्षेत्र क

"तळन् त्युन् श्री क्षेत्र न्य स्वर्ध क्षेत्र स्वर्य स्वर्ध क्षेत्र स्वर्य स्वर्ध क्षेत्र स्वर्ध क्षेत्र स्वर्ध क्षेत्र स्वर्य

इन्य श्रुवायत्रिः भेष्यदेग्ययः मस्ययः दे॥ 338

नेव मुनम्ब मदे में में धेवा।

"नेशन् वस्त्र विद्यान्य से के त्र क्ष्य क

इन्य वर्गे जन्म स्वरं महेर श्रुवाया

तुस्रमार केत में लेग तुर्दे।

दर्शे न इसमायायदान निर्मा के निरम्भून माने । वसमायायदान के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर

श्रवाराहे केत संद

श्वाप्तस्य उत्ती शेस्र उत्तर्मस्य प्रिया स्वाप्त है। श्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त

इन्य """र्यादःयादे। स्यःद्यादेःसळ्यःहेदः""॥

द्यायः यः क्रेवः स्थि स्यः हुः श्लेष्ट्रे या हुः द्यायः यदिः सळवः हिदः ठवः

स्य। यहराष्ट्रिययाची। यापदेशायळ्वाष्ट्रियायाची।

नहरःश्रूष्ठ्राक्षकः केत्राचेत्रा वनायः विनायः हेका शुः कनायः नहा

म्बन्द्रम्याः विद्राविष्ठाः व्यास्य विद्याः । विद्राविष्ठाः विद्राविष्ठाविष्ठाः विद्राविष्ठाः विद्राविष्ठाः विद्राविष्ठाः विद्राविष्याविष्ठाविष्ठाः विद्राविष्ठाः विद्राविष्ठाः विद्राविष्ठाः विद्राव

इत्य अटशः क्रुशः केंश्वः ते श्वः यहेशः या। यहः द्रः यक्तः द्रः यादः यदः द्रः या यदः क्षेत्रः क्षेत्रः देशः यहं याशः या। देः क्षेत्रः क्षेरः यहं याशः यहः विश्वः विश्वः या। देः क्षेत्रः क्षेरः यहं याशः स्टः सळ्तः विद्रा।

श्राम्य श्री के श्री स्पर्ने श्राम्य हुन् न्यक्ति न्यं निर्मा स्थित् । स्थित् स्थित् ।

उराधे ने शर्शें तर्ा वर्शें निरा

यायदेशमधिरोत्राक्षेत्रभि क्षेत्रभि क्ष्रभि म्ह्रम्यस्थान् स्वित्रभि मित्रे मित्रभि मित्र मित्रभि मित्र मित्रभ मित्रभ मित्रभ मित्र मित्रभ मित्

इस्राम् गुद्दासहिद्दाम हिद्दा शिष्य निष्य ही। विश्व हिद्दा स्वर्य हिद्दा स्वर्य स्वर्य हिद्दा स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य

इस्रश्रासर्वेद ग्रेन् ग्रेश म्हण्य म्हण्य ग्रेश म्हण्य ग्रेश महामा महण्य ग्रेश महण्य ग्रे

বাধ্যম:বা

र्नेन्यश्रुपत्रे।

इत्या यार विया पत्रा श्रुष्ठा सळव छेत् त्रा यार पा पत्रा स्वा यार विया पत्रा सळव छेत् यार पा ते पे पे प्रा सळव छेत् स्व प्रा हित्या ते पे प्रा सळव छेत् स्व प्रा हित्या

यार विया पर् श्राच्या ग्री कें शहरा स्वर्था ग्री अर्छ द हिर प्राप्त पर् श्राच्या ग्री कें शहरा महास्था ग्री कें शहरा प्राप्त कें शहरा प्राप्त कें से स्वर्था है पे स्वर्था है स्वर्था है पे स्वर्था है पे स्वर्था है स्वर्य है स्वर्य है स्वर्था है स्

याश्वराया भ्री म्ह्रीयाश्वराया म्हर म्ह्रीया स्थाप स्

> इत्या नःश्वर्यः यदिः श्रेष्याव्यः भिन्।। यन्यः न्नः यद्गः स्वर्यः स्वर्याः स्वर्याः यानः नः ने प्रयाः श्रेष्यः स्वर्याः स्वर्यः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्यः स्व

"न् श्वरः चुन् नियन् राम् विवास यो नियास यो निय

भ्रीत्रम्भाव्यान्यः विश्वाद्याः स्ट्रीतः स्ट्रीतः स्ट्री

> इन्न क्रेन्न व्यथ्य श्रुट् श्रेन्ट्रिंश इस्रथा या। वर्षा प्राप्त क्षेट्रें से से ना। वर्षा प्राप्त के ने किन् ग्रेशा। क्षेट्र केन्ट्रें अपो से ने केन्ट्रें में किन्ट्रें ।

"कुन्नकेत्यश्चा न्देशस्य न्द्रिश्चा न्देशस्य अर्थः वर्षः स्राप्त स्रेश्चा क्ष्रे कुः क्रेत्र वर्षः स्राप्त वर्षः स्रेत्र स्राप्त क्ष्रे कुः क्रेत्र वर्षः स्रेत्र स्राप्त क्ष्रे कुः क्रेत्र क्ष्रे क

वहिषा'स'सेट्'सदे'सेषास'मस'नसूनस'सदे'ध्रेर'र्रे।

महेशमा क्रिंट हेट निवेट हो न कुरायर निव्या है।

इन्ना नर्देशःस्तिः श्रुशः ते स्यर्गः नश्रुशः त्या स्राम्भः स्यश्रान्य स्राम्भः स्रामः स्राम्भः स्रामः स्र

न्रसार्थाक्षेरामान्ने राष्ट्रसान्च याचे प्रस्था स्थाने स्थान स्थान

क्रय्यान्त्र्र्याः प्रेष्ट्रा ने प्यान्त्रं स्यान्त्रः स्यान्त्यः स्यान्त्रः स्यान्त्रः

सुर-सॅ-ख्र-सॅ-दे-इसस्-दे-धि-र्र-पिवेद-श्रीस्-श्रुप्त-स्क्रिंद्र-संक्षेत्र-याद-धिव-स-दे-वेद्दे दिस्स-सॅ-क्रिंद-स-क्षेत्र-स्क्रिंद-स-क्षेत्र-स्क्रिंद-स-क्षेत्र-स्क्रिंद-स-क्षेत्र-स-क्षेत्

> इत्या अर्देर् तस्य अवः विः द्रिश्य सेदः या। वर्ष अः श्रुषः क्षेत्रः क्षेत्रः स्थ्यः व्याः स्ट्री। देशेदः द्रिषः सेदः देशः क्षेत्रः केद्रा। द्रिषः संस्थेदः यः क्षेत्रः केदः देशः

इन्न रूप्तिव्या स्थानिक स्थान

रद्रपित्र विश्व विश्व न्य निर्मा

रदः तिविद्दं ते कि अदिद्या स्ट्रानिद्या स्ट

इन्य अरअ कु अ इस्र अ दे त्यु र नवस्या य चुर प्यर उर रहे अ खु दे॥ रहे अ से गुव के के राम हे ना यवद के रहे अ से र र न ह न कु मुसाया।

स्याः क्रुस्य स्थाः त्री न्तृतः त्रव्याः स्थेः यहिषाः हेतः तुः यन्तृतः प्यतः तृतः। स्याः क्रुत्याः स्थाः त्री स्थाः त्री

यायह्याम्या प्रामेश्वराष्ट्रम्याः अर्क्षेत्राः श्वराप्ते प्रित्ते विष्ट्रम्याः अर्क्षेत्रः श्वराप्ते प्रामेश्व त्राच्याः प्रामेश्वराष्ट्रम्याः त्राप्ते प्रामेश्वराष्ट्रम्याः अर्क्षेत्रः श्वराप्ते प्रामेश्वराप्ते प्रामेश्व व्यवस्थितः प्रामेश्वरा

महिरायाध्यावन ने प्रदेगा हेन सायश्यावन प्रदेगा हेन यश्याप्त श्रायते प्रेशिक्ष स्याप्त पुराया हैना स्याप्त स्था स्थापित स्थाप स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थाप स्थाप स्था

इन्य लट्ट्याः अवयः द्रः ने निवेदः हेन्। देन्यावदः द्रेशः स्त्रः हेन्दे हिन्दे।

याश्वरायाश्वरायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्याय्यायाय्यायाय्यायाय्याय

स्टानिव केंद्रानिक अन्य केंद्रानिक अन्य केंद्रानिक स्टानिव केंद्रानिक केंद्र

ने 'नर्रेश' से दी मानि शाधिव 'स' न्ना' हमा 'ह प्रिंन 'स' न्ना' से 'हें मा प्रे 'ने श' में मानि श' मानि श' में मानि श' मानि श' में मानि श' मानि श'

इन्य नेश्चर्यस्यः र्र्यः द्वेतः द्वंयः यथा। ने न्याने स्नुनः र्यः हुन सुयाया।

ने त्या निर्मानि स्त्रीत्र प्राप्ते स्त्रीत्र प्राप्ते स्त्रीत् स्त्रीत्र प्राप्ते स्त्रीत् स्त्रीत्

मनिया राषे प्रमान्त्र महिन प्राप्त स्थान स्थान

"८न्द्रे निरम्धेद्राया भूगा स्मार्थे स्वर्ध स्वर्य स्वर्य

हत्य देश्वरहीं श्रें अविष्ण हेर ही अविष्ण हेर ही। स्त्री त्या द्या विषण हेर ही। श्रें त्या श्रुं अविषण हेर ही। स्वा केर विष्ण हेर हो केर ही। स्वा अविषण हेर हो से स्व अविषण हैर हो अविषण है।

"श्र-तिन्दित्वस्य स्ति स्थानि स्थानि

"वर्गेन्। सदे दे ने र से द ग्राट वर्गे न क्रेंन पदे न सस्य पदे र न स्था पदे र न स्

इन्य ह्याः हत्यां वायम्यां विषयः यदि यस्य स्वर्धे व स्वर्ये स्वर्धे व स्वर्धे व स्वर्ये व स्वर्ये व स्वर्ये व स्वर्

इत्य गुनः हेन ने हिन्या विया प्यत्य न्या ने सिन्य स्था स्था स्टार्य से सिन्य से ने से सिन्य में ने से सिन्य सिन्य से सिन्य सिन्य से सिन्य सिन्य से सिन्य से सिन्य से सिन्य सि

गुद्राह्म्याक्चि के नदे त्यसा शुः देसा मान्या ने वित्व हेन् बन से दे त्यस

इन न्तुःसःयःवह्याःमःयस् । सेससःनक्षेत्रःमःह्याःमर्दे।

इनामदेगम्बर्गा॥ इनामदेगम्बर्गम्बर्गा॥

नर्गेत्र्राप्याप्या न्तुःस्यायायह्न्यायिः क्रेत्रः त्व्र्न्याय्ये क्रित्यायाय्ये क्रित्याय्ये क्रित्याय्ये क्रित्याय्ये क्रित्याय्ये क्रित्याय्ये क्रित्याय्ये क्रित्ये क्रित्याय्ये क्रित्ये क्रित्य

शेस्रश्चनुत्रम्

गशुस्रामानेटानुःस्टानास्याम्यामानेवान्यानिवा

अन्तर्वर्यन्ता अनक्त्रात्ता अन्त्र्यात्ता अन्त्र्या नन्दर्यो न्दर्यो

यान्त्रामानी

इत्य द्रित्रं श्रीत्रायात्ते स्वे अत्रवित्रं श्रीत्रं श्रीत् श

तेश्वी चुर्या वेश क्षा भूग क्षा भूग क्षा चिर्य क्षा चिर्य क्षा चिर्य क्षा चिर्य क्षा चिर्य क्षा चिर्य क्षा चिर क्ष्य क्षे अश्वा चिर क्षे चिर क्षे

इन्य वयश्यीःसर्ज्यास्त्रेयःस्याम्यायम्यायस्य

यः तर्रम् म्यायः स्वायः श्रीः सः म्याः त्राः स्वायः स्वयः स्व

न्वायाहे स्वायाविवर्त् स्वेयायान्या त्रावरयेन स्वेरास्वर स्वारी स्वेया वर्देन्यान्ना अेअअञ्चलाञ्चानाम्बन्धानाम् वर्षेन्या अञ्चलेन्या <u>५८। ५२ विन्देशक्षानानिकलेशमायानहेत्रक्राक्रें स्थामाउदाया</u> धेव पदे से समाग्री सादिर प्रमानि स्वादिर प्राप्त स्वादिर प्राप्त स्वादिर प्राप्त स्वादिर स्वादिर प्राप्त स्वादिर स्वाद नहेत त्रानहेंत्रव्युयावनरानवें। द्विते सेस्याउत्स्क्रीतामरा तुःनायसा ग्री:न्नो:नदे:इ:न:कुट:नु:इसस्यादन्यानु:क्ट्रसेट्:सर:क्रुट्:नर:ग्रेट्:स न्ता ने निवित्र नुः के नामा कुत्र नुमा के नाम्या क्षुन मेर हो नामा ना नश्रुवःपःयःवेःवर्ग्यश्यः इस्रशःग्रेःविंद्रिःशेवःनरःग्रेदःपःददः। नश्रुवः रायाधीन्। यम् अम्पात्रकामा इसकाने। या यहाँ न्। या तृ वाकारा इसका भ्रैवःपरः ग्रेटःपः द्रा भ्रैवःपः इस्रयः मैं यः परः ग्रेटः पः "श्रेः वनयः यः स्रापयः ন'নম্ভ'নান্ট্ৰ ম'র্ম্বা

इन न्तुःस्यायह्मायायस। सेससाम्भेन्यन्त्र्रा

नर्वःसर्वा॥ न्वःस्वायःवह्वाःसवेःनश्नःस्यःस्रस्रस्यः नर्त्वेषः। न्वःस्वायः वह्वाःसवेः नश्चितः।

न्वेरिकासास्याम् न्युःसायायह्वासदेःक्रेस्यायाद्वाः न्वेरिकासास्याम्बद्धाः न्युःसायायह्वासदेःक्रेस्यायाद्वाः न्वेरिकासास्याम्बद्धाः न्युःसायायह्वासदेःक्रेस्यायाद्वाः

शेसश्चित्रश्चित्रश

ব্যন্ত্র শাস্থ্য

शतिरःश्चेत्रायश्च्याः विदः तर्योगाः सः यशः श्चेदः स्वेताः वित्रः स्वेतः स्वेतः स्वेतः स्वेतः स्वेतः स्वेतः स्व वस्रश्चेतः स्वरः स्वरः स्वरः स्वा द्वरः स्वरः स्वरः स्वेतः स्वेतः स्वेतः स्वेतः स्वेतः स्वेतः स्वेतः स्वेतः स्व वस्य स्वेतः स्वेतः स्वरः स्वेतः स्वरः स्वेतः स्वेतः

इन्न अर्ध्य स्ट्रिंग्य स्ट्रिंग्

ने या प्यम्पन्दर प्यम् स्थानत् वा स्थान स् मर्चिन सुन्य अति अन्य दुः साय अ। "ग्रे मुलायदे अ्रथादि सुर्भे। द्ये मः <u> नः क्व</u>ुः अर्ळे : क्वेन् : स्ट्रॉ : नदे : त्यु : स्टें : क्वे : क्वे : क्वे : क्वे : स्ट्रें : स्ट्रा स्ट्रिय : स त्रकेन्त्र्वर्भेन्रिन्देन्दर्भे नम्त्रुन्यधेवन्ते। यान्यो के कुः अर्के केवर्भे या Bेत्रअः वर्षाः तुः क्रुटः यो 'द्र्योयः वर्षिरः ग्रीअः वर्क्केट्रात्वर्षा केदः द्रः वर्क्केट्रा केर न्ने रामनावर्षे भ्री ने रामु अर्के के तम्य के तम्हे ना के केन्न् नर्भेन् रेन्द्र वर्षे नशा वे नमुर्थन्ने श्रेन्त् केन्स्र सेन्स् सेन् धर्भी तुर्भार्भे । ग्री कुषानदे श्रूया ने निव तु गुर कुमा से स्थान्यद न्वो नवे हः नवे केंवा अ विव हु न अवा अ ना वेवा म केवर में प्या न ना सर म्नुन'रा'पर। नुर'कुन'रोसरा'र्पादे'र्से र'रादे'कु'सर्के र सिन्य रासुन' मुक्ताम्यान्त्राचे स्वेकामुका स्पुन् क्या विवास्य व्यवस्य स्विवस्य स्वेत्राचे स्व नियाद्देशयार्वेद्याप्तेत्वा र्वेद्याची केत्र चित्र चित वनुसन् प्या ने स्रेन्न् न्या हु सेन्य वार्के स्यम् से न्या की वार्ष यश्रिद्यासाक्ष्य तुर्दे।

दे'याक्चु'अर्क्षेर्रायाक्षेत्र'यदे'यर्दे'श्रायत्त्व्र'याः अत्र क्वत् क्री'द्रिक्ष् कु'अर्क्षेर'लुग्नश्राद्यां पादे श्रायक्चित् पार्थे पाद्याय्य पर्वेत् प्रायक्षेत्र'यदे प्रायेष्टि

मुयान स्वराणीयायम् नित्ता स्वर्मा स्वराधिक स्वराधिक स्वराधिक स्वर्धा स्वराधिक स्वर्धा स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन

रायित्वे पार्वे त्वे राय्ये राष्ट्र स्वाविषाः हो। त्याः प्रमान्त्र व्याः वर्षे नायाः व्याः वर्षे नायाः वर्षे नाया

इ.च। क्रिज्ञ.च.प्रेश्वराग्नीश.तत्त्रीया.जश्रास्ट्रीर.चर.शह्री।

"अश्वे न्यां न्य त्यां न्यां न्यां के अश्वे न्यां न्यां के अश्वे न्यां न्यां

क्ष्मश्रान्ते व्याप्त स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

यान्त्र'णर'देग्राणे गुःद्वं क्यां क्षेत्र'या प्रदान के सम्मान्त्र वित्र' वित्र

हेंत्रसें रमा मसमा उर् वर् वर् पर प्रमुत् पादी

"ग्राम्यो भ्रेम्या प्रमुम्य प्रमुम्य स्था । स्था प्रमुम्य स्था । स्था प्रमुम्य स्था । स्था प्रमुम्य । स्था प्

इत्या क्रत्यस्त्रेत्रस्तिः क्रीं ते स्त्रीं स्त्रीं ते स्त्रीं ते

क्रवाश्वास्त्रेन्द्रश्चे हो प्रें ने श्वे क्रवे हो स्वाप्त्र हो स्वाप

বাঝুষ্ণ'না

न्नरः न दुः वैनः धरः न सूतः धः दे।

खुश्रामार्खेन्श्राक्ष्म् वाश्वामाश्रुश्वामाय्यक्ष्मायाय्यक्षम् विष्णायाय्यक्षम् विष्णायस्यक्षम् विष्णायस्यक्

द्यर्ग्व दुःदीः "मङ्ग्रायाः महिंद्रः सेद्रः सदिः ष्यरः महिंद्रः सेद्रः सदः स्वरः स्

नम्रोसस्यान्यम् प्रसेन्यदेषे भेस्र ग्रीस्य ह्मा नस्य सेसस्य न्नर्नित्रं । वहेषा हेत् श्री विस्राया वस्य उन् कुत्रं नर्गेन्य र् र्ना हु नक्कु व : परि : ब्रेव : ब्रेव : व्याप्त के कि स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स नःवर्षेनःन्। विश्वाग्रीः इस्रायरः श्चेत्राया ग्रीत्रः ग्रीत्राम्या क्षानानिवर्त्रः क्रिंवरम्याययायान् नर्त्तानेवर्ते वर्त्ते वर्त्ते निवस्य वस्र १८८ ते में १८५ में १८५ में १८५ में १८५० विष्य १८५० कुरुःग्रे:बिर:५८। र्युःग्राट:र्'ठे:५ग्राय:वर:स्र्टेव:धर:ह्याय:धर: क्रन'स'गुन'हुर्सेन'स्रार्सेन'यस'यान्नर'न'यर्चन'ने । प्रदेगाहेन'ग्री' বিষ্ণরাধ্যর বিষ্ণু প্রমে ক্রিপ্র শ্রী মর দুর্নার স্থার দুর্নীর দেশ ক্রিপ্র মার্ यान्तरानावर्षेताने अरमामुमाग्री विरावसमाउन्न् हारास्या ग्री हारा धरः वसुयानागुन्, हुर्भेन धरा हावसुयायान् नरान वर्षेन में। दे निवितः वर्देशमन्द्रा अळ्वन्द्रा द्ये ग्रुन्वन्य में न्द्रा अर्देव स्य हें ग्रुश धरः ह्याः कुराः गुत्रः द्वेतः धर्मा भे ने सायाः निरान्यः वर्षेतः वी समयः प्रा न्तुरु। सेन् प्रते के रु। से सूर्य ग्राम् पुर्ते सूर्य प्रते रूप रूप के रूप या निवास विवास र्गा" वेशरानद्वारायशक्तुःकेरान्यस्य मुर्ति।

इन न्तुःसवादह्यानावस्य सेससानक्षेत्रपानकुत्रवि।

नक्तर्योग न्तुःस्यायह्वायित्यत्रम्तरायस्यस्यस्य नक्ष्रित्यः

शेस्रश्चित्रीत्र्या

বাধ্যম'না

यान्याःयान्यन्याने।

इत्य र्या र्याःस्यादे रेवे क्षेत्रस्थ विषाःस्य र्याः ह्रितःस्य र्याः विष्याः विष्याः स्थाः विषयः स्थाः विष्यः स्थाः विषयः स्थाः स्था

"भःत्र्युःसःयःद्वे न्त्रुदःश्रेश्रश्रात्रः द्वेत्रःश्रेष्ट्वेत्रः श्रेष्ट्रेत्रः श्रेष्ट्रेते श्रेष्ट्रेत्रः श्रेष्ट्रेते श्रेष्ट्रेष्ट्रेत्रः श्रेष्ट्रेत्रः श्रेष्ट्

र्श्रेनर्था श्रेनर्था श्रेनर्था न्यान्य न्या हैन्या नित्र हिन्य हैन्य नित्र हिन्य हैन्य ह

इस्रायरःश्चित्रपाइस्रायरात्र्वेत्रायास्रायस्य हित्राची श्चित्रायसः ग्रे क्रेंन्य दे यह या क्र या ब्राया या के हिंद प्राया के हिंद प्राय के हिंद प्राया के हिंद के हिंद प्राया के हिंद के हिंद प्राया के हिंद प्राया के हिंद प्र धेरःर्रे । । यःर्रेयः हुः धेरः पदेः क्रेंनरु ते । यद्गा हेरः ग्रीरु । यद्गा हुरः ग्रीरु कैंश पेंद्र श्रुः श्चेत प्रमः हो दः प्राप्त । श्रे अश्रास्त्र पेंद्र श्रुः श्चेत प्रमः हो दः मन्दा सेससाउदावस्याउदायायदानिः श्रुदायासी महिदानि ही सार् อผมาย के द में दे क्रें न या दे र ये यथा उदा वस्य या उदा न क्रुना या या अर्के गा तुःर्श्वेरानाओं नार्नेरानवेः धेरार्से श्वेराहे केवारें वे श्वेनका वे शेवका उवा ग्रीः क्रून या दे । क्रुं या प्राप्ता या विष्ठी या या विष्ठी या या विष्ठी या र्रे। दे निवेद ग्रेनियाय प्राथय । उद ग्रीय हिद ग्रीय हैं न परि हैं नय दे इसामात्रसमारुद्रामये वसमारुद्रासहिदानियो भी मायासदिदात् हिंगामा धराशुराधित्रशि वेशायायरें भेरावस्तराधे सेंवशाह्या र्शे॥" वेशःगशुरशःराः क्षूरःर्रे॥

इन्म ने निवित अर न्या रेगा के अर्र मा वित्र क्षित्र हुन वित्र हुन मा स्वर वर्षे न्या

"ने प्यान्दार्धे शहे र्के शह्म श्राण्णे स्टार्स्स श्री श्री सक्त है न स्वा हुने श्रास्त्र है र्के शह्म श्री स्वाद्य स्वादे है न स्वादे है न स्वादे स्वाद्य स्वादे है न स्वादे स्वाद्य स्वा

म्बुदःम्बुद्दः स्थान्य स्थान्

इन न्तुःसल्पद्वाप्यत्यम् सेसस्यस्त्रीन्यन्तुःसर्दे।

रदायम्या नृतुःस्यायः वहुषाः प्रतेः चन्द्राः स्थाः स्थेस्यः स्थ्रे स्थः वर्श्वेदः प्रत्यायः स्थ्रे स्थः वर्शेद्

नर्गेरम्भार्यम्याम्या न्तुःस्यायद्वाप्यते क्रिक्तेर्यम् न्त्रीरम्भार्यः व्याप्यते स्वाप्यते क्रिक्त्याय्या न्त्रास्य स्वाप्यते स्वाप्यत

शेसरामश्चेत्रपडुःग

यबु.सा

শ্বত্ত্বানপ্রা

इत्य च्रिसंदेश्यायाने यो या गुवावयाय स्थान स्था

"अ'नडु'म'य'म्ब्र अ'म्ये'न्न्र अं अअ'ने 'धे अ'र्से म्या नडु'गुद' द्या अट्याक्त्र स्थ्याय्य पर्दि 'त्रेट 'तेर 'केद'र्मे में 'द्रिन्न प्रमुट 'न्या प्रमुट 'येद' न्या प्रमुट 'येद' सर्के म्यो प्रम्म में ।"

"वर्ष्ट्रन्य के त्या के स्वार्थ स्वार

हुःश्वन्यालेशान्त्रान्यस्य क्ष्यायमार्श्वेदायाश्वर्यायमान्यस्य क्ष्यायमार्श्वरायम् विद्यायम् विद्यायम्यम् विद्यायम् विद्यायम्यम् विद्यायम् विद्या

धेनेश्ची देशपहेत्रप्ति प्रम्मेश्वर्षे । विद्यानेश्वर्षे । विद्यतेश्वर्षे । विद्यानेश्वर्षे । विद्यानेश्वर्षे । विद्यानेश्वर्षे । विद्यतेश्वर्षे । विद्यतेश्वर्षे । विद्यतेश्वर्षे । विद्यतेश्वर्षे । विद्यतेश्वर्षे । विद्यतेश्वर्षे । विद्यतेश्वर्यतेश्वर्षे । विद्यतेश्वर्षे । विद्यतेश्वर्षे । विद्यतेश्वर्यतेश्वर्यतेश्वर्यतेश्वर्यतेश्वर्यतेश्वर्यतेश्वर्यतेश्वर्यतेश्वर्यतेश्वर्यतेश्वर्यतेश्वर्यतेश्वर्यतेश्वर्य

द्यो कर श्चेत्र द्वया कर त्या कर श्चेत्र द्वया कर त्या कर त्या कर श्चेत्र द्वया कर श्चेत्र त्या विष्ठ त्या विष्ठ

"करःश्वेद्राद्वर्ययाययायहेनाःहेद्रायाद्वययाः श्वेताःश्वेताः वितः श्वेताः श्वेतः श्वेताः श्वेताः श्वेताः श्वेताः श्वेताः श्वेताः श्वेताः श्वेताः श्वेताः

इन न्तुःसत्यत्ह्वाःसत्यभा सेसस्यस्त्रीन्यन्त्रुःसर्दे।

नद्र'यर्वेषा न्तु'स'य'यह्म'यंदे'नश्र्यायस्त्रेसस्य मुर्हेन्य'

नर्गेत्राम्यास्याम्या न्तुःस्यायायह्त्यास्येःक्किर्यन्त्राम्येः नर्गेत्रास्यास्याहुःयाययायायस्य न्तुःस्यःस्यःस्येःस्रेस्यास्येःक्किर्यायद्वःस्येः नन्त्राम्या

यान् दुते थिं त न्त्र न सूत भा

गशुस्रामाराम दुवे पेवि नित्र निस्त्र मारामाशुस्र

75.51

शन्दर्भविः धेव न्त्र न्त्र न्त्र न्त्र

इन्न ने के ति अदे अदे अद्यक्त क्ष्य नि के ति । वित्र वित्र

यः र्वेत्रप्राधाः अवराधाः विद्याने । यः प्राधाः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्या विद्याः विद्या

नेते 'र्नेव'वे 'र्श्व'न्न' श्री' अवे 'अववे 'नश्रीय'न श्रीम् 'प्यामे प्रेव 'र्मेव'ने श्री 'र्मेव'ने श्री 'र्मेव'ने श्री 'र्मेव'ने श्री 'र्मेव' 'रमेव' 'रमे

इन्म र्र्वे स्वरंहिर वहें वन्तुः स्वमः र्र्वे स्वरं स

ब्रैं . ब्रेंच. हे. ब्रेंट. श्रें श्रांत्र व्यक्त स्त्र स्त

इत्या नेश्व रेक्ट्र श्री हैं। इस्य अप्य प्रत्य प्य

इन हैं ख़्न रन हिंद्यायन राव्याय स्था धें नित्र है द्वा है। इन सर शुर न्या है निव्या है निव्या है स्था से द्वा स्था स्था। दे द्वा क्षेट है प्यट द्वा प्यक्षित सर प्रशुर है। अ ख़र्रों।

क्चें ख़्र अ रन हु न्याय नर यात्र अ यश व्येत हु न कु ख्या न हु

₹7|

यदे द्वा इस्र स्व त्य स्व त्य

र्भायायिव त्राह्म । व्राप्त व्याह्म । व

ন্বামেশারাপ্তমান্ত্রীপৌর দ্বামপ্রমানী

> इत्य भ्रेत्यार्थितः स्वर्गात्वसः इसः हिंगाः सेत्याते स्वा क्षित्यास्त्रस्य क्ष्याः क्ष्याः क्ष्यः त्र स्वर्णः हिंदा स्वा ह्यः क्ष्यः देशेत्र व्यव्याः क्ष्येत्र स्वर्णः द्वा स्वर्णः क्ष्यः व्यव्याः क्ष्येत्र स्वर्णेत् स्वर्णेत

श्चार्यायित्वित्यान्त्रम् । यादा व्याप्त्रम् व्याप्ति व्याप्ति । याद्वि । योद्वि । योद्वि । योद्वि । योद्वि । योद्वि । योद्वे याद्वे । याद्वे याद्वे याद्वे । याद्वे याद्वे याद्वे । याद्वे याद्वे । याद्वे याद्वे याद्वे । याद्वे याद्वे याद्वे याद्वे याद्वे । याद्वे याद

इन्य ज्यायायद्रेष्ट्रिंस्य्यायाय्याययाय्या

त्रुर्त्र क्षेत्र क्ष

"रे विवा वी श्रूश्व श्रान इत्या वा व्या विवा विवा विश्व श्रूष्ट्र श्रान श्रूष्ट्र श्रान श्रूष्ट्र श्रूष्ट

इत्या यःश्रुदे । स्वतः स्व दे । यत्वे वः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः । । स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः । । स्वतः स्वत

अूर्डिनारेरेरथः क्रूॅन्यरः तुरार्श्वा

वन्नरानुदे रामभून मा

বাইশ্বা

त्यश्रायुदे राजाः

न्रास्त्रस्य अन्य स्वर्धः अन्य स्वर्धः अन्य स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर

55.51

८८.सूर.शरशःभिश्वात्रःक्षेत्रःकाष्ठेश

नर्रेश शेर्ने ब्राप्ता केंद्राय क्ष्राय विश्व नर्देश

न्देशःग्रीःनेवःदी

₹7|

धॅर्निन्न समयन्त्रा समरम् मुगा सर्द्धन्या संदेन से हिन् ग्रीया नहेया।

"दे सूर हे द्वेर द हु नदे सूर न र द र स्वाप्त दे सारे द र र र इस्रायक्तियायायोग्रायाचेत्रायदे सुत्रायार्श्वे दान्यास्त्रायाः नश्चेत्रपानद्वपानहेशपाय। रदानीयद्यामुयामीकेयाद्वयानहेश त्रायर्या होत्रत्य। क्षर्यायरः स्रेत्यात्र दुःयायर्या कुया ग्रीया स्रेत्र यदस्य तस्रम् स्यूर् हिटा वार वी देव दु प्यत्र पारदी यस्म स्य शुर्रासदे में विसर सर्के मा नि ना झान से रामदे पो मे रा रे प्या न रे साध्रम वन्याग्रीयार्वेनाः सेवान् वे स्केषावयाने वित्याग्रीना ग्रीयान हे या यस ग्रीस हैं। धेःनेशने दे धें द हुद समय द्या मी समस मुग मा है। इद स हे स ग्विनाःवःश्रेंग्रयःविःधेवःहवःस्रवःद्र्याःवदेरःस्रवरःश्रुगःहेरःस्रवःत्ः ह्मरानविः श्रेरार्से । दे वि अद्धरमाया से दाया प्याराधिवा है। दे प्रदाय से दा

क्षेत्राम्नान्द्राधितश्चर्त्वे प्रश्चेत्राधित्राम्याद्वेत्राधित्राप्त्राप्त्राप्त्राधित्राप्त्राप्त्राधित्राप्त्राप्त्राधित्राप्त्रपत्त्य

इत्या है ख्रूम क्रिंत् ग्री त्रे त्र या या विष्य क्षेत्र है त्र या या विष्य क्षेत्र है त्र या या विषय क्षेत्र विषय क्षेत्र विषय है त्र या या विषय क्षेत्र विषय क्षेत्र है त्र या या विषय क्षेत्र विषय है त्र या या विषय क्षेत्र है त्र विषय क्षेत्र है त्र या या विषय क्षेत्र है त्र विषय क्षेत्र विषय क्षेत्र है त्र विषय

निव्या में भाषा निव्या निव्या

इ.च। इ.सक्ष्य.ध्रेट.टी.लट.ट्या.बीयाय.बी.क्टे.प्रम.सहट.बीर.बी। अष्टिय.चबट.ब्रिट.ग्रीय.सैट.कुया.बीयाय.बी.क्टे.प्रम.सहट.बीर.बी।

दे विंदि है दे दें से अध्याम के में विवादि हम के साम होते। से स्व स्व से के स्व से के स्व से के से के

र्हेन्यक्षरायायावेश्या

मुंग्राश्रास्यान्में नामान

र्ट्ट्र विष्ठः श्री विष्ठः स्थान्य स्थितः स्याः स्थितः स्याः स्थितः स्य

वर्हेगाना

इत्या यद्धः वित्तः दे छितः धिवावतः दे त्यः क्षेत्रं विष्णः श्राः विष्णः श्रीः विष्णः श्रीः विष्णः विषणः विषण

"न्यान्त्री के "म्यान्त्रित के म्यान्य वित्र क्षेत्र म्यान्य वित्र के प्राप्त के प्राप्

इन्न हैं स्वत्वायान्य नेया हित्याया उत्तर स्वायान्य स्वायान्य स्वायान्य स्वायान्य स्वायान्य स्वायान्य स्वायान्य

स्ति गुरु दश्ये राम् हिन् ग्रीश मान्य वा विन विश्व स्ति हो विन स्ति।

"धुत्यःगुत् त्र अः ने अः सः अे दः सः दे ः ने अः सः सः है ः धूः स्त्युः सः है। दे विं त हि दः हि दः त्यायः त्र स्त्र स्त

ख्याराने न्याया याया यात्रेरा

ने वित्रिक्ति के निर्मेष्य व्यवस्थित के निर्मेष्ट के अधिक व्यवस्थित के निर्मेष के निर्म

र्रानिन्दिन्द्विष्ठार्थाः स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य

इन्न म्हिं क्षे सेन्ने हिन्धित विन्ते प्यत् क्षे नन्ति स्थाना विन्ते क्षेत्र स्थान स्थान

हे क्ष्र्य श्रेस्रश्चे सम्प्राची क्ष्याय उत् प्राच्या या ने प्रिस्थ स्था । ने प्रिस्थ के सम्प्राची क्ष्याय उत् प्राच्या । ने प्रिस्थ के सम्प्राची क्ष्याय । ने प्रिस्थ के सम्प्राची के सम्याची के सम्प्राची के सम्प्राची के सम्प्राची के सम्प्राची के सम्प्

नेयायने मिंदिने नियम्यायने हेया शुरीन खुषादी

यादाची के स्टानिव की शाक्षे ना के ना स्थाप की ने कि कि कि स्थाप की ने कि स्थाप क

वर्हेना'मवे'भ्रेन'सून'ग्री'र्हेन'मवे'र्ह्रोन'सेन'र्ने॥

न्द्रभःशुःव विश्वःश्वाम् भी देवा विश्वः श्वाम् भी देवा विश्वः विश्वः श्वाम् भी देवा विश्वः श्वाम् भी देवा विश्वः श्वाम् भी विश्वः श्वामः श्वा

ने 'क्षेत्र' त्र 'क्षेत्र' त्

यदिरःश्वद्विवानीयादे भेया ग्रुष्यायायायात्र क्राम्य क्रिया विवानि द्रिया में यह विवानि विवान

म्वन्यामि । धेने अपने । यथार्ट में मान्त्र । यथार्ट में मान्त्र । यथार्ट में मान्त्र । यथार्ट मान्त्र । यथा

उन्'य'यह्म'य्यात्र्यं वित्ते चेत्र'म् वित्र'यात्र्यं न'न्द्रकेत्र'स्याः वित्र'यात्र्यं वित्र'यात्रं वि

नेश नुः वेश श्वा श्वा श्वा देव ने हे श हिंदा ग्री धो शेश दे शेश नुः हे शेष प्रा नेश है त्या त्या है त्या ह

वेश श्रम् क्रिया क्रिय

देवः "न्देशग्रुवः प्यतः न्याः मह्वः प्रदेश सर्वे त्याः विशः स्याः महितः प्रदेशः प्रदेशः महितः प्रदेशः महितः प्रदेशः महितः प्रदेशः महितः प्रदेशः प्रदेशः महितः प्रदेशः महितः प्रदेशः महितः प्रदेशः महितः प्रदेशः प्रदेशः महितः प्रदेशः महितः प्रदेशः महितः प्रदेशः महितः प्रदेशः प्रदेशः महितः प्रदेशः म

ने निवेत् न् दि श्वान सिवे निवादि स्थान सि श्वी निवादि सिवे निवाद

यदेरःस्ररःस्टःसेगाःवन्नदःस्रे वित्रद्यदःसः ग्रुक्षःस्रे स्टःस्याकाः ग्रहः इतः सरः ग्रुक्षे।

বাইপ্রমা

अद्वित पः र्से से प्रवत् प्रदे र प्रदे र प्रार्थे प्रताय प्रदेश

न्हें अ'ग्री'नें ब'न्हा नेवे'वबन्'य'नें स्थानक्ष्र्व पर्वे। न्हें से

नर्रेशःशिः नेविन्दी।

"ग्राम्याहिं त्रिः शुन् व्यायाहित्यायाहित्याहित्याहित्यावित्याहित्यावित्याहित्यावित्याहित्यावित्याहित्यावित्याहित्यावित्याहित्यावित्याहित्यावित्याहित

र्हेन्यायनियेन्त्रं त्यां ने वित्तं क्षेत्रायाः निष्ठियाः प्रियाः क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा वित्रा क्षेत्रा क्षेत्र क्षेत

ग्राह्म मित्र हिन् क्षेत्र मित्र विकाल क्षेत्र वित्र विकाल क्षेत्र वित्र विकाल क्षेत्र विकाल क्षेत्र

इत्य देखे. खें द्र्य श्रेष्ट्र के या देखे. खें द्र्य श्रेष्ट्र के या देखे. खें द्र्य श्रेष्ट्र के या विद्या के या विद्या

यास्यस्य स्थित्। स्थित् स्थित्। स्थित

नेवे प्रम्पान्टेश मह्म पाने।

"धरःहे श्वरःश्रेस्रस्य स्वाद्वरःश्रेस्य विद्वरः विद्वरः विद्वरः स्वादे त्यादे विद्वरः स्वादे त्यादे त्यादे

है 'क्षूर हे 'द्रोर 'व 'दहिना हेव 'दर्गर है 'स्रान्त 'क्षूँ न श केव 'र्स 'द्रार 'द्र 'द्रार 'द्र 'द्रार 'द

इन्ना ने निवेद्यन सुर्धे अर्डे या सेन निवेद्या। के अर्थे निव्या उद्या अर्थे ने निवेद्या निवाय के स्था से निवाय वह्या पर्धे ने विषय के स्था से निवाय के स्था से स्था स

च्चित्रः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्धः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः

বাইপ্রমা

शु-८-र्धेव-४व-ग्री-इसमावमान्यमि

भुदे:क्रायावया:न्दा क्रियशःशे:धेंत्रःत्वःशे:क्रायावयाःवीं। न्दःसी

शुदे द्रयाविया या या शुरा

कें अग्री भुन्ता वें त्या श्रीत हैं वाया प्रते भुन्ता कु यत्र त्ये भी प्रति हैं वाया प्रति कें प्रति कें प्रति कें प्रति कें प्रति भी किं यत्र कें भी प्रति कें प्रति

कें अ'ग्री'सु'दे।

"५'ते'ळें अ'ग्रे'सुदे'५न८'५'गुअ'त्रअ'न्न्न्'"

इत्य नेश्चित्त्र्त्त्व्यम् अस्ति अस्ति। नश्चित्रं भी न्यान्य स्थान्त्रं स्थान्य स्थान्त्रं स्थान्त्यं स्थान्त्रं स्यान्त्रं स्थान्त्रं स्थान्

ध्ययः उदः "धेः ने अः ग्रीः रहः निव दे हो निव मा हिनः उदः ग्रीः श्रुः "विहे अः शुःश्वरःनदेः"नेशः हुदेः"धुवः" तुर्निरः श्रुसःर्सेः" र्रादर्गनः सासुराम्। "धेक्रां से दर प्रदानमः "नर्से न्या साम्यम्।" ने या ग्रा "सरान विदासी या "भ्रु-न'सेन्'मः में प्रदानने प्रदानि द्वारा उत्तु नुवाय प्रया वियाय ररःविवरग्रीयः"याश्चेयामनेवे क्यामा उवादराष्ट्रवामराग्रुरामवे "दे र्षि'त'हेर्'वे'न'"रे'ते'कुय'न'इस'ग्रे'केंस'ग्रे'सुर्दे। ।वरे'हेर्'ग्रे'र्नर र्'यह्रें व्यक्तिक्षा "यर्या क्ष्यें यदेव'य'क्स्यय'वे'कें या भी बिंद्य'हेट'लेय' ग्रु'या धेव'हे। १दे'वेय' धरःत्रायाधीत्। । वेयायह्याम्यास्ययातेःत्यागुरातुःर्केयादेनाया क्षानाक्षेप्ते त्यासक्रसाम्यन्वमायान्या वर्षेत्रायाम्सस्य ग्रीतेन्त्रम्यस्य

इन्न ने के क्षे न सेन है न स्मान स्थित।

स्रेस्य त्यायायायायाया ने स्तु ध्येया सर्दे त्रुस सर्दि।

ने भूरत्व इसायर हैंगाय सेन्य पित्र हैं। विश्व सेस्य ग्री कुं ना इसा हैंगा सेन्य प्राया सुरुषाय प्राया प्रीय स्था प्राया प्राया विश्व के स्था प्राया विश्व के स्था प्राया स्था स्था

মুধ্যমা মুধ্যমা

इत्या विःश्चित्रयात्रययः वितः स्वरः याय्यः यात्रयः स्वरः वितः स्वरः वितः स्वरः वितः स्वरः वितः स्वरः वितः स्वर वितः वितः वितः वितः स्वरः वितः स्वरः स्वरः

भ्रु'ग्राम्'ग्रेशक्रिंभःभ्रु'यर्द्वः प्रस्त्यः यद्दः प्रदेश्चेतः भ्रु'य्देः वे। "श्रेस्रशः श्रेस्रशः चुरः"ग्रेहिंगः प्राप्तः प्रस्यः प्रसः विः प्रदेशःभ्रुद्धः। देः क्ष्रमः क्रायमः श्रेस्र्यः प्रसः प्रसः

होन्याने न्यमान्ययाश्चीः निराष्ट्रान्ता धन्यने स्थाने स्थ

नेति भ्री मारिता हेता है ता है ना मारिता है श्री मारिता है से श्री मारिता है श्र

इन दर्भे हैं अन्तर्म्य वास्त्रमा

र्येट्यः भुःति दे न्ति न्ति । स्ति । सि । स्ति । सि । स्ति । सि । सि । सि । सि । सि ।

श्रुवशायर्थें वितृत्व हुन्य या । वित्रा क्षित्र क्षित्र क्षेत्र क्षे

नः इसमारीः श्रुं नः याया । "बेमायास्य स्था শ্রম্থর শ

कुं समुद्र कुं भुं न न् न न न न न न न न

शु-द्राप्त श्रुवे विरानु पाठेया हार्य मी श्रुवि पा गुन श्रेन खेला दरा ग्रवश्नेरम्ववर्ग्धः श्रुरम्मम्बद्धारम्भ ন'ধ্রব'শ্ব্যম'র্ক্টবাশ'ন'নপদ'নর্দ্যা

55:31

शुन्दान शुक्षेत्र विदानु वार्षे वा हु स्दानी श्रेन्य गान स्रेन कुंत्य दे।

য়ৄয়৻য়ৣ৾৽ৠৢ৻য়৻য়৾ৼ৻৸ঀ৾৾৾৴৻য়ঢ়ৢ৻য়য়৻য়৾ৼ৻য়৻য়৻য় उरक्षे "स्र-नन्द्राये" विद्या भूष्य गावन र मुराया स् श्रें सथा उत्रावन्ता विक्र श्रा हुमाना ने म्यापा प्यमास सुवि हिमान समा मुक्राक्षे वियायायाँ नायते सुक्राय वियाया

इन इनन्नरन्रमार्वेगार्वेजर्नेयेकुःसत्र् নাৰ্বাশ্পুনাইনা'ম'ম্দ'নী'শ্পু'নাব্শ'শ্পনশা

अःख्राच्यायाश्चायाश्चायाः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्व स्वाप्तः स्वाप्तायाश्चायः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्व

त्रुवः सवेः न्वनः सँ शः कें शः वें न्यः ग्रीः भ्रुः ने वेः मुः अत्रुवः सवेः वा त्रुवाः शः भ्रुः वा वेवाः या वित्रः नः र्श्वेवाः या अतः नः न्यः व्याः अतः स्वरः याः व्याः अतः याः व्याः व्याः वित्रः व

इन्न अरशः कुशः विरः है । यद्दरः श्रुवः द्वरः दे । द्वरः श्रुवः श्रुवः । विरः ।

त्रुवायान्द्र। ने त्यायहेद्दायं यहुन् श्रे से स्वयं स्वयं यह त्या से त्या से

इत्या है प्यद्वे के अन्तर्ने स्वत्या है प्यद्वे के अन्तर्म हैं न्या या स्वाप्त के अन्तर्म हैं न्या या स्वाप्त या स्वापत या स्वाप्त या स्वापत या स्वापत या

"वेग्।याग्वेग्।न्दाग्रुयायाग्वस्ययावस्ययावयावयान्त्रः। विदानेरानन्त्रः। विदानेरानन्त्रः। विदानेरानन्त्रः। स्वानुदान्यः। स्वानुदान्। स्वान

श्रेश्वर्णःश्चित्रः वाद्याद्यः श्चित्रः विद्याद्यः । श्वर्षः श्चित्रः श्चि

इन्न ने निविद्धार्थः विस्रस्य विस्रान्त विद्यान्त । ने सम्बद्धार्थः के स्रम्य के मानस्य स्रान्य । सम्बद्धार्थः ने निवास्त्र । सम्बद्धार्थः स्रान्य । सम्बद्धार्थः स्रान्य । सम्बद्धार्थः स्रान्य । सम्बद्धार्थः सम्बद्धार्थः सम्बद्धार्थः स्रान्य । सम्बद्धार्थः सम्बद्धार्थः स्रान्य । सम्बद्धार्थः सम्बद्धार्थः सम्बद्धार्थः सम्बद्धार्थः स्रान्य । सम्बद्धार्थः सम्बद्धारः सम्बद्धार्यः सम्बद्धार्थः सम्बद्धारः सम्बद्धार्थः सम्बद्धारः सम्बद्धा

ने । द्वा ग्रान्थ्व भी। "

विश्व क्षित्र क्षेत्र क्षे

इन् किन्द्रीत्रम् मुन्

शुःधी नः श्रुदे तिर नुर तर मार्या राय र हें वा

इत्य। अर्थः श्रुभः विद्यात्त्र अत्रः त्रुपः त्रुभः यादः ।।

यादः द्याः द्रुभः श्रुभः स्वाः त्रुभः त

अद्यास्त्रभावादाद्वाः स्ट्रास्त्रभावादाः स्ट्रास्त

त्तः संदेश मुन्यान मुन्यान मुन्यान स्थान स्थान

इन्न ने निविद्यत्याम् अया ग्रम्य स्वर्या से सम्प्रम्य निव्य

"हे 'क्षेत्र' हे न 'शे 'क्षें न 'या न पार्ट न 'शे न '

বাধ্যম'না

निवेद्रायायायद्यमञ्जूरानासुद्राशुक्षार्वेद्रम्यायायाय

ने द्वारा भी या श्वारा स्वारा स्वारा

इन्न न्यायत्रे देन्ने निन्यत्र्याय

म्याम्बर्गायाः प्रायाः स्वाप्ताः स्वाप्ताः स्वाप्ताः स्वाप्ताः स्वाप्ताः स्वाप्ताः स्वाप्ताः स्वाप्ताः स्वाप्त स्वाप्ताः स्वापताः स्वाप्ताः स्वापताः स्वाप्ताः स्वापताः स्वापत

द्वारास्त्राच्यास्याद्वापितः स्वर्थाः क्ष्राच्याः स्वर्तः स्व

इत्या इसर्ह्याक्षे स्वत्य हिंद्र श्री अर्थेद्र सम्बद्ध प्रमा अद्भार हेया दे से स्वत्य हिंद्र श्री द्रा क्षेत्र स्वत्य हिंद्र स्वत्य स्वत्य स्

"इस्रायम्'ह्रियामासी'स्रायमाहित्। श्री सामादित्। स्रीत्। स्री

यद्यात् भी वहं यात् भी तहं यात् भी तात्र यात् भी व्याप्त स्थात् । स्थात् भी व्याप्त स्थात् । स्थात् ।

श्रमंत्रे'ध्याग्री'न्नर'र्न्,ग्रुश'या यद्गे'त्रे'न्यःग्री'न्नर'र्न्,ग्रुश'

বাইপ্রমা

क्रूनशःग्रीः वित्र पृत्र श्रीः इसामानमा त्या नि

र्मेत्र न्य के स्ट्रा के

55:31

र्श्रेनशन दुःसर्देरःनश्रुदःपःदे।

इत्या ग्रवशत्रत्यम् अवश्चित्रः भूत्र प्रत्ता विवायम् अवश्चित्रः भूत्र स्त्र स

श्वः र्क्षण्याप्ययाचे स्वितः श्वेन्याप्याप्ययाचे स्वितः प्रवितः प्रवितः प्रवितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्व

त्रवासि स्ट्रिन्याया हो। वात्याप्तराम्याव्या स्ट्रिन्याप्तरा स्ट्रिन्याप्तर स्ट्रिन्याप्तर स्टर्याप्तर स्ट्रिन्याप्तर स्ट्र

उत्ता नयसमान्त्रस्य वर्षेत्रप्तर्भेत्रस्य न्त्रम्य स्थ्रियस्य प्रम्पा स्थ्रियस्य प्रम्पा स्थ्रियस्य प्रम्पा स्थ्रियस्य प्रम्पा स्थ्रियस्य स्थितस्य स्थ्रियस्य स्थ्रियस्य स्थ्रियस्य स्थ्रियस्य स्थ्रियस्य स्थ्रियस्य स्थ्रियस्य स्थ्रियस्य स्थ्रियस्य स्थितस्य स्य स्थितस्य स्य स्थितस्य स्थितस्य स्थितस्य स्थितस्य स्थितस्य स्थितस्य स्य स्थितस्य स्थितस्य स्थितस्य स्थितस्य स्थितस्य स्य स्थितस्य स्थितस्य स्

न्यसामित्र न्द्रम्साम्य व्यापित्र न्द्रम्प्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्य

বাইপ্রমা

ने द्वस्य मुरुष्य स्य न्य भूत स्य वाहिस्य

नावरुप्तर्मावरुप्तिव साहिव्या स्थानिया सी सूर्वित्र स्थानिया सी

कु'म्द्रित्वा'यश्वर्ष्यश्चर्याद्वात्रा'त्वेष्यादेश्वर्ष्यः कु' म्द्रित्व्याद्वेष्यः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विषय

"न्येर्यं शेर्वो न्याय्याः क्षेत्रं व्याय्याः क्षेत्रं व्याय्याः क्षेत्रं व्याय्याः व्यायः व्याय्याः व्यायः व्यः व्यायः व्यः

वर्देन् मा क्षेत्र नो ना न्द्र की वर्देन् मा क्षेत्र का की ना के का वर्दे का मा

यहिमान् ने प्रक्रियायम् स्त्रीत् स्त्र

इत्य वर्त्तः क्रम्थः श्रम्थः श्रम्थः श्रम्थः श्रम्थः श्रम्थः श्रम्थः श्रम्थः श्रम्थः श्रम्थः वर्ष्णः वर्षः वर्ष

ख्यामा हिनामा दी। स्यामा स्थान स्था

यद्यान् स्वाप्तान्त्रयात्र्री विस्त्रयात्र्री विस्त्रयात्री विस

इन्य गुन्दः हैं नार्श्याश्राकेशः हैं हिन्दे अर्केना निन्या

द्वीरः वाव्यः श्रून्यः निर्द्धः द्वितः व्यक्तः व्यवक्तः व्यक्तः व्यकः व्यक्तः व्यकः व्यवकः व

"धर्र्म् भेत्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थित्त्र म्यान्त्र स्थित्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र

বাইশ্বা

ষমমান্তর্ন, বর্রা, বরি, অমামান্ত্রির, মার্মারা, মার্মারা, র্মুরমান্ত্র। ব্যবস্থান

इन। लक्षात्मादःकुलानःहेन्द्रादमादःविमार्द्राकुलाकी।

"यस्रायम्यादिवम् क्रियानिक्षः निक्षेत्रः निक्षेत्रः निक्षः स्वित्रः स्वतः स्व

इत्या यहेगाहेत्रस्यययथ्यश्चर्यद्वेत्रः हो द्वाप्यः श्वर्त्ता। यथ्ययाहत् स्थायत् व्याप्यः वित्राप्यः वित्राप्य

"यहेगाहेत्रस्य प्रमान्य प्रमा

त्रा इस्यान्य वर्षा व क्षुत्र व क्षुत्र वर्षा व क्षुत्र वर्षा व क्षुत्र वर्षा व क्षुत्र व क्षुत

"हे श्वेन्यित स्वानि श्वानि श्वेन्य स्थेन स्वानि स

इन्न श्रेश्वर्ष्ण इस्त्राची श्रेश्वर्ष्ण विष्यं स्त्राचित्र । स्त्रित्त स्त्राचित्र । स्त्रित्त स्त्रित्त । स्त्रित्त स्त्रित्त । स्ति । स्त्रित्त ।

"श्रेश्रश्राह्म स्वर्गात्री श्रेश्री त्राची स्वर्गात्री स्वर्णात्र स्वर्णात्य स्वर्णात्र स्वर्णात्य स्वर्णात्य स्वर्णात्य स्वर्णात्य स्वर्णात्य स्वर्णात्र स्वर्णात्य स्वर्णात्य स्वर्णात्य स्वर्णात्

इन्न इसग्तुव्यविव्यविद्यस्थिः श्रृंत्रस्था श्रेष्यः श्रुंत्रस्य श्रीष्यः हिंद्रस्थित्रः त्रीत्र स्थित्रः स्थिति स्याति स्थिति स्थिति

ने वा अधिव पा कवा या को ना अवदा ध्यया के निया सु वर्षे निय

ह्रमभारा गुदा सिंद्र निया ना ह्रमभा ग्री श्रे न भा ग्री भा स्वा भा स्व भा भा भी निवा सिंद्र स्व भा भी भी निवा सिंद्र स्व भा मिंद्र सिंद्र सिं

ख्रीयश्वाद्धे त्यांक्ष्याः विश्वाद्धे त्यां क्ष्यां श्राण्याः विश्वाद्धे त्यां श्राण्याः विश्वाद्धे त्यां विश्वाद्ये त्यां विश्वाद्धे त्यां विश्वाद्धे त्यां विश्वाद्ये त्यां विश्वाद्धे त्यां विश्वाद्धे त्यां विश्वाद्धे त्यां विश्वाद्धे त्यां व

नेशः श्रीनः ग्रीः नर्षे दे निष्ठेशः श्रूदः विश्वयः संदे नना कनाशः यः ग्रुद्र निश्ने वर्रे के वसवायायायायायायायायायाव्या द्वीया के विष्यायायाया नरः सः वाशुरु सः स्था वर्ते रः वाशुरु सः सः हे रः यः वहे तः सरः वृद्धि । यरः वर्त्रोवारावया "सारेवारान्टा वर्नेन्रकवायायार्थेवायायवेरववाळवाया ने प्यट मुराया त्रस्य उद्दर्भ हित्र य द्वा । यह या क्रुया वित्र या हैं वा यह वशुरशी मन्दरमायादे साधेदादी।" नेयाम्स्रस्यायस्त्रस्य स्टान्स मदेर्हेन्सेन्सर्भे भेर्मेन्द्री यहेर्न्स्न भूत्रमेर्देन्सेन्सर्भे भीरम् ८८.श.चाड्रचाच्च ।चचा.कचार्यायदी स्वेच हि.स.च.चे.र्याच द्वा कुव की मार्थाः मुँग्रायायावेयात्याया ने में ग्रायम् स्थान्य स्थाने स्थाने वायया ने भी त्याय स्थाने स् सरसः मुरुषः ग्रेष्ये से सम्भूतः हेवा सन्दर्भे प्येतः हैं। । नेते से सम्स्याया ग्रुवः अवितःसदेःक्रॅनशःग्रेशःवहेवाःसरःवाशुरशःश्री।

तुशन् भुन्य स्वित्र स्वा क्ष्य स्व क्ष्य स्व

বাপ্তম:বা

धॅव न्व गुव नाई न से वु श मिले खु य दी

अट्याक्त्रभाग्नी 'वित्रभाक्त्रभाग्नी 'वित्रभावित्रभाग्नी 'वित्रभाक्त्रभाग्नी 'वित्रभावित्रभाग्नी 'वित्रभाग्नी 'वित्रभाग

देशक्षात्रम्थाः क्ष्यात्रम्थाः क्ष्यात्रम्थाः क्ष्यात्रम्थाः विवादिक्षेत्राः विवादिक्षेत्राः

इत्य वस्त्राचयः स्ट्रिंग्य व्याचयः स्ट्रिंग्य व्याच्य स्ट्रिंग्य व्याचयः स्ट्रिंग्य व्याचयः स्ट्रिंग्य व्याचयः स्ट्रिंग्य व्याच्य व्याच्य स्ट्रिंग्य व्याच्य स्ट्रिंग्य व्याच्य स्ट्रिंग्य व्याच्य स्ट्रिंग्य व्याच्य स्ट्रिंग्य स्ट्र

ल्य. धेर. श्रीय अवयः लश्ना या मह्रीया सम् वर्षीया

"त्रे स्ट्रिंग्यस्य स्ट्रिंग्य स

इत्या ने श्वेरतन्त्रायद्यश्वित् । व्या ने श्वेरत्त्र । व्या ने श्वेरत्त्र । व्या ने श्वेरत्त्र । व्या ने श्वेरत्त्र । व्या प्रस्त्र । व्या प्रस्त्य । व्या प्रस्त्य । व्या प्रस्त्र । व्या प्

वि के भी श्राम्य प्रति वि के प्रत्य के प्रत्य

धें व ' प्रव ' पा है श भी श भी वे ' सव ' धें व ' य सूव ' भी वे ।

इन्न वनः स्ट्रिंग्संहिंग्संहिंग्संहिंग्संहिंग स्वा वनः स्ट्रिंग्संहिंग्संहिंग्संहिंग वनः प्रमुखेते खुंत्यः नेसः प्रसा स्वा वनः स्ट्रिंग्संहिंग्संहिंग्संहिंग

"सर्न्रान्ध्रम्य न्यान्ध्रम्य न्यान्ध्रम्य न्यान्ध्रम्य न्यान्ध्रम्य न्यान्य न्याप्य प्याप्य प्याप्य प्याप्य प्याप्य प्याप्य प्याप्य प्याप्य

ने प्यश्चाव्य प्राप्त क्ष्य क्

श्रुवासुन मह्न

"न्वे श्रुण पदे श्रु १९४ मन्नि ग्रु । श्रु १९४ मन्नि श्रु १९४ मन्नि । श्रु १९४ मन्नि । श्रु १९४ मन्नि । श्रु १९४ मन् १९५ मन्नि । श्रु १९४ मन् १९५ मन्

₹7|

"र्केश ग्री मुंग हे श शु बिद ग्राम श्रुम प्याम हो दि ग्री श श हे द श श शहरा यह र विवास प्रथा शे पार्थ प्रवेश शु बिद ग्राम शहरा यह हो द ग्री श श हे द गा श हो द श शहरा यह र

अट.सूर्या ट्रे.किंट्र.ज्ञिंत्र.विंत्य.विंत्र.विंत्य.विंत्र.विंत्

मर्थे नग्रे न्या श्रे न्या विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त्र विश्

वेवा'स'याठेवा'हु'नश्चुन'स'दे।

"ने भूर भूग्रुय शुर्य श्री इस्य नावना नश्चर स्था हेना य नहिना त्य हेना । य नश्चर न्य स्था निका स्था हिना स्था हेना । स्था हेना । स्था होना । स्था होना । स्था होना । स्था होना । स्था होना

कुः अळंत् "ग्रान्गे हो रात्रात्ते व रेके शहरात्रा हो हो ति त हिन् लेश स्थान प्रति क्षेत्र हो त्या हो रात्र हो हो रात्र हो हो त रेके त स्थान प्रति हो स्थान हो हो त रेके त स्थान हो हो त स्थान हो त स्थान हो त स्थान हो हो त स्थान हो हो हो त स्थान हो हो त स्थान हो हो हो त स्थान हो हो हो स्थान हो हो हो त स्थान हो हो हो त स्थान हो हो हो हो हो है स्थान हो हो हो हो हो है स्थान हो हो हो है स्थान हो हो है स्थान है स्थान हो है स्थान है

"ग्राथाने ग्रामार्थेन व्याप्यसाम्यावतान् । वर्षे स्थाप्त स्थाप्त । स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त । स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त । स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्

"ग्राम् ग्री ही मार्थों ना इस्र सामा है सामा है। हैं ता से मार्थे निया के ता से

इत्य यर्ग्यान्त्रिम्य्याम् श्रीम् श्रिम् श्रिम् श्रीय्या स्त्रिम् स्त्रिम् स्त्रिम् स्त्रिम् स्त्रिम् स्त्रिम् स्राप्त यर्ग्यान्त्रिम् स्त्रिम् स्तिम् स्

इन्न ने हिरस्यवस्य में देश के खे हिर नु क्र में हे के वारा ही। दय न हेर से या केंद्र हिर खेद केंद्र नर नु क्र मर न में दिस हुरा।

हिंद्रश्रीश्राचेनायायदे ते हिंदासहे नम् वि नये हुं यायाधित्। हुम् विद्युम् सम्पन्दिते स्वर्यास्त्री हुम् सम्मान्य स्वर्याया स्वर्याया स्वर्याया स्वर्याया स्वर्याया स्वर्या

"न्दिश्चर्यां नः इससः वेना के दायः दह्ना सः यः नेना सः सदः सं ऑदः केदा वर्त्ते नः इससः ग्राटः स्त्राटः व्यादः स्त्राच्यः प्राचेतः स्त्राच्यः नितः स्त्राच्यः स्त्राचः स्त्राच्यः स्त्राच्यः स्त्राच्यः स्त्राच्यः स्त्राच्यः स्त्राचः स्त्राचः स्त्राच्यः स्त्राच्यः स्त्राच्यः स्त्राच्यः स्त्राचः स्

"नर्डस्थ्रत्यत्सार्ध्वर् त्यत्सार्ध्वर् न्यार्थ्य क्षेत्रः त्यार्थः क्षेत्रः त्याः क्षेत्रः त्यार्थः कष्टिः त्यार्थः क्षेत्रः त्यार्थः क्षेत्रः त्यार्थः कष्टि त्यार्यः कष्टि त्यार्थः त्यार्यः त्यार्थः कष्टि त्यार्यः त्याय्यः त्याय्यः त्याय्यः त्यायः त्याय्यः त्याय्यः त्याय्यः त्याय्यः त्याय्यः त्याय्यः त्याय्य

र्क्षेत्रश्री"

प्रिंग्रास्य मुर्ग्रास्य व्याप्त व्यापत व्यापत

वेवा'रा'वाडेवा'रु'नक्षुन'रा'वदी'अर्दे'गुद'यश'नरुश'रा'यश। "वेवा' रा'वाडेवा'रु'वद्गर'दे'अर्दे'श्चे'रु'या'यश'वाशुद्रश'रा'वे'श्चेर'र्दे।।" वेश' शेवाश'ग्रेश'वाशुद्रश'रा'यश'वेश'र्यर'त्ववि।

মূ'মা

सर्वित्रम् स्त्रास्य स्त्रम् स

सर्दिनम् नुद्रकृतः सदे पुरुषः ग्री प्रवद्यपुरुषः सदे विष्यप्रि

र्श्वेन्यन्त्रहेते विद्यास्य स्थान्य स्थान्य

स्ते त्यात्र व्याप्त स्वित् निर्मा क्षेत्र प्रमाया क्षेत्र क्षेत्र प्रमाय क्षेत्र क्षेत्र प्रमाय क्षेत्र क्षे

नेशन ग्रुम् कुन ग्री श्रुम में माने वाराय है का माने वाराय कि का माने वाराय के माने कि का माने कि कि का माने कि का माने

मुश्रास्त्रः त्युत्तः नुः त्यूत् नः त्ये नुः त्युत्तः स्त्रः स्त्रः त्युत्तः त्युतः त्युत्तः त्य्यत्यः त्युत्तः त्य्यत्यः त्युत्तः त्यत्यः त्यत्तः त्यत्तः त्यत्तः त्यत्तः त्यत्यः त्यत्तः त्यत्यः त्यत्यः त्यत्यः त्यत्तः त्यत्तः त्यत्यः त्यत्यः त्यत्यः त्यत्तः त्यत्यः त्यत्यः त्यत्यः त्यत्यः त्यत्यः त्य

ন্ত্রশ্রা ন্ত্রন্মান্ত্রিন্ত্র্যান্ত্রিন্ত্র্যান্ত্রিন্ত্র্যান্ত্র

इत्य क्ष्यायः है श्रीन्यहेषाः हेत्य स्वयः न्याः सर्वेषाः हः स्वाः वित्याः स्वयः स्वाः स्वयः स्व

"मुत्य निवे सार्वे सार्वे सुर्के वे कि हो हो हो से पार्ट पाहे ना हे साम्यान्य स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के साम्यान के साम्या

इस्रास्त्रात्वेषात्रम्य विष्ठ्रम्य से स्वाप्ते स्वापते स्वाप्ते स्वाप्ते स्वाप्ते स्वाप्ते स्वाप्ते स्वाप्ते स्वाप्ते स

"ग्राम्योश्रास्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्

इन्न मिन सुमा र्रेन की सप्टेम हेन मिनस्प्ति न्या सिन स्था नि सुमा र्रेन की सप्टेम हेन मिनस्य प्रिमानस्य सिन्। स्रो में हिन की नि स्था हिन मिनस्य सिन्। ने स्ट्रिम नुमानस्य सिन्। ने स्ट्रिम नुमानस्य सिन्।

त्याक्षा "नतेव पहें व की पाने ख्या पी खें व की पाने पाने पाने व पहें व की पाने खें की पाने खें व की पाने खें की पाने खें व की पाने खें व की पाने खें की

धिनः श्चिं न्या स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त स्व स्वाप्त स

यर्ट्स क्षेत्र विष्य है स हिंद विषय है स विषय महेत्र विषय महेत्र विषय है से स्वा क्षेत्र क्षेत्र स्व स्व स्व स

स्वाक्तिं उत्ती प्रस्ति प्रस्

गशुस्रामानसूत्र नर्डे साही सूरान इससामित खुंया दी।

सर्वे वर्षे म्या स्वाधित स्वा

न'निवेत'त्र'। वसम्भाम'म्'सुमुन'ग्री'सव'रमा'ते'हे'सु'न'निवेत'त्'नहेंत्

इन्ना यदी यश्यावन्त्र के श्राप्ति विश्व स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्य स्थान्त्य स्यान्त्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त

"हे 'क्ष्रस्पत्तुं अदे 'वाबुद्दा सुवा शायदे 'यश्रा आवित्र स्मान्य समान्य समा

वर्षेयायमास्ट्रम्भःस्र्री

यदीश्राची स्टार्म श्राचा स्ट्राच्या स्ट्राच्या स्ट्राची स्ट्राच्या स्ट्राची स्ट्राच्या स्ट्राची स्ट्र

देशवः स्टानीः श्रुवाशः यदि । श्रेश्यशः यदि । श्रेशः स्टान्यः यद्याशः स्टान्यः स्टान

प्राचीविष्ठा । से व्याप्त । से व्यापत । से व्याप

वर्षेक्षःमाश्चरः "वहिमाहेद्राक्ष्यावन्याम्ये क्रिंगाः हे म्यान्याः वर्षेक्षः वर्षे व्यान्याः वर्षेक्षः वर्षे व

यहेनानं हेन सन्दर्भ स्वास्त्र स्वास

इत्य शुःश्चर्यात्र्यात्र्यं स्वर्धः भिवर हित्त्वः क्रिये । यद्भायां श्राप्त्र स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्

क्र'याविद्यास्य प्रमाय प्रम प्रमाय प

"ग्याके ने क्षित्र भविष्य व्यवस्य विष्य प्राप्त के स्वाप्त क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्

ने स्वरावश्यम् निवानि हेन निवानि स्वराव स्य

यीर.य.पट्टी.यट्टेब.यर.कें.य.१९४.टवा.जश्राचीरा क्रिय.क्रीयश्राचीश.क्रीयश्राचीश.क्रीयश्राचीश.क्रीयश्राचीश.क्रीयश.चीश.क्रीयश्राचीश.क्रीयश.च्रीयश्राचीश.क्रीयश.च्रीयश्राचीश.क्रीयश.क्रीयश्राचीश.क्रीयश्राचीश.क्रीयश्राचीश.क्रीयश्राचीश.क्रीयश्राचीश.क्रीयश्राचीश.क्रीयश्राचीश.क्रीयश्राचीश.क्रीयश.क्रीयश्राचीश.क्रीयश्राचीश.क्रीयश.क्रीयश्राचीश.क्रीयश्राचीश.क्रीयश.क्

त्रश्राचेष्राश्चराश्चर्याः अर्थेट्रा । विश्वायत्वरात्राः स्वराण्चीः यश्चरः विश्वायत्वरः विश्वायत्वरः विश्वायत्व

"हे क्ष्र्राचावत के कें व्या अध्या कुराय केंद्रा के त्या क्ष्र्या प्राप्त के विष्ण क्ष्र्या के क्ष्रा चित्र के विष्ण क्ष्र क्ष्र के विष्ण क्ष्र क्ष्र के विष्ण क्ष्य क्ष्र के विष्ण क्ष्र के विष्ण क्ष्र के विष्ण क्ष्र के

য়ৼয়৻য়ৢয়৻য়ৢ৾৽ৼয়ৢ৾ৼয়৻য়ৼ৻য়৻য়ৼ৻য়য়ৼ৻য়য়ৼৼ৻য়ৢয়৻য়ৢৼ৻য়৻য়ৼ

न्याः सर्वेदः नः श्रेः नः स्रुशः त्रश्याः यादः त्रयाः याः त्राः न्याः स्रुः नः स्रुः नेः याश्यः व्यायः स्रुः नः स्रुः याव्यः स्रुः याव्यः स्रुः याव्यः स्रुः याव्यः स्रुः याव्यः स्रुः स्रुः याव्यः स्रुः स्रुः याव्यः स्रुः स्रुः याव्यः स्रुः स

विर्यावन्यास्य श्रम्भात्ते र श्रेन्य प्रति स्थान्य स्

नवि'म'सह्या'यी'र्नेद'स'याहेशा

र्श्वेन न्द्र्य न्वान की श्रास्त्र न्या न्या व्याप्त की श्राम श्री मान की साम हिंदी

८८१र्भे श्रियद्येवयाटयी श्रासद्दाराष्ट्री

इत्य। "र्यः अत्यत्विष्यः व्याप्तः व्यापतः व

धरःवेदःधःचर्ज्ञेषाःधरःसद्दःधरुःश्चरःचःह्यारुःश्वा "

गिरेश्यार्थे महामादामी शानश्चराना दे।

इत्य विद्धेर त्या क्षेत्र त्या विद्धेर त्या क्षेत्र क

বর্গীন্থান্য ম্বানাথা

₹7|

यदिमःयवोयः प्रदेश्यह्दः ज्ञानः द्वानः प्रदेशः व्यानः विद्यानः विद

বর্গীন্থান্য মন্যাধ্য

मुयानवेयाशुरास्यागुरामुः भ्रीः भ्रीतार्थे अर्केव

वनः सँ 'न्तु' सं सवतः व्यापः हेत् 'य्तुर' यस्। सवतः पिरेशः श्रुर्भः हे देश्वः सरः खुरः नश्रुतः निव।। हे 'निवेतः य्योत्यः सहर 'यसपार्थः सर्वेताः खुर् स्वार्थः।

य्यात्युर्त्रत्यर्ध्यायाश्च्याः यो त्रित्राः स्त्रित्राः स्त्राः या व्यात्युः स्त्रित्रः स्त्राः या व्यात्युः स्त्रित्रः स्त्राः स्त्रित्रः स्त्राः स्त्रित्रः स्त्राः स्त्रित्रः स्त्राः स्त्रित्रः स्त्राः स्त्रित्रः स्त्राः स्त्रित्रः स्त्रः स्त्रित्रः स्त्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रः स्त्रित्रः स्त्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रः स्त्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रत्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रित्रः स्त्रः स्त्रित्रः स्त्रत्ते स्त्रः स्त्रित्रः स्त्रः स्त्रित्रः स्त्रः स्त्रित्रः स्त्रत्ते स्त्रः स्त्र

ब्र-रिंग्यायदे त्रास्यायदे र स्यायायदे र स्यायायदे । भेत्र हु स्वायदे रेपायायय स्वायायदे र स्वया। ब्रासिंदे त्राया भ्रायायाय स्वयापायदे र स्वया। स्वयायदे त्राया भ्रायायाय स्वयापायदे र स्वया। स्वयायाय स्वयाय स्वयायाय स्वयाय स् भूषान्वरायम्यायायाः वनायसाम्यायस्य स्थितः प्रदा नद्याः ग्रहः भ्रेष्ट्रे न्याः गुद्राः त्यसः स्थाः स्थितः स्थाः भूषाः नवाः ग्रह्याः स्थाः स्थाः

देर्द्यान्यस्य स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्य



รู๋าฮูรา marjamson618@gmail.com